नै धाड़ैए

नै धाड़ैए

(बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

NAI DHARAIYA (नै धाड़ैए)
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-26-1
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

समर्पण भाव

घरे-घरे ज्योति दीप

गाम अन्हार पड़ल छै

घरे-घर समाज कहि-कहि

अध-मरल गाम पड़ल छै

इतिहास मिथिला कहि-सुनि

पुर जनक धाम बनल छै

वक्र आठ गीत गबिते

ज्योतिरमान जगल छै

बनि-कनियाँ-पुतरा-पुतरी

मूक नाच नचैत रहै छै

राति-दिन एकबट बरहबट बनि

नाचि नाच नचैत रहै छै

घरे-घरे ज्योति दीप

गाम अन्हार पड़ल छइ।

अनुक्रम:

पहिल पड़ाव

मैट्रीक परीक्षासँ तीन मास पूर्ब कोठरीमे बैस राधामोहन अपन दिन-दुनियाँक सम्बन्धमे सोचैत रहए। ओना, परीक्षाक तैयारी-ले बैस कऽ पढ़ैत रहए मुदा किछु कालक पछाइत, जखन पढ़ैसँ मन उचैट गेलै, अनायास जिनगीक बात मनमे उठलै। परीक्षाक फारम भरला पछाइत स्कूल आएब-जाएब बन्न भऽ गेल छेलइ।

राधामोहनक मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलै। मुदा उठै बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ जे उठै आ फुटि जाइ। कोनो असथिर विचार ने मनमे उठै आ ने अँटकैत रहइ। कोनो विचारकेँ ने ठीकसँ पकैड़ पबैत आ ने सोचि पबैत। किछु कालक पछाइत मनकेँ असथिर कऽ अपन भूत-भविसपर नजैर अँटका गौर करए लगल तँ तीन तरहक विचार अभरलै। ओ ई जे अखन धरि साले-साल स्कूलक परीक्षा स्कूलेमे होइतो रहल आ आगूओ बढ़ैत गेल। मुदा आब तँ से नै हएत। सरकारी देख-रेखमे परीक्षो हएत आ रिजल्टो निकलत। जँ फेल करब तँ दोहरा कऽ फेर ऐगला साल परीक्षा दिअ पड़त आ जँ पास करब तँ आगू..? आगू तँ पढ़ि नै पएब। जँ पढ़ि नै पएब तखन की करब?

साधारण चारि बीघा जमीनबला परिवारक राधामोहन। चारि बीघा माने अस्सी कट्ठा। अस्सी कट्ठाक माने सोलह साए धूर। ओना, दुनियाँक मानचित्रमे भिन्न-भिन्न देश आ भिन्न-भिन्न जमीनक महत अछि। जँ जापानक बेस किमती तँ साइबेरियाक से नहि। मुदा

मनुक्ख तँ दुनूठाम ऐछे आ रहबे करत। खाएर जे हौउ, ने जापानक चर्च भऽ रहल अछि आ ने साइबेरियाक। चर्च तँ मिथिलांचलक भऽ रहल अछि तँए मिथिलांचलक जमीन देखए पड़त। सबहक जिनगियो सभ रंगक अछि।

पैंतालीस बर्ख अबिते-अबिते राधामोहनक पिता नन्दलाल पूर्ण रोगी बनि चुकल छला। तीन बर्ख पूर्व धरिक जिनगी जखन नन्दलालक मनमे आबैन तँ अपनो नै बिसवास होनि जे हमहूँ जोड़ा बरदबला किसान छेलौं, आ मस्तीक किसानी जिनगी बितबै छेलौं..! जइ साल सुभ्यस्त समय होइ छेलै तइ साल जेहने घरक कोठी भरै छल तेहने पोखैरक महारपर नारक टाल लगबै छेलौं। मुदा आब ओहन दिन-दुनियाँ थोड़े देखब। अछैते खेत रहितो थोड़े हएत। करबो के करत, जखन केनिहारे नै तखन हएत केना। दुनियाँक माटि-पानि तँ सभ दिनसँ रहलै आ सभ दिन रहत। मुदा जइ समय जेहेन मनुक्ख रहत तइ समय दुनियाँक रंगो-रूप तँ ओहने रहत किने...।

जाधैर नन्दलालक शरीरमे रोगक आगमन नै भेल छेलैन तइसँ पूर्व दुनू परानी अपन खेत-पथारमे, कहियो गरदामे तँ कहियो थालमे लेटाइत रहै छला। काजक एहेन सूत्र बनल छेलैन जे आगू-पाछू सोचै-विचारैक बात मनमे उठबे ने करैन। ओना, साले-साल बरहम स्थानक भागवतमे कातिक मास सुनै छला जे ‘जिनगी क्षणभंगुर छी, तँए समयकेँ बिना गमौने समरपित भऽ किछु कऽ ली।’..मुदा से भागवते धरि रहि जाइ छेलैन। भरि पेट भोजन भेटिए जाइ छेलैन तँए ने घटबी बाट मनमे उठै छेलैन आ ने दुआर-दरबज्जा भरल देखै छला जइसँ बढ़ती बात उठै छेलैन। भागवतोकेँ धर्मस्थानक धर्मक बात बुझि घर्मस्थानमे सुनि लइ छला। गामपर अबिते घरक चक्कीमे जुटि जाइ छला। अपन खेत, अपने केनिहार तँए अपना मनोनुकूल खेती-गिरहस्ती करै छला। जइ वस्तुक जेते जरुरत अछि, पहिने

ओते पुरा लेब तखने ने अनका दिस ताकब। जँ से नइ तँ आँखिक खच्चरपन्नीसँ अनके सभ किछु देखैत रहब आ अपन देखबे ने करब।

नन्दलालक विशाल रूप जहिना बुधनी देखै छेली तहिना बुधनीक विशाल रूप नन्दलाल देखै छला। कोठरीक राधा-रानीक जिनगी नहि, विशाल दुनियाँक मंचपर नट-नटी बनि दुनू-परानी कखनो खेतक गोला कोदारिसँ फोड़ैत, तँ कखनो संग मिलि धान रोपैत। तहिना, कखनो माल-जालक थइर-गोबर करैत, तँ कखनो इच्छानुसार खाइ-पीबैक ओरियान करैत। जिनगीक लीला तँए लजाइ-धकाइक कोनो प्रश्ने नहि।

तीन सालक बीच नन्दलाल तेना रोगा गेला जे मन मानि लेलकैन 'आब नै जीब! चल-चलौक बाटपर आबि गेलौं!' ..मुदा एते दिन तँ अही समाजमे समाज बनि जिनगी गुदस केलौं, जँ किछु अनकर नै केलिऐ, तँ केकरो भारो तँ नहियेँ बनलिऐ। मेहक बरद जकाँ किसानक संग खेत-पथारमे बहबे केलिऐ। तैबीच ठेहुनक गीरह कचैक उठलैन। कचैक एतेक जोरसँ उठलैन जे बुझि पड़लैन सौंसे देहक बुत्तार्कें छिन्न-भिन्न कऽ देत। मुदा ई तँ भेल देहक रोग, मनकेँ तइसँ कोन मतलब। ओकर तँ अपन सभ किछु छइ। मुदा शरीरक पीड़ाक कष्ट तँ मनोकेँ प्रभावित कैये देने रहैन। पीड़ाएल मन आ शरीरक बेथा देखि नन्दलाल अपन बोरिया-विस्तरकेँ हाँइ-हाँइ समटैत बुदबुदेला-

"जखन दुनियाँ छोड़िये रहल छी तखन किए ने अन्तिम बात कहिए दिऐ जे, भाय जे केलियह से खेलियह, किछु जमा तँ रहल नहि, जे देने जेबह। एकरा गलती बुझि छोड़ि दाए आकि जवाबदेही बुझि द्वारिका छाप दऽ दाए।"

नन्दलाल ऐठाम पण्डाक बगे बनौने एक गोरे एला। बम्बैया सम्पन्न मंचक कलाकार जकाँ बनल-ठनल हुनकर चेहरा रहैन।

नन्दलालक दरबज्जापर अबिते कामरूप कामाख्याक शंख फुकि घरवारीकेँ सूचना देलखिन।

दरबज्जापर आएल अभ्यागतक आगमन बुझि बाड़ीसँ नन्दलाल आ आँगनसँ बुधनी पण्डाजीक आगूमे उपस्थित भऽ हुनक देव-रूप देखि ओसारक चौकीकेँ देह परहक तौनीसँ झाड़ि-पोछि बैसैक आग्रह केलखिन। दरबज्जापर आएल अभ्यागतक सेवा करब किसानी संस्कारक मुख्य अंग अदौसँ रहल अछि।

बैसते पण्डाजी जोगी-फकीर जकाँ अपने बड़बड़ाए लगला-

“ऐ जमीनक भाग कहै छै जे साक्षात लक्ष्मीक बास छी, दोबर-तेबर गतिए परिवार आगू मुहेँ बढ़त, मुदा..?”

लक्ष्मीक बास सुनि दुनू परानी नन्दलालक मनमे खुशीक ज्वार उठलैन। मुदा पण्डाजीक बोल रहैन एकभग्गू। एकभग्गू ई जे जेते प्रशंसा बुधनीक केलखिन तेते नन्दलालक नहि, जइसँ नन्दलालक मनमे किछु अनोन-विसनोन जरूर भेलैन, मुदा पत्नियोँ तँ आन नहियेँ छैथ, विचारकेँ दबलैन।

पण्डाजी हाथक रेखा देखैक विचार व्यक्त केलैन। ‘हाथक रेखा’ सुनि दुनू परानी अपन-अपन हाथ आगू बढ़ौलैन। ..चलाक खेलाड़ी जकाँ, जे पहिने दोसरकेँ खेलबैत पछाइत सवारी कसैत तहिना पण्डाजी सेहो केलैन। हाथ देखबैसँ पहिने बुधनीक मनमे उठलैन जे जँ पतिक अछैत मृत्यु भऽ जाइत तँ ओ पत्नी..? मुदा परोछ भेने..? बुधनीक मन पतिपर एकाग्र भऽ गेलैन। शुभ समाचार सुनैले बुधनी बिहुँसैत पण्डाजीक आगू हाथ पसाइर बजली- “ई हमर पति छैथ, जाबे जीबै छैथ ताबे हमहूँ जीबै छी तँए जँ केतौ कोनो गड़बड़ होइ से कहि दिअ। समय अछैत ओकर प्रतिकार करब।”

बुधनीक बात सुनि पण्डाजीक मन चपचपा गेलैन। गोटी

सुतरैत देख, चौकीक निच्चाँ लटकल पएरकेँ समेट पल्था मारि ऊपर बैसला। बैसते बुधनीक हाथ देखि खुजल आँखि बन्न कऽ ठोर पटपटबैत बुदबुदेला। फेर आँखि खोलि चारू दिशा दिस देखि ऊपर तकलैन। जेना कियो किछु बजैले उत्साहित केलकैन तहिना बजला-

"परिवारक पछुलका गति तँ नीक छल मुदा बीचमे ग्रह केर आगमनसँ गड़बड़ा गेल अछि! ओना, अखन धरि तेहेन गड़बड़ नै भेल अछि जे बुझि पड़ैत मुदा आगू जखन जुआ जाएत तखन बुझबे-टा नहि, देखबो करबै। ओना, ऐ घरक साक्षात लक्ष्मी अहीं छिऐ जैपर अखनो घर ठाढ़ अछि, मुदा..!"

आगूमे बैसल नन्दलालक मनमे उठैत जे परिवारक गार्जन हम छी, जँ हमर हस्त-रेखा नीक रहत तँ अनकर अधलो भेने की हेतइ। मुदा लगले विचार बदलए लगलैन जे पत्नियोँ तँ अर्द्धांगिनीए होइ छैथ तँए हुनको छोड़ब नीक नहियेँ हएत! पत्नीकेँ कहलखिन-

"पहिने पण्डाजी केँ चाह पिअबियौन। पछाइत सभ गप हेतइ।"

पतिक बात सुनि बुधनी चाह बनबए गेली। तैबीच पण्डाजी नन्दलालकेँ पुछलखिन- "ऐ गाममे देवस्थान कएटा अछि?"

पण्डाजीक प्रश्न नन्दलाल नीक जकाँ नै बुझि सकला, तँए पुछलखिन- "की देवस्थान?"

नन्दलालकेँ अनाड़ी बुझि पण्डाजी बजला-

"बरहम स्थान तँ हेबे करत। तेकर बादो महावीरजी, शिवजी, धर्मराज इत्यादि-इत्यादि आरो केते स्थान हएत किने?"

नन्दलाल- "हँ, से तँ अछिए। तीनटा महादेव मन्दिर अछि, दूटा महावीरजी स्थान अछि, एकटा धर्मराज, एकटा सलहेस आ एकटा ठकुरवारी सेहो अछि।"

तही बीच बुधनी चाह नेने आबि पण्डाजीकेँ आ नन्दलालोकेँ देलखिन एक घोंट चाह पीविते पण्डाजी बजला-

"चाह तँ चाहे अछि! बड़ सुन्दर चाह पिएलौं!"

चाह पीब हाथ धोइ पण्डाजी नन्दलालक दहिना हाथ देखि बजला-

"अहाँकेँ तीनटा बिआह आ सातटा सन्तान लिखैए। ई काएम बिआह छी?"

तीनटा बिआह सुनि बुधनीक मनमे जलन उठलैन। मुदा किछु बजली नहि। नन्दलाल बजला-

पहिल जे बिआह भेल सएह छी। सन्तानो एकेटा बेटा अछि।"

पाशा पलटैत देखि पण्डाजी पुनः हाथक रेखापर अपन आँगुर दैत बजला-

"ई रेखा ऐठामसँ आबि एकरा काटि देलक। जइसँ दूटा पत्नियोँ कटि गेल आ छहटा सन्तानो।"

पुनः नन्दलालक हाथ छोड़ि बुधनीक हाथ देखए लगला। बुधनीक हाथक रेखा देखैत बजला-

"पति-सुख अहाँकेँ पूर भऽ रहल अछि, मात्र किछु दिन आरो अछि। मुदा..?"

पण्डाजीक बात सुनि नन्दलालक मनमे उठलैन, भरिसक ई मौगियाहा पण्डा छी। मुदा अखन तँ दरबज्जापर छैथ किछु बाजब उचित नहि हएत।

पण्डाजी आगू बजला-

"अहाँक पतिकेँ शनिक ग्रह केर आगमन भऽ गेल छैन जे अहूँक रेखा इशारा करैए।"

बुधनीक हाथ छोड़ि पुनः नन्दलालक हाथ देखैत बजला-

“अहाँकेँ शनिक ग्रहक आगमन भऽ गेल अछि। मुदा अखन तँ शुरूआती अवस्थामे अछि तँए किछु नै बुझि पड़ैए मुदा तीन मास बितैत-बितैत उपद्रव शुरू भऽ हएत।”

पतिक ग्रह सुनि बुधनी ओहिना तड़पली जहिना कोनो स्त्री अपन निर्दोष पतिकेँ सिपाही हाथे जहल जाइत देखैए। ..तरसैत-तलपैत बुधनी पण्डाजीकेँ कहलखिन-

“अपने साक्षात देवता छिऐ। जे चाहबै से हेतइ। कोनो धरानी हिनका ग्रहसँ छुटकारा करा दियौन।”

गोटी लाल होइत देखि पण्डाजी बजला-

“केहेन-केहेन राहू-केतुकेँ तँ जिनगीमे भगा चुकल छी आ ई कोन माल-मे-माल अछि! एकरा तँ छन-पलमे केतए-सँ-केतए दऽ आएब तेकर ठीक नहि!”

पण्डाजीक बात सुनि दुनू परानी नन्दलालकेँ जान-मे-जान आएल। बुधनी बजली-

“खर्च-बर्चक चिन्ता नहि, मुदा काज पक्का होइ।”

घूसक मोट रकम देखि जहिना घूसखोरक मन चपचपा जाइत तहिना पण्डाजीक चपचपेलैन। बजला-

“देखियौ, ऐ काज-ले अनुष्ठान करए पड़ै छै तँए सभठाम करब आकि कराएब सम्भव नहि अछि।”

बुधनी-

“तखन?”

पण्डाजी-

“तइले चिन्ता किए करै छी। हाकिमक दसखत जेहने

आँफिसमे तेहने डेरापर। तखन तँ आँफिसमे अनचोकमे आबि कियो देखि ने लिअए तेकर कनी.., जे डेरामे नै होइत अछि।"

नन्दलाल- "नै बुझलौं अहाँक बात पण्डाजी।"

कबुला छागर जकाँ नन्दलालक मन कँपैत रहैन। तँए आँखिक सोझमे अपन अनुष्ठान देखए चाहैथ।

पण्डाजी- "देखियौ, हिमालयसँ लऽ कऽ समुद्र धरिक वस्तुक जरूरत अनुष्ठानमे पड़ै छइ। ओते लऽ कऽ चलब सम्भव अछि? ऐठाम सभ वस्तु उपलब्ध नै हएत। अहाँ सन-सन केतेको भक्त छैथ जे हमरा लिए तँ सभ बरबैर छैथ।"

नन्दलाल- "तखन?"

पण्डाजी- "विधिवत सभ खर्चक मूल्य दऽ दियौ। जहिना अनन्त पाबैनमे माने अनन्तक पूजामे एक गोरे पूजा करै छैथ आ टोल-पड़ोसक लोक अपन-अपन अनन्द-फनन्दक पूजा करा लइ छैथ, तँए की ओ अशुद्ध नइ भेल। अशुद्ध तँ होइत अछि फनन्द जेकर गीरह-बनहनक गिनती कम होइ छइ।"

हिमालयसँ लऽ कऽ समुद्र धरिक बात सुनि बुधनीक मन चकभौर काटए लगलैन। बाप रे! केतए हिमालय अछि आ केतए समुद्र! तइसँ नीक जे जे कहता सएह करब असान हएत। देववाणी कोनो कि नुनछराह होइ छै, उनटा हौउ कि सुनटा, कहुना हएत मुदा हएत तँ मधुरे-मधुर किने। ..बजली- "केना की खर्च-बर्च पड़त?"

पण्डाजी- "खर्च-बर्च की हाथी-घोड़ाक पड़त, तखन तँ अनुष्ठाने छी कनियोँ-कनियोँ करब तैयो तँ...।"

'कनियोँ-कनियोँ' सुनि बुधनी फेर बजली-

"नै पान तँ पानक डन्टियोसँ काज चला लिअ।"

पण्डाजी आ बुधनी दुनू गोरेक बात सुनि नन्दलाल परीक्षा लेल

कबुलाक छागर जकाँ थर-थर कँपैत रहैथ। किएक तँ एक दिस जिनगी आ दोसर दिस मृत्यु देखै छला। मनमे उठलैन- ग्रह-नक्षत्रक किरदानीकेँ की मनुक्ख रोकि सकैए? ..मुदा उठल मनमे ईहो उठलैन- जे मनुक्ख माटियोकेँ देवता बना सकैए ओ तँ किछु कऽ सकैए। मुदा दुनू गोरेक अनुकूल विचार सुनि नन्दलाल किछु बजला नहि, चुपे रहला।

हुन्डे अनुष्ठानक खर्च लऽ पण्डाजी सगुनियाँ डेग दैत विदा भेला। मनमे ईहो बात उठैत रहैन जे जँ चारियो-पाँच एहेन सुतरल तँ साल-माल लगिए जाएत। मुदा जे हौउ, यात्रा नीक रहल।

तीन मास बित गेल। ने पण्डाजी अपन परीक्षाक रिजल्ट बुझए घुमि कऽ एला आ ने दुनू परानी नन्दलालक मनमे कोनो तरहक आशंका भेलैन जे पण्डाजी की केलैन की नहि। मुदा शैनी-ग्रहक आगमनक नाओं जे कहने रहैन ओ दिन नन्दलालकेँ मने रहैन। सौनक पूर्णिमाक दिन। पूर्णिमा मोन पड़िते महिनाक हिसाब जोड़लैन तँ जोड़ा गेलैन जे आइए पूर्णिमा छी। हौआइत हाथकेँ कुड़ियबैत नन्दलालक मनमे अबिते पोखैरक माछ सदृश पूर्णिमा चाल देलकैन। ओह! भरिसक हाथ हौआएब शुरू भऽ गेल। बामा हाथक हौआएब छोड़ि दहिना हाथसँ तरबा कुरियौलैन तँ सुआस पड़लैन। ओह! जाबे ग्रहक आगमन नै भेल ताबे पएर-हाथ कुड़ियौनी किए मंगैए..?

पत्नीकेँ कहलखिन- “राधामोहनक माए, भरिसक ग्रहक आगमन भऽ गेल!”

‘ग्रहक आगमन’ सुनि बुधनीक मनमे उठलैन जे बहुत रोगी ओहनो होइए जे रोगकेँ देहमे रखनौं रहैए, दबाइयो खाइत रहैए आ काजो करिते रहैए। मुदा रोगीकेँ ओछाइन धड़ा आराम देब सेहो तँ

होइए। तहूमे सर्दी-बोखार नइ छी जे नूनपनियाँ पीब लेब आ भानसो-भात करब। देवलोकक ग्रहक आगमन छी, एक अलग श्रेणीक रोग..! कहुना भेल तँ राजे रोग भेल किने..!

बिच्चेमे नन्दलाल बजला-

"आब चलब केना हाथो हौआइए आ पएरो, दुनू दिससँ तँ रोग आबि गेल!"

बुधनीक मनमे उठलैन, पथ-परहेज की सभ करए पड़त। सर्दी-बोखारक तँ बुझल अछि जे पोड़ो साग नै खाएत मुदा एहेन रोगसँ तँ पहिले-पहिल भेँट भेल। खौंझाइत बड़बड़ेली-

"जे भगवान सभकेँ बुधि देलखिन ओ एक-रंग करि कऽ किए ने देलखिन, जे रोगमे पड़ल छी आ पथ-परहेज बुझले ने अछि। एहेन रोगीसँ की लोक हाथ धोइ लिअ?"

'हाथ धोइ लिअ' मुहसँ निकैलते चमकैत शीशा जकाँ मन चनैक उठलैन। जँ रोगीसँ हाथ धोइ लेब तँ माथक सिनूरक की हएत..?

असोथकित जकाँ बुधनी थकमका गेली। जइ जिनगीकेँ खेल बुझै छी ओ खेल नै छी, जँ खेल रहैत तँ अमेरिकोसँ केतेक ऊपर रहितौं।

ओछाइन पकैड़ते नन्दलाल रोगाए लगला। श्रम नै केने अरुचि, पड़ल रहने देहक अकड़नसँ जोड़-जोड़क दर्द बढ़ए लगलैन, बढ़ैत-बढ़ैत छह मासक पछाइत भिनसुरका नटुआ जकाँ मोटरी माथपर नेने नन्दलाल चल-चलाउ बनि गेला।

असगरे बुधनी काजमे तेना ओझरा गेली जे काजे मानव आ काजे दानव बनि गेलैन। काज तेते छिड़िया गेलैन जे जहिना उड़ैत फनिगाकेँ गिरगिट पकड़ैए तहिना भऽ गेलैन। काजे काजकेँ खेबो

करैत आ गीरबो करैत...।

साँझू पहर जखन काजसँ निचेन भऽ बुधनी पएर मोड़ैथ आ भरि दिनक काजक हिसाब मनमे अबैन तँ मानि लइ छेली जे सभटा कर्मक खेल छी। कियो खेल खेलि खेलाड़ी बनि जाइए तँ कियो खेल बनि खेलाइत जाइए। डाक्टर ऐठाम जखन पतिकेँ लऽ जाइ छिऐन तँ सभ रोगक जड़ि भरि दिन पड़ल रहब कहै छैन। जइसँ सौंसे देहक जोड़ पकैड़ लेलकैन। फेर जिनगी ठाढ़ हेतैन एकर कोन भरोस। तखन तँ माइयो-बापक लिलसा पूरा कैये देलिऐन जे एकक नाति दोसराक पोता बनि ठाढ़ छैन, की पति-धर्ममे कनियोँ कमी रहल? जँ नइ तँ पति-विहिन नारीकेँ समाज किए कलंकित केने छैथ?

पतिपर सँ बुधनीक नजैर उतैर बेटापर एलैन। लोकक धिया-पुता शहर-बजारमे जा रहबो करैए, सिनेमो देखैए आ पढ़बो करैए। मुदा, से हमरा राधामोहनक संग गरदैनकट्टी भेल। खाएर.., मुदा हमहीं की करबै जइ घरमे एकटा विद्यार्थी आ एकटा रोगी रहत ओइ परिवारक गाड़ी घिचब महिला-ले सचमुच चुनौती अछि। खिस्सा-पिहानी ढेरो लोक लोककेँ सुनबैए मुदा पतिव्रता परिवार-ले के केतेक समरपित छैथ, ऐ दिस सेहो देखक चाहिऐन। ई नहि जे टीक एक बोझ रखनै छी आ पनरह-पनरह दिनक बिनु धुअल पेन्ट पहिर प्रवचन करै छी।

राधामोहनपर नजैर पड़िते वेचारी बुधनी विस्मित भऽ गेली। मन कहलकैन- भगवान सभटा विपैत ओही छौड़ाकेँ देलकै। मुदा तैयो कहुना कऽ गोठगो धरि बनेलौं अछि। आब कि ओ धीगर-पुतगर नै भेल। जँ धीगर-पुतगर भेल ओकरा बुते घर चलौल नै हेतइ।

..बुधनीक मनमे सवुर भेलैन। भगवान पति हरने जा रहल छैथ मुदा जुआन बेटा तँ सोझमे अछिए। फेर मन उनैट राधामोहनपर

एलैन, जेतबो सुख माए-बापक घर केलिऐ तेतबो उमेर तक हम कहाँ दऽ सकलिऐ। ओही वेचारार्कें धन्यवाद दी जे खेने-बिनु-खेने पढ़बो करैए आ संग-साथ दऽ काजो करैए। संग साथ मनमे उठिते बुधनी विह्वल भऽ गेली। संगे-साथ ने सभ किछु छी। मनुक्ख तँ अबैत-जाइत रहत मुदा जे परिवार संग-साथ अछि वएह ने जिनगी छी।

❑

शब्द संख्या: 2359

दोसर पड़ाव

देखले दिनमे नन्दलालक परिवार केतए-सँ-केतए ससैर कऽ पाछू चलि आएल, यएह छी जिनगी। समय आगू मुहेँ ससरैत अछि आ जिनगी पाछू मुहेँ, तखन समय संग केना चलब? समाजक बीच नन्दलाल परिवारक चर्च अहू रूपमे होइत। प्रश्न अछि जे समाजक केतेक लोकक बीच एहेन विचार उठैए। परीक्षामे एक शब्दक भूलसँ प्रश्नोत्तर गलत भऽ जाइए जेकर परिणाम असफल होइत अछि। मुदा वएह एक शब्द भेटने परीक्षार्थी सफलो तँ होइते अछि। की तहिना जिनगियोक शूत्र शब्द अछि?

ओना, समाज तँ समाज छी, अथाह समुद्र कहियौ आकि सघन बोन। कियो नून घोरि नूनपनियाँ बना कऽ पीब-पीब रोग भगबैए, तँ कियो नुनाएल पानिक नुनगरी हटा स्वच्छ बना पीबै जोग बनबैए, तँ कियो दुरगन्ध-सुगन्धक बीच लक्ष्मण रेखा खींच जीवन-यात्रा करैए, तँ कियो नरकोमे ढाही मारि-मारि आरो गर्त दिस बढ़ैए।

समाजमे एहनो लोकक संख्या कम नहि जे बुधनीक दशा-दिशा देखि चाबस्सियो दैत आ हँसबो करैत। मुदा केहेन चाबस्सी आ केहेन हँसी? ..खुशीसँ जँ हँसी अबैए तँ केकरो दीन-दशापर किए उठैए? मुदा तैसंग समाजमे एहनो कहनिहार तँ ऐछे जे कहैए जे धन्यवाद ओही वेचारीकेँ दिऐन जे एक संग पतिसँ पुत्र धरिक सेवा अपन बाँहु-बलसँ कऽ रहल छैथ। एक परिवारक खेती-पथारीसँ लऽ कऽ पढ़ाइ-लिखाइ, बर-बेमारीक सामना असगरे करै छैथ! की

हुनका जिनगीकेँ चक्की उनटौनिहार नै कहबैन? जखन कि मिथिलांचलक गौरव-गाथाक एक इतिहास रहल अछि। मुदा तैसंग ईहो कम दुर्भाग्यक बात नहि जे जिनगीकेँ सामाजिक जालमे ओझरा अपन करम-भागकेँ दोषी बनबैत रहल.., आ एहनो कहनिहारक कमी नहि जे कहैत पीसलक मड़ुआ तँ उठौत गहुमक चिक्कस...। प्रश्न उठैए जे बुधनीक की दोख जे एहेन शब्दसँ वेचारीकेँ दागल जाइए? मुदा एहनो शब्द तँ ओही समाजमे फड़ैत-फुलाइत अछि जे कहैत वेचारी बुधनीक अखन उमेरे केते भेल अछि। अधोसँ कम जिनगी टपल हएत, बेसी बाँकीए हेतइ। ई केहेन निसाफ भगवानक भेलैन जे सौंसे जिनगी नै दऽ अधोसँ कमेपर अधसुखू बना देलखिन। पति-पत्नीक बीच जे रहैए तेकर तँ ओ गति छै जेकरा मनुक्ख क श्रेणीसँ निच्चाँ बुझल जाइ छै आ जेकरा नै छै ओकर गति की हएत! कियो राँड़ कहि राँड़िन बनौत तँ कियो यात्राक भदवा कहि दुतकारत...।

ओना, एहेन गति अखन धरि बुधनीकेँ नै भेल छैन, कारण जे रोगाएलो पति जीबैत तँ छैन्हे। भलेँ परिवारक गाड़ीक जुआ असगरे किए ने घिचैत होइथ। मुदा जहिना समाजक बीच, मकानक पजेबा जकाँ एक-एक परिवारक ऊपर समाजक भारो रहैत आ जीबैक आजादियो रहैत तहिना परिवारक बीच एक-एक बेकतीक सेहो होइत अछि। शरीर अलग-अलग रहनौं, पानिक बीच जेहेन सम्बन्ध रहैत, से तँ रहिते अछि। मुदा बुधनी तँ जालमे ओझराएल छैथ। दस बजे पुर्वाहनमे जे बेटा स्कूल जाइ छैन ओ चारि-पाँच बजे अपराहनमे घुमि कऽ घरपर अबै छैन, तैबीच रोगाएल पतिकेँ छोड़ि बुधनीकेँ केतौ बाहर जाएब उचित हएत? मुदा बाधो-बोन नै जाएत से हेतइ? तँए कि बुधनीक विचारक सागर सुखि गेलैन जे एक-बोल पतिसँ नै

बाजि पाबैथ? जँ एक दिस गाछक डारि टुटि रहल अछि तँ दोसर दिस राधामोहन सन, अनपढ़ पतिक जगह पढ़ल-लिखल बेटा तँ भेटिए रहल छैन। उत्साहमे मिसियो भरि कमी बुधनीमे नै आएल छेलैन, जहाँ धरि काजक सफलताक पछाइत जे मन खुशिया जानि तँ अनेरे बमकए लगैन। सौंसे गामक लोक बताह भऽ गेल, बाप बेटाकेँ दोखी बना भरि दिन गरियबैत रहैए तँ बेटा बापकेँ गरियबैत रहैए, साला बुढ़ाड़ीमे घी ढारी करैए! सासु-पुतोहुकेँ दोख दैत जे अपढंगहीं घर आएल, तँ पुतोहु बापकेँ गरियबैत जे कोन नटिनियाँ घरमे बोरि देलक।

..मुदा अनेरे अनकर गाछी देखने की फेदा, कियो तेतैरक बोन लगौने अछि तँ कियो बगुरक, केकरो गाछीमे तुइन फुलाइ छै तँ केकरोमे आम। अनेरे भरि दुनियाँ वौआइक कोन काज अछि। अपन धन्धाक दुखक भागी ने छी आकि अनेरो हमर माए मरल तँ अहाँ बुझबो ने केलिऐ आ अहाँक माए मरत तेकर जिगेसा करब हमर दायित्व बनल। मन ठमैक गेलैन।

जिनगीक दशा-दिशा देखि बुधनी ठकुआ गेली। जहिना धारक वेगमे कियो भँसि कऽ जान गमबैए, तँ कियो गाछपर सँ खसि जान गमबैए, तहिना कियो घरमे लगल आगि मिझबैमे जान गमबैत तँ कियो ओछाइनपर पड़ल इछानिक गन्धक बीच जान गमबैत, तँ कियो कन्हापर घैलिक भार उठा फुलवारी पटबैत जान गमबै छैथ, तँ की सभ एक्के भेल? एक नै भेनौं एक्के भेल? केना भेल? लत्ती जकाँ लतरल अछि सभ किछु समाजमे, मुदा जहिना लत्तीक गिरहपर फूलो फुलाइ छै आ फड़ो फड़ै छै, जे ओइ लत्तीक फूल फल भेल। तहिना हरेक मनुक्खकेँ अपन-अपन जिनगीक समस्या ताधैर उठैत रहत जाधैर जिनगी जीबै छी। एहेन स्थितिमे की हएत, ओ हएत जिनगीक हर समस्याकेँ अपन तालाक कुंजी बना खोली। रहल

बात जे सभ जँ सएह करत तँ मनुक्खक समाज केना बनत? समाज बनैक अपन सूत्र अछि जइसँ बनैए। ऐठाम प्रश्न बेकतीगत अछि, सभकेँ अपन-अपन बुधि-विवेक छैन। की नीक, की अधलाक विचार तँ अपने करए पड़तैन। वएह भेला पछाइत स्वतंत्र जिनगीक रस भेटैए।

बेटा राधामोहनपर नजैर गड़ा बुधनी देखए लगली। वेचाराकेँ गरदैनकट्टी करै छिऐ! अनका-अनका देखै छिऐ बड़का-बड़का शहर-बजारक स्कूलमे बेटाकेँ पढ़बैए आ..? मुदा से हमरा सन लोककेँ सम्भव अछि। जैठामक शिक्षा गलत दिशा पकैड़ झकझोड़ि रहल अछि तैठाम की कएल जाए, ई तँ नान्हिटा प्रश्न नै अछि। मुदा ओही वेचाराकेँ धन्यवाद दिऐ जे खेने-बिनु-खेने स्कूल नै छोड़ैए। ..बेटाक धर्म-कर्म देखि बुधनीक मन तड़पल। आब छौड़ा गोठगो भऽ गेल। भगवान एते रच्छ रखलैन जे आब जे अपनो (पति) मरबो करता तँ एकटा खुट्टा देने जेता। मुदा जइ वेचाराकेँ बच्चेमे माए-बाप छोड़ि दैत, भगवान ओइ बच्चाकेँ केना ठाढ़ करै छथिन। सभ की ठाढ़े भऽ जाइए। किछु ठाढ़ो होइए आ किछु नहियोँ होइए। आगू आब राधामोहनकेँ नै पढ़ा पएब। तखन तँ जँ अपने अपन पढ़ैक भार उठा लिअए तँ रोकबो नै करबै। यएह ने जे नै पढ़त तँ काजमे मदैत करत, पढ़त तँ से नै हएत। नै हएत तँ नै हएत, जँए एते दुख कटै छी तँए किछु दिन आरो काटब।

मेघक तरेगन जहिना अपन-अपन जगहसँ टक लगौने देखैत रहैए तहिना राधामोहन जिनगीक बाट दिस देखए चाहैत मुदा बेँतक बोन जकाँ तेते-ओझरी लगल देखैत जे अन्हार छोड़ि इजोत भेटबे ने करइ। मुदा मूल प्रश्न तँ मनमे उठिए जाइत रहइ। तीन मास पछाइत परीक्षा हएत, तेकर पछाइत? की आजुक जे शिक्षा-पद्धति बनि रहल अछि तइमे आगू बढ़ि पएब? ..स्कूल लगमे अछि, गामेपर सँ

जाइ-अबै छी। मुदा घरसँ बाहर भऽ शहर-बजारक खर्च जुटा पएब? जँ से नइ तँ मैट्रिक पासकेँ के पुछै छै, आँफिसो आ करखन्नोक चौकीदारी बी.ए, एम.ए. करैए।

..काँच मन राधामोहनक पिघलए लगल। बाप-माइक दशा देखि मन बेकाबू भऽ गेल। ओह! अनेरे तीन मास परीक्षाक आशामे बैसल रहब, जेते पढ़ने छी तेतबेकेँ ने घोंकैत रहब। किछु करक चाही। मुदा केतए करक चाही? शहर-बजार जा नोकरी करी आकि परिवारक संग गाममे किछु करी? जँ शहर-बजार जाएब तँ माता-पिताकेँ के देखनिहार हएत? सभकेँ अपने अछि, तखन? तखन तँ दुइए-टा उपाय अछि जे या तँ परिवारकेँ सुधारि, माने परिवारक काजकेँ सुधारि चली चाहे परिवारकेँ तोड़ि कऽ चली। ..विचारमे राधामोहनकेँ डुमल देखि बुधनी बजली- "बौआ, अखन खुट्टा बनि ठाढ़ छिअ, तूँ चिन्ता किए करै छह?"

आशुतोष दैत बुधनी राधामोहनकेँ कहलैन। मनमे अपन खुशी ई रहैन जे जँ पति मरिए जेता तैयो एकटा खुट्टा तँ गाड़नहि जेता। मुदा मनमे ईहो उठैत रहैन जे किछु छैथ तैयो पुरुख कहुना पुरुखे भेला, मौगी कहुना मौगीए भेल। ओना, तेसरो तँ होइते अछि जे पुरुखो मैगियाह होइए आ मौगियो पुरुखाह। हँ से तँ होइते अछि...।

माइक बोल-भरोससँ राधामोहनक मनमे किछु आशा जरूर जगल मुदा जेतेक जरूरत छल तेतेक नहि जगल।

..राधामोहनक ठमकैत मनमे उठलै, गामेमे देखै छी जे पनरह-सोलह बर्खबला सभकेँ केरा-पौंच जकाँ पौंच निकलै निकलए लगै छै, तखन हमहीं की जुआन नै भेलौं? मनुक्ख बाँस थोड़े छी जे समैये पाबि कोंपर देत। माए-बापक सेवा बेटा-बेटीक पुनीत कर्तव्य छी। पुनीते काज ने धर्म छी। ..पानिक टघार जकाँ राधामोहनक

मनक विचार आगू मुहेँ ससरल। की हमरे भरोसे दुनू गोरे बैसल रहता। तहूमे पिताक एहेन स्थिति छैन जे सालक कोन बात जे दिन-महिना गनि रहला अछि। परीक्षा देने एतबे ने हएत जे मैट्रिक पासक सर्टिफिकेट भेट जाएत। सर्टिफिकेट लऽ कऽ की धोइ-धोइ चाटब! सर्टिफिकेटक जरूरत ओकरा होइ छै जे नोकरी करए चाहैए। जिनगी-ले तँ ज्ञान चाही, काजक लूरि चाही...।

तत्-मत् करैत राधामोहनक मनमे उठल, परिवारमे जँ किछु करए चाहै छी तँ हुनको सबहक विचार सुनि लेब नीक हएत। जँ एहेन काज होइ जेकर जड़ि हुनका सबहक जिनगीमे रोपा गेल होइ, मुदा कोनो कारणवश ओ सुखि गेल होइ। ई तँ नहि जे बाधक एगच्छा जकाँ कोनो ओहेन काज करए लगी जे जेते हवा-विहाड़ि, ठनका-पाथर आकि झाँट-पानि हेतै, सभटा ओहीपर खसए...।

राधामोहनक मनमे उठल- जखने इच्छाकेँ अनुभवसँ भेँट होइ छै तखन जे बाट भेटै छै ओ जिनगीमे बेसी नीक होइ छइ। से नइ तँ दुनू गोरेक बीच अपन विचार राखब। हुनका सबहक की विचार होइ छैन सेहो तँ सोझहा आबिए जाएत। संगे माए-बाबूक मनमे सेहो हेतैन जे बेटा आज्ञाकारी अछि, एहनो दशामे बिना पुछने आगू डेग नै बढ़बए चहैए। अपनाकेँ पुछै-जोकर जिनगी बना लेब, सफलताक मुख्य सोपान छी। रावणक दरबारमे हनुमानक आसन नमहर ऊँच हेबाक कारण भरिसक सएह रहइ। ..माता-पितासँ पुछि लेब राधामोहन जरूरी नै अनिवार्य बुझलक। अनिवार्यक कारण मनमे छाप पड़लै। ओ ई जे किछु-ने-किछु जिनगीक सच्चाइ जरूर भेटत। माइलिक श्रम सिरिफ ओतबे नै होइत जेते गाछ फूल दइत। बल्कि ओहो होइत जे फुलाइसँ पहिने, कोनो कारणेँ गाछ सुखए नहि। प्रश्न उठैत जे की ओइ गाछकेँ ठाढ़ करैमे, बिआसँ गाछ बनबैमे ओकर श्रम नइ लगल। श्रमक उचित श्रमिक, श्रम केनिहारकेँ जखन भेटै छै

तखन मनमे खुशीक अंकुर उठै छै जे अपन कर्मक फल भेटल।

..राधामोहनक मनमे एकटा नव प्रश्न उठि गेल। ओ ई जे दुनू गोरेसँ फुट-फुट विचार करब नीक हएत आकि एकठाम? नीक-अधला जे हुअए मुदा एकटा तँ हेबे करत जे काजक गवाह एको गोरे हेबे करता। जाधैर काजक जानकारी दोसरकेँ नै रहत ताधैर काजक महतमे कमी-बेसी रहबे करत।

गोसाँइ डुमि गेल मुदा अन्हार नै भेल छल। बाहरक सभ काज सम्हारि बुधनी गठुलासँ जारैन आनि चुल्हि लग रखली। रौतुका भानस करैक ओरियानमे जुटैक सुर-सार करए लगली। तैबीच दिनक काजक हिसाबपर मन गेलैन। कोन काज सभ छेलै आ कोन-कोन भेल।

..ओसारपर बैसल बुधनी हिसाब जोड़ए लगली आ ओछाइनपर पड़ल नन्दलालक मनमे उठलैन- जखन भानसक ओरियान भइये रहल अछि तखन रातियो ठीके-ठाक रहत। भगवानकेँ मने-मन गोर लागि कहलखिन-

“भगवान, जहिना राति अराम करैले बनेलौं मुदा जँ खाइक ओरियान भेल रहए, तखन ठीके बनेलौं। मुदा अहींसँ पुछै छी जे बिनु पाइक सरलाहियो वेश्या केकरो पुछै छइ?”

नीन तँ नीने छी, खाउ-पीबू निनियाँ देवीक पूजा करू। मुदा की ओहो भुखाएल पेटकेँ पुछै छै आकि छोड़ि कऽ पड़ा जाइ छइ। खाएर जेतए जे हौउ, मरितो-मरितो तँ सुख भोगाइए जाएत...।

अनुकूल समय देखि राधामोहन माए लग आबि बाजल-

“माए, किछु करैक मन होइए। घरक जे दशा देखि रहल छी, ओ निच्चाँ दिस ढरैक रहल अछि। आइ करी-कि-काल्हि-करी मुदा करए तँ हमरे पड़त। तइसँ नीक जे बँचल समयकेँ हाथसँ नै जाए

दी।”

बेटाक बात सुनि जहिना बुधनीक मनमे आशाक बीआ खसल तहिना नन्दलालक मनमे भेलैन। मुदा लगले मन विसाइन हुअ लगलैन। ओह! वेचाराकेँ जखन पढ़ैक बेर एलै, भगवान हाथ-पएर तोड़ि घरमे बैसा देलैन। जँ अनके जकाँ हमहूँ पढ़ा सैकतिऐ तँ की राधामोहन बड़का लोक नइ बनैत, की ओ पजेबाक बड़का घर बना रहैक ओरियान नै करैत। एते तँ दोखी बेटा लग छिहे, मुदा से केना? जँ निरोग रहितौं तखन जे काजसँ देह चोरैबतौं तखन ने, से तँ अपना मनो ने अछि जे जानि कऽ कहियो कोनो काजसँ देह चोरौने हेबइ। मुदा तैयो ओकरे दुनू माय-पुतकेँ धैनवाद दिऐ जे तीन सालसँ ओछाइन धेने छी आ सभ नेकरम करैए। भगवान अहीले ने परिवार दइ छथिन जे असगरे लोक अपन जिनगी जानवर जकाँ नै जीब सकैए। जँ से होइ, माने कियो असगरे हुअए आ ओकर माए मरि जाइ तँ वेचारा की करत। काज तँ तीन गोरेक छइ। एक गोरे बजारसँ कफनक कपड़ा आनत, दोसर गोरे जरबैक ओरियान करत तँ तेसर गोरे कनबो करत किने। बेटाक विचार सुनि नन्दलाल ओछाइनेपर उठि कऽ बैसैत बजला-

“बौआ, आब की तोहू कोनो नान्हिटा बच्चा थोड़े छह जे नै किछु कएल हेतह। तूँ तँ कहुना चफलगरो भऽ गेलह, देखै छी चरि-चरि-पँच-पँच बर्खक बेदरा सभ गाए-महींसक चरवाहि करैए। जखन कि ओते पैघ जानवरक चरवाहि करैबला ओ अछि नहि। मैट्रिक पास करैमे तोरा कोनो भांगठ नइ छह, मरियो जाएब तँ तोरा माइएकेँ चाबस्सी दी जे कहुना-कहुना परिवारकेँ ठाढ़ केने रहलह। आब तहूँ जुआन भेलह। नहियोँ कहुना तँ केतेको विषयक बात पढ़नहि हेबह। आइ एते संतोष अबस्से मनमे भऽ रहल अछि जे मरितो काल पुछै-जोकर छी। तोहर बेटाकेँ ऐगला जिनगीक बाट हम

नै घेरबह। बेटा धन छह, एतेटा दुनियाँमे जिनगी नै बितौल हेतइ।”

नन्दलालक विचारसँ राधामोहनक मन फरीच नै भेल जे बाबू की कहलैन। मुदा दोहरा कऽ पुछब, थेथारब हएत। एक तँ ओहन रोगसँ पीड़ित छैथ तैपर बेसी बजबयैन से नीक नहि। मुदा अपना जनैत प्रश्नक उत्तर तँ दइए देलैन, भलेँ बुझैमे नै आएल। बुझैमे नै आएल ई कमजोरी केकर भेल, बजनिहारक आकि सुनिनिहारक?

एते बात राधामोहनक मनमे अबिते नव-पुरानक बीचक दूरीपर नजैर गेल। नव केकरा कहबै आ पुरान केकरा कहबै वा पुरान की आ नव की भेल? देखै छी जे किशोरी बाबाक गाछी तीन-चारि पुस्त पहिलुका लगौल छिऐन। गाछीक आड़ापर जे शीशोक गाछ लगौलैन, माटि भलेँ ढहि कऽ सहीट किए ने भऽ गेलैन, मुदा एक-एकटा गाछक दाम तीस-तीस-चालीस-चालीस हजार होइ छइ। से की कोनो शीशोए-टाक अछि आकि आमो गाछ सभ एहेन-एहेन अजोध भऽ गेल छैन आ फड़बो तेते करै छैन जे परिवारमे अपुछ बनौने रहै छैन। मुदा तैयो एकटा प्रश्न उठबे करत जे तैबीच (गाछीक जिनगी) की गाछक डारि नै सुखलैन आकि शीशोक पँगियाँ नै भेलैन? जरूर भेलैन।

अकासक चिड़ै सभ सेहो बाँझीक लस्सा लोलमे लगौने आबि-आबि डारिपर बैस लोल रगैड़ लस्सा लगा बाँझियोक गाछ रोपिते रहलैन। आइयो ओ गाछी ओहिना लहलहाइत अछि, जहिना शुरूक जुआनीमे लहलहाइ छल। भलेँ गहुमन साँपक लहलही नै हौउ मुदा पनियाँ-दरादक तँ ऐछे, किन्तु ओकर भय कहाँ केकरो होइ छै, होइ छै गाम-घरक गहुमनक। जे जमीन आम-शीशोक कोन बात जे चन्दन सन वस्तु दैत रहल अछि, तेकरा छोड़ि जँ कियो मरूभूमिमे बसि खुशी मनबै छैथ ओ...। भलेँ देहक मना लैथ किन्तु मनसँ नै

मना सकै छैथ।

किशोरी बाबापर सँ राधामोहनक नजैर अपना परिवारपर उतरल। खेत सभ समुचित करै दुआरे परती भेल जाइए। परतियो की कोनो एके रंगक अछि। केतौ उपजैक शक्ति क्षीण ऐछे तँ केतौ शक्तिकेँ क्षीण कएल जाइए! बिनु पानियेँक खेत केते दिन अपन सेवा दऽ सकत। रौद-जाड़सँ तपैत कहुना अपन अस्तित्व बना रखने अछि। मुदा मूल प्रश्न ऐठाम अछि जे जइ समयमे हम सभ जीब रहल छी, समयानुसार कृषि केना औद्योगिक कृषि बनत ई मूल प्रश्न अछि।

अंकुरक रूपमे राधामोहनक विचार जगलैन जे जे पूजी अछि ओइमे पशुपालन करी। मुदा पशुओ तँ केते रंगक अछि। हाथियो अछि, बकरियो अछि आ घोड़ो अछि। मुदा जहिना हाथी तँ उत्पादित छी वा नहि, तहिना घोड़ो अछि। तँए दुनू सवारी बनि गेल। जैठाम पेटक समस्या अछि ओ थोड़े ऐसँ चलत? महींस छीहो तँ ओ मरदा-मरदीक काज अछि। अखनो गाम-घरमे तीन-तीन दिन लोक वौआ-वौआ बाह कराबैए, तइसँ नीक गाए। जे किछु थोड़-थाड़ विकास भेल ओइमे गाइक पाल सेहो समायानुकूल भेल अछि। तेतबे नहि, जँ गाए-महींस पोसब तँ ओकर चाराक ओरियान सेहो करए पड़त। जे सबहक साधक बात नइ अछि। ..जइ-जोकर जिनका छैन ओ ओइ-जोकर काज सम्हारि सकै छैथ, तँए भीतरे-भीतर राधामोहन ऐ भाँजमे जे जँ घासक लूरि माएकेँ हएत तँ एते तँ उपकारे भेल।

तैबीच बुधनी आ नन्दलालक बीच कहा-कही हुअ लगल। खिसिआ कऽ बुधनी पतिकेँ कहि देलखिन- “बड़ बुधियार छेलौं तँ ओ पण्डाबा केना रुपैओ ठकि लेलक आ देहमे रोगो पैसा देलक?”

बुधनीक बात नन्दलालकेँ लगलैन नहि। पत्नीक गुरु स्वरूपा रूप सोझहा आबि गेलैन।

..तीन सालक कष्ट नन्दलालकेँ जिनगीक बहुत अनुभव करा देने छेलैन। अनुभव ईहो करा देने छेलैन जे अखन उमेरे की भेल। लोक साए-साए बर्ख जीबैए हम अधोसँ कमेमे जा रहल छी। जइ स्त्री आ बेटाक सेवा हम कैरतिऐ से दिन-राति हमरे पाछू हरान रहैए। जे हमरे पाछू हरान रहत ओ अपना-ले की करत आकि सोचत। सबहक जिनगी हम तोड़ि देने छिऐ! जइक चलैत परिवारक गाड़ी पाछू मुहेँ ढरैक रहल अछि।

अपन हारि कबूल करैत नन्दलाल पत्नीकेँ कहलखिन-

“राधामोहनक माए! अहाँ ठीके कहलौं जे पण्डाबा ठकि लेलक। दोख तँ हमरे भेल। पुरुख भऽ कऽ घरक खुट्टा तँ हमहीं भेलिऐ। मुदा एहेन ठकेनिहार हमहीं-टा छी आकि आरो लोक अछि। परिवारमे एते गलती जरूर भेल मुदा...।”

पिता मुँहक इमानदारीक बोल राधामोहनक हृदैकेँ हिलोरि देलक। बच्चा मन सूप जकाँ फटैक तँ नै पेलक मुदा हिलोरमे नीक-अधलाक सीमा जरूर बना देलकै। बाजल-

“माए, हम तँ स्कूले धेने छी, बाबू बेमारे छैथ तैबीच तूँ केते दिन बगियाक बग्गी बना दौड़ा पेमे?”

बेटाक बात सुनि बुधनी लजबिजी जकाँ आँखि मूनि विह्वल होइत बजली-

“बौआ, कोनो की लिखए-पढ़ए अबैए जे लिखि-लिखि रखितौं। मुदा एते मन जरूर गवाही दइए जे जे बनि पएल से करैत रहलौं। नीक-अधला तँ उपरबलाक छी।”

माइक विचारकेँ पकैड़ राधामोहन लत्ती जकाँ ऊपर मुहेँ उठए चाहलक मुदा एहेन कोनो-गिरह आकि अखुँए ने पकैड़ पबैत जैठाम सँ सोंगर पकड़ैत। नजैर उठा देखलक तँ समुद्र जकाँ झलकैत सभ

किछु बुझि पड़लै, मुदा नहेबाक गर केतौ नहि!..गुरुक आगू जहिना शिष्य सिर-सिरा कऽ जनैले प्रश्न पुछैत तहिना राधामोहन पुछलक-

“माए, किच्छो तँ फरिछा कऽ कह?”

राधामोहनक प्रश्नक कारक अपन रहै, मुदा बुधनी अपना कारके बजली-

“बौआ, कोनो अनकर घर-दुआर छी जे बाजब, अपन छी, अपन केलौं, तइले तोरा सभकेँ उपराग देब नीक हएत! अपन पति, बेटा, समाज, देश-दुनियाँ सभ किछु तँ अपने छी तखन कि कियो ऐसँ अलग भऽ करैए जे दोसराकेँ कहत। जइ करैले धरतीपर एलौं, जहाँ धरि सक्क लगल तहाँ धरि करै छी। जखन नीक-अधला देखनिहार कियो और छैथ तखन की करबह।”

माइक बात सुनि राधामोहनक मनमे उठल- ओह गड़बड़ भऽ गेल। तेहेन लाड़-झाड़मे पड़ि गेलौं जे अपन बाटे बटिया गेल। भरियो दिन जँ बाट तकैत रहब तैयो ऐ डगरमे थोड़े डगहैर सकब! से नइ तँ ठिकिया कऽ वएह प्रश्न राखी जैठाम वौआइतो बटोही किछु-ने-किछु अँटकैए। बाजल-

“माए, अखन दुनू गोरे–बाबूओ आ अहूँ- वीर्तमान छी, तँए एहेन रस्ता देखा दिअ जइ पकैड़ कऽ हमहूँ ताधैर चलैत रहब जाधैर ओइसँ नीक आ सक्कत रस्ता नै भेट जाएत। आँखिक सोझमे यज्ञक संकल्प सबहक माए-बापक इच्छा रहैत अछि तँए..?”

राधामोहनक प्रश्न जहिना नन्दलालकेँ तहिना बुधनीकेँ आरो भँसिया देलकैन। नन्दलालक मनमे उठैलैन- जँ बेटा उठि जिनगी उठबए चहैए, तइमे हम छुटि कहाँ रहल छी, जे बापक सेवा नै करत! किछु करैक मन होइ छै। मुदा किछु माने की, सभ किछु आकि किछु नहि? मुदा किछु विचार जँ बेटाकेँ नै देब, सेहो हीक

लगले मरब..! मनक बात कहि दइ छिऐ। बजला-

“बौआ, दुनियाँमे कियो ने अपना-ले करैए आ ने अनका-ले, हथियार बनि धरतीपर आएल अछि, ओकर उपयोग केते के केलक ओकरे लेखा-जोखा धर्मराजक घर होइ छइ। कियो धर्मराजक घर बास करैए कियो यमराजक। बेटा बनि धरतीपर जनम लेलह। ई केना कहबह मरदक बेटा छह, मुदा एते तँ कहबे करबह जे मरद बनि मरदक बेटा कहबैत रहिहह।”

पिताक बात राधामोहनक मनकेँ ओहेन बना देलक जेहेन बकरीक काँच दूधमे साहोरक दूध मिल कऽ लगले दही बना दइत। मने-मन राधामोहन चौकन्ना होइत चारू दिस ताकए लगल। गुमा-गुमी देखि बुधनी धड़फड़ाइत बजली-

“बौआ, भानसक अबेर भऽ जाएत। तहूमे पथ-पानिक ओरियान तँ अपना सभसँ फुट करए पड़ैए। केना पटुआ-झोर बापक आगूमे पथ बना देबहुन। तखन तँ तोरो बड़ जिद लगल छह मुदा माए भऽ कऽ की कहबह। यएह ने कहबह जे हाथ-पएर भगवान दुरुस देने रहथुन तँ दनदनाइत आगू मुहेँ दौगैत रहिहह।”

कहि झपटल उठि बुधनी भानस करए चुल्हि दिस बढ़ि गेली।

❑

शब्द संख्या: 3037

तेसर पड़ाव

रातिक पौने नअ बजैत। गामक शिवालयो आ ठकुरवारियोमे सौंझुका शंखो आ डमरूओ बाजि गेल। जारैन नीक रहने बुधनीक भानसो आन दिनसँ किछु पहिनहि भऽ गेलैन। मुदा गामक देवालयक धूप-आरतीसँ पहिने लोक खाए केना लैत! आ जँ खाइए लेत तँ कि भऽ जाएत?

..ऐ विचारमे चुल्हिए लग बैस खोंरनाक जराएल मुँह दिससँ चुल्हिए आगू लिखए लगली। लिखल-पढ़ल तँ बुधनीकेँ नै होइत मुदा सभ दिनक आरतीक स्तुति सुनि पढ़ै-गुनैक लूरि तँ भइये गेल छेलैन। कियो अपन अक्षर चित्रे घीचि बनौत तइसँ अनका की...। तैबीच ठकुरवारीमे स्तुति शुरू भेल-

“भए प्रगट किरपाला दीन दयाला...।”

ओना, बुधनी सभ दिन स्तुति सुनैत, मुदा आइ खोंरना हाथमे रहने चुल्हिए आगू लिखौ लगली। स्तुति केतौ बतियाइत, बुधनीक कान केतौ सुनैत आ हाथक खोंरनी केतौ चलैत। एक बाट नइ रहितो धारक धारा जकाँ अपना-अपनीकेँ सभ दौगैत...।

स्तुति समाप्त होइते जना बिजलीबला इंजन बिजली लाइन कटने जे जेतए गेल रहल ओ ओतै रूकि जाइत तहिना बुधनीकेँ भेल। दुनू हाथो आ कानो अपने रूकि गेलैन। रूकिते मन औनाए लगलैन। मुदा आगूमे भानसक बरतन आ खाइक समय, तँए मन

परिवारे दिस समटा कऽ घेरा गेलैन। मोन पड़लैन राधामोहनक प्रश्न। ओह! वेचाराकेँ कहाँ किछु उत्तर देलिऐ। कहुना तँ माए-बाप अखन हमहीं ने छिऐ, सोझहे असिरवाद देने थोड़े होइ छै, आ असिरवादी सेहो दिअ पड़ै छै किने। ..अपसोच करैत बुधनीक मन ठमकलैन। ठमैकते उठलैन जे नै किछु विलगा कऽ कहलिऐ तँ मनाहियोँ तँ नहियेँ केलिऐ। बीचमे भूमकमो तँ नहियेँ भेल, जे उनटन भऽ जाइत। की हेतै खाइए काल बौआकेँ बुझा-बुझा कहबै।

नअ बजिते बुधनी पहिने पतिकेँ भोजन करौलैन। पछाइत अपनो आ राधामोहनो खाइले बैसली। मुँहक अन्न मुहेँमे बुधनीकेँ घुरियाइत रहैन कि बिच्चेमे अपन जिनगी मोन पड़लैन। केतए जनम भेल, माए-बाप ऐठाम केते दिन रहलौं, पछाइत दुनू गोरे नव लोककेँ पति बना हाथ पकड़ा देलैन। पतिक संग जिनगी भरिक शर्त्त छल से भगवान कलछपन केलैन। जे अखन देखैबला छला तिनके तेना कऽ मचोड़ि देलकैन जे देखनिहारकेँ स्वयं देखनिहारक जरूरत भऽ गेलैन। खाएर.., कोनो कि दाम्पत्य जीवन नै रहल। माइयो-बाप आ साउसो-ससुरक इच्छा तँ पुराइए देलिऐन। आब कि राधामोहन बच्चा अछि। ओ कि घरक मोटरी उठा नै चलि सकैए। जहिना पतिक आशा तहिना ने बेटोक...।

बजली- "बौआ, तखन केना पुरुखक सोझ अपन विचार कहितिअ। कहुना भेला तँ स्वामीए भेला किने। जाबे आँखि तकै छैथ ताबे आँखि उठाएब नीक थोड़े हएत, तँए तखन किछु ने कहलिअ।"

जिज्ञासा भरल माइक बात सुनि राधामोहन अपन चित्त असथिर करैत बाजल- "कोन बात माए बिसैर गेलौं।"

मुँह-कान चमका जहिना माए बच्चाकेँ चमकब सिखबैए तहिना बुधनी मुँह चमकबैत बजली- "तोहूँ बाले-बोध जकाँ बुधि-

बिसरू छह। आब धीगर-पुतगर होइमे बाँकी छह।”

बिनु नाविकक नाह जहिना झीलमे हवाक संग अपने झिलहोरि खेलाइत तहिना बुधनीक मन खेलए लगलैन। ..विस्मित होइत माएकेँ देखि राधामोहन बाजल-

“माए, तेते ने कहै छेँ जे एकोटा मन रहत। सभटा बिसरैए-बला बजै छेँ। कोन बात तखुनका कहए लगलेँ से ने कह?”

बुधनी बजली-

“बौआ, तखन जे कहने छेलह जे किछु करैक मन होइए। से करैसँ मनाही करबह। बड़ करबह तँ अपन कएल सुना देबह।”

माइक बातमे राधामोहनकेँ आशाक अंकुरक सम्भावना बुझि पड़ल। पियासल बटोही जकाँ माइक आगू राधामोहन चुपचाप भऽ गेल।

बुधनी बजली-

“बौआ, जुग-जमाना तेहेन आबि गेल जे..?”

अधबोलिया बाजि बुधनी चुप भऽ गेली। मुदा राधामोहनकेँ बुझि पड़लै भरिसक कोनो दोसर बात मोन पड़ि गेलैन। ओना नै हएत, अपन कएल काजक बड़ाइ सभकेँ नीक लगै छै, तँए प्रश्नकेँ सोझरा कऽ राखब नीक...।

बाजल-

“माए, एहेन कोनो काज कह जे खुशी मनसँ कएल हौ?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनी ठमैक कऽ बुदबुदेली-

“केकरा खुशीसँ कएल कहब आ केकरा नै कहब। एके काज केकरो लिए खुशीक होइए आ केकरो लिए नाखुशीक भऽ जाइए। भानस करैक लूरि माए सिखौलक, केना अधला भेल। मुदा ओकर

जरुरत तँ बेटीकेँ होइ छै, राधामोहन तँ बेटा छी। भाए-बाबू गाए पोसै छला। गिरहत तँ नमहर नहियेँ छला मुदा सूर्यवंशी दिलीपक बाट जरूर पकड़ने छला। गाए तँ देशीए पोसै छला मुदा जेहने गाइक रंग-रूप तेहने दूधो छेलइ...।"

बुदबुदाइत बुधनीकेँ जेना एकाएक भक खुजलैन तहिना बजली-

"बौआ, तोहू जमानामे बाबूक खुट्टापर तेहेन-तेहेन गाए रहै छेलैन जे...।"

बिच्चेमे बुधनी तेना चुप भऽ गेली जेना किछु मोन पड़लैन। मुदा तूक नै बैसने ठमैक गेली। माएकेँ चुप देखि राधामोहन पुछलकैन-

"माए, गाएकेँ की सभ करै छेलही?"

अपन काजक चर्च सुनि बुधनीक वृत्ति चित्त जगलैन। जहिना कोठीक निचला-मुह खुजिते अन्न भुभुआए लगै छै तहिना जिनगीक मुँह खुजिते बुधनी भुभुएली-

"बौआ, माए-बापक घर बड़ सुख केलिऐ, जेतबो उमेर धरि सुख केलिऐ तेतबो तोरा कहाँ देल भेल। तखन तँ 'अनेर गाइक धरम रखबार!' माइए-बापक धर्मे अखनो ठाढ़ छी।"

बुधनीकेँ फेर धारमे भँसियाइत देखि राधामोहन जालक जौड़ पकैड़ बाजल-

"माए, सएह ने पुछै छियौ जे माए-बाप कोन धरम केलखुन जे अखनो ठाढ़ छेँ?"

अपनाकेँ हिलोरैत बुधनी बजली-

"बौआ, बिआह होइसँ पहिनहि माए संग भानसो-भात

सिखलौं, खेतियो-पथारीक काज सिखबो केलौं आ करबो करै छेलौं आ माल-जाल-ले घास-भूसा सेहो करै छेलौं। ऐठाम तँ ओ काजे बिसैर गेलौं।”

राधामोहन-

“ऐठाम की सभ सीखलिही?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनी लजाए लगली। मनमे उठए लगलैन जे केना बेटाकेँ कहब जे बौआ स्त्रीगणो भऽ कऽ कोदारि पाड़ब, धान रोपब एतइ सीखलौं। की कहत? ओना, करैत तँ देखबे करैए मुदा नैहरसँ सासुरकेँ केना दुसि देब। कहुना भेल तँ पराए घर भेल किने।

माएकेँ तत्-मत् करैत देखि राधामोहन बाजल-

“माए, गाइयक की सभ करै छेलँह?”

बुधनी-

“माइक संगे घासो अनै छेलिऐ, कुट्टियो काटै छेलिऐ। गोबर-हटौनाइ, थइर खड़रनाइ, नमेनाइ-ओगारनाइ सभ किछु करै छेलिऐ।”

राधामोहन-

“गाएकेँ दुहबो करै छेलही।”

दूहब सुनि बुधनी चमैक उठली-

“से कि भाए-बाप नै छलए जे दुहितौं। केतए-कहाँ सुनै छी जे पंजाबमे मौगियो गाए दुहैए।”

राधामोहन-

“जखन गाए पोसैक लूरि तोरा छौ, तखन खुट्टापर गाए कहियो कहाँ देखलियौ। नाना-नानी नइ देने छेलखुन?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि बुधनीक मन नाचि उठल। आइ जँ खुट्टापर गाए रहैत तँ यएह दिन-दुनियाँ रहितए। भगवानकेँ मंजूर नै भेलैन। जेहो छल सेहो हेरि लेलैन। बजली- “बौआ, बिआहमे तेहेन गाए बाप-माए देलक जे ओकरा जरहकेँ सम्हारि नइ पबितौं, मुदा दैवक डाँग लागि गेल!”

राधामोहन-

“की दैवक डाँग लगलौ?”

बुधनी-

“पहिलोठ गाए, बच्छा-तरे बाबू देने रहैथ। जाबे लगैत रहल ताबे दूध-दही परिवारमे चलैत रहल, मुदा दोसर बेर जखन गाए उठल तखन तेहेन खुनियाँ साँढ़क भाँजमे पड़ि गेल जे गाइयक टाँगे टुटि गेल।”

राधामोहन-

“टाँग टुटि गेलै तँ ओकरा डाक्टरसँ नै देखौलही?”

बुधनी-

“लोक सभ कहलक जे बलियारिमे एकटा लत्ती होइ छै, उ आनि कऽ बान्हि दियौ, छुटि जेतइ। सएह केलौं मुदा नै सम्हरल गाए। खुट्टे उसैर गेल।”

राधामोहन-

“माए, मन होइए जे गाइए पोसितौं?”

विस्मित होइत बुधनी-

“बौआ, अपना परिवारमे गाए कहाँ धाड़ैए।”

राधामोहन- “फेर दोहरा कऽ गाए नै भेलौ?”

धड़फड़ा कऽ बुधनी बजली- “बौआ, जइ काजमे खौटक लगि

गेल से केना करितौं?”

धड़फड़ा कऽ बुधनी बाजि तँ गेली, मुदा मनमे उठलैन जे दोहरा कऽ गाए पोसबो तँ नइ केलौं। पोसबो केना करितौं?

...सोझहा-सोझही दुनू तरहक विचार मनमे दुनू दिससँ भऽ गेलैन। बीचमे ठाढ़ बुधनी छटपटाए लगली। माइकक छटपटाइत नजैर देखि राधामोहन प्रश्नकेँ मोड़ैत बाजल-

“एके बेर एहेन विचार किए भेलौ जे खौटका लगि गेल तँ दोहरा कऽ नै पोसब।”

निरुत्तर होइत बुधनी बजली-

“से कि अपने दुनू परानीक विचार भेल आ कि..?”

राधामोहन-

“की, आ कि?”

बुधनी-

“बौआ, अपना तँ देखले अछि जे नैहर अही परसादे भरि गाममे ओहन परिवारक रूपमे अछि जे परिवारक गाड़ी दनदनाइत चलैए। तेतबे नहि, मौका-कुमौका दोसरोकेँ उपकार होइ छेलइ। तेहेन गाए छल जे मुइला पछाइतो नै उतरल अपना चित्तसँ। मुदा अपने मुँह मारि लेलैन। एक्केठाम मनमे रोपि लेलैन जे आब ई काज नहि करब।”

राधामोहन-

“बाबू मुँह मोड़ि लेलखुन तँ दोसर-तेसर लगबा कऽ किए ने कहबौलहुन?”

जहिना पँकाएल धारमे टपैकाल केतौ-केतौ हेराएल चिक्कनि माटि भेट जाइत जइसँ किछु बिलमैक आश जगैत तहिना जोरसँ

ठेलैत बुधनी बजली-

“बौआ, एक मुँहकेँ के कहए जे साइयो मुँह रोकि देलक।”

माइक स्पष्ट विचार राधामोहन नै बुझि सकल। मनमे हौंरए लगलै जे ओ साए मुँह केतएसँ आबि गेल?

..बाजल-

“ई नै बुझलिऐ जे साए मुँह की कहलिही?”

जहिना थकान भेला पछाइत नाकक संग मुहोँसँ साँस लिअ लगैत तहिना बुधनीकेँ भेलैन। राधामोहनक प्रश्न समाप्तो ने भेल छल तइ बिच्चेमे टप-टप बुधनीक मुहसँ चुबए लगल-

“बौआ, एक तँ अपनो विचार रहबे करैन तैपर एकोरत्ती सह पाबि जाथि तँ आरो मन सकता जाइन। जखने मन सकताइन आकि झिझैक कऽ कहए लगै छला जे आब गाए नै पोसब।”

राधामोहन-

“केकर सह पबै छला?”

बुधनी-

“अड़ोसिया-पड़ोसियाकेँ के कहए जे समाजोक लोक कहैन जे तोरा खुट्टापर गाए नै धाड़ै छह, अनेरे एहेन फेड़मे नइ पड़ह!”

राधामोहन-

“जेकरा खुट्टापर गाए छेलै तेकरासँ नै पुछै छेलखिन। किएक तँ हुनका एहेन तीत-मीठ घटनासँ भेँटो तँ भेले हेतैन।”

बुधनी-

“से कि संगे जाइ छेलौं जे देखतिऐ। हँ! एक दिनक सोझहाक बात कहै छिअ। एकटा पण्डा आएल। ओकरा जेना कियो कहि देने होइ तहिना दरबज्जापर अबिते अपने फुरने बाजए लगल जे ऐ

डीहपर ग्रह चढ़ाइ केने छह। सम्पैतक क्षय हएत। ‘सम्पैतक क्षय’ सुनि आँखि ढबढ़बा गेल। केना जीब। जखन पेटे ने भरत तँ भुखले केते दिन जीब। केना बाल-बच्चा हएत आ केना पतिपाल हएत। अपने तँ ढबकल आँखिक नोरकेँ ब्लौटिन पेपरसँ सोखबो करैत रही मुदा हुनका नै सम्हार रहलैन। दहो-बहो नोर गालपर देने टघैर-टघैर निच्चाँ खसए लगलैन...।”

बजैत-बजैत बुधनीक आँखि नोरा गेलैन। बोली भरभराइत देखि खखास करए लगली।

..राधामोहनक आँखिमे सेहो नोर आबि गेल। मुदा आँखिक अश्रुकण रहितो सुषुमाएल छल। जहिना दर्दक निवारण सुसुम पानि करैए तहिना परिवारक दर्दक निवारण राधामोहनक मनमे जागल। तरे-तर राधामोहनक मनमे संकल्प उठल जे जीवनोपयोगी कोनो काजक जँ सर्वांगीन लूरि भऽ जाए तँ ओही काजक सम्पादन परिवारक अंग बनै छै तँए..?

राधामोहनकेँ चुप देखि बुधनी आँचरसँ आँखि पोछैत बजली-

“बौआ, गाइयक संग पगहो गेल। पण्डाबा से ठकि कऽ लऽ गेल।”

माइक टुटैत मन देखि राधामोहन बाजल-

“गामक लोक सभकेँ किए ने खुट्टापर गाए छैन?”

अपनाकेँ पुछै-जोकर पाबि बुधनीक मनमे खुशी आएल। जहिना हरमुनियाँक पुरने पटरी चैताबरक टाँहि दैत तहिना बुधनी टाँहि देलैन-

“बौआ, बड़-बड़ लीला छइ। केते कहबह। एक-बेर कि-ने-कि सरकारकेँ फुरलै, गामे-गाम बड़का जरसी साँढ़ देलकै। सेहेन्ते लोक पाल खुआबए लगल, किछु तँ जरूर सुतरलै मुदा बेसी गाइक डाँड़े-

टाँग टुटलै जइसँ भरि गाममे उपटनियाँ लगि गेल।”

बातक रस पबैत राधामोहन बाजल-

“की कहलिही बड़-बड़ लीला..?”

बुधनी बजली-

“सरधुआ साँढ़ तेहेन भऽ गेल जे गाए सभ बकरी जकाँ भऽ गेल। गरीब पोसिन्दारक पछाइत तेहेन गरदैनकट्टी भेल जे पोसनाइए छोड़ि देलक।”

❑

शब्द संख्या: 1633

चारिम पड़ाव

परीक्षाक मास दिन पहिनहि प्रोग्राम निकलल। ओना, अखबारो सभमे रहै मुदा असल विद्यालयमे जे आएल छल ओकरे बुझि राधामोहन विद्यालय विदा भेल। सुनबामे ईहो एलै जे अंगरेजी विषयक परीक्षा तँ हएत मुदा पास-फेलक कोनो महत नइ रहत। एक तँ परीक्षाक जिज्ञासा दोसर अंगरेजी उठावक खुशी मनमे रहबे करइ। अंगरेजी उठावक दसो दुआरि भगवतीक आगमनसँ खुजि जाएत, अंगरेजी सभसँ बेसी समय विद्यार्थीक खा लैत अछि। जिनगीक दशो दुआरि खुजैक परीक्षा, जइमे दसो विषयक पढ़ाइयो होइत आ परीक्षो होइत। ओना, जइ हिसाबसँ अंगरेजी विद्यार्थीक समय खाइए तइ हिसाबसँ आपसी नहियेँ होइ छै मुदा सोलहन्नी नै होइ छै सेहो बात नहि। अक्षत कम देवता बेसी रहने बँटाइत-बँटाइत वेचारी मैथिलीकेँ हिस्से कम भऽ जाइ छैन। मुदा तँए कि वेचारी निराश छैथ? नहि। निराशाक तँ प्रश्ने मनमे नै उठै छैन। कारणो स्पष्ट अछि। एक तँ गनल कुटिया नापल झोर जकाँ स्कूलो-कौलेज अछि, तहूमे किछु-ने-किछु मैथिलीकेँ सेहो भेटिए जाइ छैन, मुदा अधिकांश मैथिल तँ स्कूल-कौलेज देखबे ने करैत अछि। आखिर, ओहो सन्तान तँ माँ मैथिलीए-क छिऐन। ओना, जे कुभेलो करै छैन तेकरो-ले मनमे कुभेला नहियेँ छैन, हेबो केना करतैन, अपन कर्तव्यसँ-च्युत भऽ बेटा-कुबेटा बनि सकैए मुदा अपन कर्तव्य पुरौनिहारि धरती सन धीरज रखैवाली माए केना कुमाए बनि सकै छैथ? ओना, हाइ-स्कूल

अबैत-अबैत बच्चा ढेरबा भऽ जाइए, तइसँ पहिनहि विषय रूपी गुरु अपन-अपन शिष्य चुनि लेने रहै छैथ। मुदा जहिना जेठुआ बर्खाक गति तहिना बाल-बोधक। मुदा हाइ-रे-हाइ, कुबेवस्थाक चलैत फिजिक्सक एम.ए. रेल-बसक टिकट कटनिहार बनि जीवन-यापन करै छैथ! ज्योतिष पढ़ि पुलिसक लाठी चलबै छैथ। तैठाम जिनगीक बिसवासे केते। जखन जिनगीए-क बिसवास नहि तखन जिनगी जीनिहारेक बिसवास केते। खाएर जे हौउ...।

प्रोग्रामक उमकी राधामोहनक मनमे उमकले रहए, साढ़े दस बजे स्कूल खुजैए, पूर्वाहनेक काज नीक बुझि विदा भेल। अन्तिम फागुनक समय, मास दिनसँ ऊपरेक वसन्त भऽ गेल छल। फगुआक उमकीमे जहिना उमकैक विचार मनमे उठै छै तहिना राधामोहनक मनमे सेहो दशो दुआरिक दीप जरबैक उमकी रहबे करइ। मुदा घरसँ निकैल डेगे-डेग जेते आगू बढ़ैत ओते मन पाछू दिस ससरए लगलै। मनकेँ पछुआइत देखि उमकियो पाछूए दिस मुड़ि गेलइ। राधामोहनक मनमे उठलै जिनगी आ परीक्षा आकि जिनगीक परीक्षा? शुद्ध पानि ने इनार-पोखैरमे असथिर रहैए मुदा जखन ओकरा चीनी वा नूनसँ दुषित करबै भलेँ ओ जीवनोपयोगीए किए ने हुअए मुदा दुषित तँ भेबे कएल? राधामोहनक विचारमे दू दल अपन-अपन विचार लऽ कऽ ठाढ़ भऽ गेल। घन्टो लक्कर-झक्कर भेलो पछाइत नइ फड़ियाएल जे बुधियो ज्ञान छी आकि ज्ञान आनैक बाट?

..विचित्र स्थितिमे राधामोहन ओझरा गेल। जिराएल आदमी जहिना पहिल झोंकमे बेसी दूर दौर लगा लइए मुदा धीरे-धीरे उत्साहमे कमी हुअ लगै छै तहिना राधामोहनोकेँ भेल। उत्साह कमिते देहमे थकथकीक आगमन भेलै जेना-जेना थकथकी बढ़ैत गेलै, तेना-तेना थकाएल बुझि पड़ए लगलै। अदहा रस्ता तँ टपि

चुकल छल मुदा अदहा टपब भारी बुझि पड़लै। गाछीक छाहैर टोहिया कोनैला बड़बड़िया गाछ लग पहुँच बैस रहल।

एक तँ ओहुना पुरान पत-धारी माने नव-नव पत-धार बड़बड़िया गाछक सेखी रहबे करइ। तैपर कनी सिहकी सिहैकते रहै, फागून रहने मजर संग टुकलो रहइ। ..रौद गरमेने दोहरी बोझ राधामोहनक माथपर चढ़ि गेल रहइ। मुदा गाछक छाहैर जेना राधामोहनक कोहि फेरलक। नजैर गाछी दिस बढ़लै। बड़बड़िया आमक गाछक सटले पतियानीमे फैजली आमक गाछ। बड़बड़ीए गाछक जड़ि लगसँ देखए लगल। दुनू आमेक गाछ छी मुदा एना किए अछि जे एकटा किलो भरिक आ दोसर किलोमे पचास चढ़ैत? प्रश्नक ठेहसँ राधामोहन ठेहियाए लगल। मन घुमि कऽ समय दिस ससरलै। चौबीस घन्टाक भीतर दिन-रातिमे केते अन्तर होइ छइ! बारह बजे दिनमे लोक दुनियाँक कोण-कोण देखि सकैए आ बारह बजे राति ओछाइनसँ उठि पेशाबो करैले जाइ काल संगीक जरूरत पड़ैत अछि। मुदा फागुन मासमे सूर्योदय आ सूर्यास्त केना एके रंग मनोरम बनि जिनगीक बाट पकड़ैए, भलेँ एकटा अन्हार दिस बढ़ैत दोसर इजोत दिस?

बड़बड़िया-फैजलीक बीच राधामोहन लटैक गेल। किछु फुरबे ने करै जे गाछ-बिरीछ लोकक देल छिऐ, ई तँ सुच्चा भगवानक देल छिऐन। लोक ओकर सेवा करैए आ गाइक दूध जकाँ अमृत खाइए। मुदा ई तँ अद्भुत अछि जे दुनू आम रहितो एना अकास-पतालक अन्तर किए अछि! भगवान तँ केकरो ने अधला करै छथिन आ ने अधला सोचै छथिन। सोचबो केना करता अपने शक्तिसँ ने सोचैक शक्ति दइ छथिन। तहिना हाथ-पएर थोड़े रखने छैथ जे कोनो काज करता..! ई तँ जरूर लोकक करतुत छी। तैबीच बड़बड़िया आ फैजलीक बीच कहा-कही हुअ लगल। फल देखि फैजली बाजल-

“रे बड़बड़िया, हमर किलो तोरा नानासँ नमहरे हएत।”

फैजलीक बात सुनि बड़बड़िया गरमाएल नहि, अखन धरि अपनो मन मानै छेलै जे फैजलीक आगू हम किछु छिहे नहि। जहिना बनियाँ दोकानक मंगनी वौस, तहिना छी। मुदा एकटा गुण तँ हमरोमे ऐछे जे अनको-आन गाछक आम लेलो पछाइत झगड़ा नै हुअ दइ छिऐ। मुदा एकटा फैजली आम, एक छर कुशियार, एक पुड़ा मखान केतेकँ कपार फोड़ौने अछि। ..मनमे खुशी रहने बड़बड़िया बाजल-

“धरमागती बाज जे जेहन सोझ-साझ हमर शीलो आ डारियो अछि तेहेन तोहर छौ! केकरो संग कियो जाएत नहि। बाज?”

फैजलीकेँ चुप होइते बड़बड़िया रेबाड़ि कऽ फेर बाजल-

“सुनि ले, हमरे भाए-भातिज तोरा डारिमे सटि अपन मुड़ी कटा हृदए देने छौ, जैपर तूँ ठाढ़ छेँ।”

दुनूक झगड़ा देखि राधामोहन अपन काज–स्कूल जा प्रोग्राम लिखब–बिसैर गेल। जिरेला पछाइत गाछ तरसँ उठि विदा भेल। ख-खाएल मन रस्ते बिसैर गेल जे केतए जाइ छेलौं।

थकथकाइत राधामोहन घरमुहेँ भेल। जहिना हेराएल-ढेराएल गाए-महींसक बच्चा साँझू पहर डिरियाइत घर दिस अबैत तहिना राधामोहन जेतेक घर दिसक बाट टपैत तेतेक जोर-जोरसँ मनमे हुँहकारी उठइ।

गाछी आ घरक आधा बाट टपैत-टपैत राधामोहनक भक खुजल। जेना ओंघाएल, निशाँएल, भकुआएल इत्यादिक भक खुजैत तहिना रस्ताक भकमोड़ी लग आबि राधामोहनक भक खुजलै। मोन पड़लै हाइ रे बा! जाइ छेलौं परीक्षाक प्रोग्राम लिखैले आ आबि केतए गेलौं? ओना, चारि बजे तक स्कूलक काज चलै छै मुदा ई बारह बजेक रौद अनेरे खाइले जाएब। नै जाएब तँ परीक्षा

केना देब? नै परीक्षा देब तँ पास केना करब? ..दोसर दिस मनमे उठै जे पासे करि कऽ की करब। जखन आगू पढ़ैक आशे नइ अछि तँ मैट्रिक पासकेँ मोजरे केते होइ छै जे बेसी फड़त। जेतबे मोजर तेतबे ने फलो। एम.ए-बी.ए तँ ऑफिस-कारखानामे दरमानी करैए आ मैट्रिककेँ के पुछै छइ। तहूमे जेते पढ़लौं तेते तँ ज्ञान भइये गेल अछि तखन अनेरे एकटा कागत-ले हरान हएब। ..द्वन्द्वमे पड़ल राधामोहनक मनमे उठल- काजक परीक्षा नै जिनगीक परीक्षा असल परीक्षा छी। मुदा जिनगी की? जंगलमे जहिना हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछ रहै छै, जे हजारो रंगक फूल-फड़ दइ छै आ नहियोँ दइ छइ। तहूमे किछु फूल एहेन होइत अछि जे सुगन्धितो होइए, सुन्नरो होइए मुदा फड़क कोनो दरसे ने होइ छइ। तहिना किछु फड़ो एहेन होइ छै जे बिना फूलेक फड़ि जाइए! आ किछु फड़ एहनो होइ छै जे फूलसँ पहिने फड़िये जाइए। तँ किछु फड़ो एहेन होइ छै जे संगे-संग गाछमे निकलै छइ। किछु फूल-सँ-फड़ होइ छै तँ किछु एहनो होइ छै जे फूल केतौ फुलाइ छै आ फड़ि केतौ जाइए। तहिना ने मनुक्खोक जिनगी अछि। जेते मनुक्ख तेते रंगक फूल-फड़। जहिना बर्खाक उपरान्तो आ होइतो-खिन बून-बून मिलि धारा बनबैए। भर्लें एक-दोसरमे मिलैत गहींरगर बाट बना गहींर दिस विदा भऽ जाइए। जइसँ चरो-चाँचर आ नीचरस खेतो आ पोखैरो-झाँखैरकेँ भरबो करैए आ नहियोँ भरैए। भरबो तँ अजीबे अछि। केतेसँ भरब कहब सेहो कठिन अछि। किएक तँ जँ साढ़े तीन हाथक मनुक्खकेँ अदहा किलो दिन-राति भोजन मानि लेब तँ पँच-पँच साए रसगुल्ला केना पेटमे अँटै छइ! दस-दस किलो माछ आ दू-दू तौला दही केना पचबैए..! राधामोहनक मनमे उठलै- अनेरे वौआइ छी। काज छोड़ि जखने मन वौआएत तखने बहपनी आबए लगत। जखने बहपनी औत तखने धार-सँ-धारा बनए लगत। मुदा धारोक तँ ठेकान नहि। एक तँ ओहुना

धारक धारा जकाँ जिनगीक बहान नइ अछि। किछु एहेन होइए जे जुग-जुगसँ एके स्थानपर बोहैत आएल अछि आ किछु एहनो अछि जे दोसरमे मिलि अपन अस्तित्वे मेटा लेलक। मुदा तेतबे नहि, एहनो तँ कोसी-कमला जकाँ ऐछे जे सालमे तीन-तरपान तरपैए!

जेते राधामोहन पताल दिस वा अकास दिस नजैर दौगबैत तेते रंगक दुनियोँ आ पतालो मनमे अबैत जाइत रहइ। अकास दिस तकै तँ देखै जे फनिगा धरतीसँ उठि कूदि-कूदि अकास दिस ऊपर चढ़ए चहैए, घोरन-चुट्टी मरैक पाँखि पहिर उड़ैए...। तहिना पताल दिस तकैत तँ एक्के पोखैरमे सत-रंगा माछक जीवन-यापन सुख-चैनसँ होइत देखैत। थालक गैंची गैंचिया-गैंचिया थालमे बिआह-दुरागमन कऽ पत्नीक लगमे राखि जीवनो-यापन करैए आ कुल-खनदानक धुजा गाड़ि बालो-बच्चाक उपार्जन सेहो करैए। तहिना पानिर्येंमे माटिसँ ऊपर रेहु-नैन-भौंकरी सेहो अपन-अपन सीमा रेखा खींच-खींच अपन घरो-दुआरि बनबैत आ परिवार संग मिलि वंशोकेँ जीवित रखने अछि...।

बाल मन राधामोहनक जेमहरे नजैर दौगबैत तेम्हरे डाभ-कुशमे ओझरा जाए। जहिना चाणक्य छैथ नहि छला आ तहियाक नालन्दा विश्वविद्यालय जे कुश उपटाएब शुरू केलक ओ कुश अखनो धरि गामे-गाम ऐछे, वेचारे असकरे केतेक गामक उपटौत। तहूमे ओहन समाजमे जे सदैत जमीनदारीए वा जागीरदारीए बनबै पाछू लगल रहैए। एक्के रंगक जागीरदारीक बीच समाज थोड़े अछि।

सौन-भादोक वायुक गति भलेँ मंथर भऽ जाए मुदा चैती-फुहा, फुहराम हवा तँ केतौ-सँ-केतौ उड़िते अछि। राधामोहनक मन ओही फुहराम हवाक संग उड़ि पुरुषोत्तम लग पहुँच गेल, बीचमे केतौ मुदा अँटकल नहि। दरबारमे बैसैसँ पहिने मनमे उठि गेलै जे त्रेता-जुगक

जुआन-जहान राम चारू भाँइ भेला मुदा समाजक बुढ़-बुढ़ानुसक विचार पिताक विचारक आगू किए ने मानलैन। समाजक जेते बुढ़-बुढ़ानुस छेलखिन ओ अपनामे विचार किए ने केलैन जे राम सन परब्रह्म समाजक अंग बनल रहए। नइ कि बनलोहो बिगैड़ जाए। तइसँ नीक जे हुनके (रामेक) वृद्ध पर-पितामह–दिलीप छैथ तिनके दरबार जा अपन उचिती-विनती किए ने करी जे अपना राजमे बासो देबे करता।

..जेना कानमे कोनो दिशासँ कोनो तरहक आवाज अनासुरती प्रवेश कऽ मनकेँ जगा दैत तहिना राधामोहनक मनमे जगल। अपन संकल्पक संग अपन जिनगी बना जीब। जँ से नइ तँ हारि की भेल? जाधैर मनुक्ख दोसराश्रित रहत –वैचारिक छोड़ि– ताधैर पर्यावरणमे कमी हेबे करत। जिनगीक पहिल विचार जखन मनमे उठल तँ की ओ अधला उठल? जँ नहि तँ किए ने पालन-पोसन करब? जाबे धरि दूध पैदा करैक शक्ति मनुक्खमे नै औत ताबे धरि हंसक बास केना भऽ सकै छइ?

..जेतए दूध रहत तेतइ ने हंसोक बास रहत। मुदा दूध-पानि बेरौनिहार हंस मनुक्खक देल पानि बेरबैए आकि भगवानक देल जे गाए-महींसक पेटेमे फेँटल रहैए तेकरो बेरबैए?

बाल-बोध बच्चा जहिना चलै-जोकर टाँग होइते पछोर धऽ चलए चाहैत मुदा चालिक गति पछुआ दोसर बाट सेहो धड़ा जाइत, मुदा बाट तँ बाटे छी तहिना राधामोहनक मन बाटक आशा बाट पकैड़ वौआए लगल। मोन पड़लै अपन पहिल बाट- गाइक पालन-पोसन। मनमे उठिते उठि गेलै- 'परिवारमे गाए नै धाड़ैए। तँ धाड़ैए की? धार-साज तखन बनै छै जखन ओइमे मन मधुरस आबि मनकेँ पकड़ै छइ। पशुपालनक अंग भेल गाए पोसब आ पशुपालन कृषिक

अंग रहल अछि। किसानक देशक विकास बिना किसानी प्रक्रियासँ सम्भव अछि? अपना लिए अपन दुनियाँ बना-बना बैस जीवन-यात्रा भरिसक सभसँ नीक होइ छइ। जइ बीच निवास करैत अपन तन-मन-धनक एकाग्र करैए। ..राधामोहनक जिज्ञासा आरो बढ़ल। मनमे उठलै लिखित-अलिखित विचार पकड़ब। केता दिन अखबारक पन्नामे पशुपालनक लेख देखै छिऐ, मुदा ओकरा पढ़ै कहाँ छी? कियो पढ़ै छी जे भारत-अमेरिकासँ केते रणसँ जीतलक तँ दोसर कोनो पछुएलहा देशसँ केते रणसँ हारल। तँ कियो पढ़ैए पूरा इलाकामे बैंकक की कारोबार छै, तँ कियो पढ़ैत चोरी-डकैती केते भेल। तँ कियो पढ़ैत रेलक भाड़ा बढ़ि गेल आब लोक गाड़ीमे केना चलत।

..ई सभ सच्चाइ सामने अबिते राधामोहनक मन वौआए लगलै। अफसोच करैत मन अखबारसँ रेडियोपर आबि गेलइ। जे भाषा बुझै छी तइमे सैंकड़ो कार्यक्रम प्रतिदिन कृषिक अछि। अखबार हूसल तँ हूसल आइएसँ रेडियोक कार्यक्रम सुनब। मन आगू बढ़लै। कृषि कौलेज पूसापर गेलइ। पूसामे किसान मेला लगैए जइमे कृषि सम्बन्धी अधिक-सँ-अधिक जानकारी भेटै छइ। सत संगेसँ ने संगैत सुधरबो करै छै आ बिगड़बो करै छइ! अनेरे मन वौआबै छी, जखन विश्वविद्यालय ऐछे तखन आरो की चाहबे करी। मन ठमकलै। विश्वविद्यालय-ले उन्नत खेतीक जरूरत अछि, तैठाम जँ कौलेज कम रहै तहूमे सीमित पढ़ाइ होइ, आ ओहू सीमितमे किताबीए शिक्षा धरि समटा जाए तखन विकास केना हएत? जरूरत अछि कृषि शिक्षाकेँ खुला विश्वविद्यालय बना सभ स्तरक किसान पैदा करैक। जँ से नहि तँ की मन संग कर्म आ वचन समतुल्य भऽ सकत? आकि पुरना लोक नवका कम्पनीक अंगुरक रस पीब बेसी भँसिया कहलैन?

ओझराएल बाट देख-देखि राधामोहनक मन आरो ओझरा

गेल। हृदए सुखए लगलै, मन तरसए लगलै, बकार बन्न हुअ लगलै। मुदा की हमहीं सभ ऐ देशक भविस छिऐ, जेकर अपने ठेकान नइ छइ! कहब असान छै जे नवयुवककेँ भरमबैले कहल जाइ छै मुदा केहेन युवक पैदा भऽ रहल अछि? लगले उड़ि हंस बनि जाएब आ लगले मोड़नीक चालि धऽ लेब आ लगले गाछपर बैस उल्लू जकाँ मुँह दुसए लगबै। जहिना बेर-विपैत पड़लापर संगी संग छोड़ि दइ छै तहिना राधामोहनक मनक सभ संगी संग छोड़ए लगलै। मुदा ओहनेठाम सत-संगो भेटै छइ। जहिना नीन निपत्ता तहिना बुधियो बिला जाइ छइ। जइसँ ने देहमे सक रहै छै आ ने अक चलै छइ। जँ अके नै चलतै तँ बक केना चलत आ जँ बके नै चलत तँ बत्तक जकाँ माटि-पानि एके केना बुझब! ..अधमड़ू अवस्थामे राधामोहन रेडियो खोललक। बिहारक पहिल समाचार- “सातम दिन पूसा मेला आरम्भ हएत!”

सुनिते राधामोहनक ठेहियाएल मन उबियाएल। सातम दिन कृषि मेला छी। जरूर जाएब। दूरे कोन अछि। पहिलका जिले तँ छी। असकरो जा सकै छी, नहि जँ संगबे भेट गेल तँ आरो नीक। ओना, जे मनमे अछि- ‘गाए पोसब’ ओहन मन केकरो कहाँ देखै छिऐ। जखन मने नहि तखन काजे की आ संगबे केतए। तँए संगियोक कोन आश। ओना, चौक-चौराहापर चर्च कऽ देबइ।

सवारीक सुविधा भइये गेल अछि तहूमे डेढ़ बजे मेलाक उद्घाटन हएत, भिनसुरको बस पकड़ने काज चैलिए जाएत। तीन दिनक मेला छी तीनू दिन रहब। गरमी मास छिहे, खाइ-पीबैक दोकान-दौरी हेबे करतै...।

दृढ़ता अबिते राधामोहन संयोगकेँ नीक बुझलक। मनमे एलै- संयोग कोनो कि अपने अबै छै आकि काज अनै छइ। जँ काजे नइ तँ संयोग कथीक?

जहिना कोनो अबोध बच्चा आमक लालचमे निसभेर अनहरियो रातिमे माए-बाप लगसँ उठि ठेकल आमक गाछ लग पहुँच जाइत तहिना राधामोहन बस पकैड़ पूसा कृषि मेला विदा भेल। मेला तँ मेले छी। मुदा मेला की? वएह ने जे विदेशी खेल-तमाशा आ ललिचगर वस्तु आनि-आनि लोक अपन जे पुरना मेला छल ओकरा नष्ट कऽ रहल अछि। सुधार जरूरी अछि मुदा अपनकेँ सोल्हन्नी दुसि अनकर अपना लेब की नेनमति नै भेल? कोनो वस्तुक संग परिवार जुटल छै, ओकर जीविका छिऐ, ओइ जीविकाकेँ तोड़ैसँ पहिने ओहन जीविका अनिवार्य होइत जे समैयक संग चलि सकए। बिनु हाथ-पएरक जोंक-ठेंगी जहिना दोसर गर पकैड़ आगू बढ़ैए तहिना जैठामक किसानी जिनगीक हाथ-पएर टुटल अछि तैठाम उपाय केहेन होइ?

उद्घाटनक समय जहिना दिल्लीसँ गाम धरिक लोक तहिना रंग-रंगक रेडियो-अखबारबला दन-दन करैत। मुदा सिपाही कम। तहूमे बेसी ओहने जे उद्घाटनक पछाइत चैलिए गेल। क्षेत्रीयता जँ केतौ अधला होइ छै तँ केतौ नीको छै, जरूरत अछि क्षेत्रीय कृषि ज्ञानक। मिथिलांचलक अन्हरो-दिठरा बुझैए जे छहटा ऋृतु होइ छै आ छबो रीतुक छह सीमा होइ छै आ सीमापर किछु दिन मेला लगै छइ। ओइ मेलाकेँ वएह सजा पौत जे ओइ तेजीसँ चलत। एके अन्न एके फल आ एके तरकारी किछु कमो दिनक होइत तँ किछु बेसियो दिनक। हमर स्थिति की अछि ओकरा पकड़ब अछि। जे आन-आन राज्यक स्थितिसँ भिन्न अछि। किताबी दौड़मे देशकेँ जानब असान अछि मुदा भोगोलिक दौड़मे कठिन अछि। भलेँ कठिन अछि मुदा जीवन-दाता तँ वएह छी, छोड़ि केना जीब?

उद्घाटन भाषण सुनि राधामोहनक मन शीशा जकाँ चमैक गेल। पाथर गिरल काच जकाँ चनचना कऽ चनैक गेल। दुनियासँ लऽ

कऽ बलुआहा माटि धरिक बात सुनलक। दोखड़ो बालु सोना पैदा करैए से तँ राधामोहन पहिल दिन सुनलक। ओना, पहिनौं सुनने रहए जे बालुसँ तेल भले निकैल जाउ मुदा बातसँ हटि नै सकै छी। मुदा ओकरा कहबीए बुझै छल।

निअमित तौरपर ग्रुप-ग्रुपमे बँटि कार्यक्रम शुरू भेल। एक संग अनेको ग्रुप। केतौ अन्नक खेतीक तँ केतौ तरकारीक, केतौ फूलक तँ केतौ फलक, तहिना केतौ पशुपालनक तँ केतौ मुर्गी पालनक।

..जहिना मेलामे प्रेमिकार्कें देखि आरो मेलाक चुहचुही बढ़ि जाइत तहिना राधामोहनकेँ सेहो चुहचुही भरल मेला बुझि पड़ल। मनमे एलै- बीचक जे अदहा घन्टा समय खाली अछि तइमे खा-पी लेब नीक रहत, चारि घन्टाक गोष्ठी अछि।

पशुपालन गोष्ठीमे राधामोहन बैसल। तीन शिक्षकक बीच गोष्ठी संचालित भेल। मुदा राधामोहनकेँ बैसारक गप-सप्पसँ बुझि पड़ए लगलै जे भरिसक अपना इलाकाक असकरे छी। किएक तँ मनुक्खक पहिल परिचए भाषे कहबै छइ। बेगूसराय आ बकसरिया बेसी बुझि पड़लै। मुदा असकरोमे असगर नै बुझि पड़इ। कहनिहार शिक्षक छैथे, सुननिहार जहिना सभ तहिना हमहूँ रहब...।

तीनू शिक्षक पशुपालन-ले पशुक देख-रेख, बेमारीक इलाज आ नश्लक चर्च केलैन। चारि घन्टाक गोष्ठीमे तीन-चौथाइ समय निकैल गेल। शेष समयमे ओ सभ समस्या सुनैक समय देलखिन। एका-एकी समस्यापर चर्च हुअ लगल। मुदा अनकर भोज, सुननहि की जे नअ सलिया अँचार छल...।

राधामोहनक मनमे प्रश्न उठए लगल। गुलछिया जकाँ घौंदे-घौंदा। मुदा बाल मन राधामोहनक थकथका गेल। हिन्दीमे सबाल जवाब चलै छल। भाषाक गलती वस्तुक (विषयक) गलती बना दैत अछि। अष्टम सूचीमे मैथिली रहितो मिथिलांचलक कोट-कचहरीसँ

लऽ कऽ स्कूल-कौलेजमे हिन्दीए चलैए। अपन धिया-पुताकेँ अंगरेजिया बनाएब अगुआएल जिनगीक लक्षण बुझल जा रहल अछि। जरूरत अछि जगत-जीव-ईश्वरकेँ जानब।

..राधामोहन अपन मनक बात मनेमे रखि लेलक। संयोग भेल। तीनू शिक्षक अन्तिम पाँच मिनटमे के केतएसँ आएल छी, पुछलखिन। क्षेत्र सुनि राधामोहनकेँ हूबा भेल। अपन देश अपन भेष अपन भाषा तँ संगी अछिए। ओ अपन परिचए मधुबनी जिलाक नाओंसँ देलक।

..पड़ोसी गामक एकटा शिक्षक। ओ मैथिलीएमे राधामोहनकेँ पुछलखिन- “अहाँक गाम?”

गामक नाओं सुनिते ओ कहलखिन- “अहाँक पड़ोसी छी तँए तीनू दिन अपने डेरापर रहब।”

डेराक नाओं सुनि दोसर शिक्षक हुनका आँखि-पर-आँखि देलकैन। आँखिए-क इशारामे जवाब देलखिन- “मिथिलाक धर्म।”

सांस्कृतिक कार्यक्रम होइसँ पहिने धरिक ड्यूटीमे पी.एन. बाबू छला। ओना, गोष्ठीक तीनू शिक्षकक डेरा सटले-सटल सेहो छैन्हे। तीनूक एकठाम डेरा रहने साँझ-भोर एकठाम बैस चाहो पीबै छैथ आ अपन-अपन देश-कोसक गपो-सप्पो करै छैथ। बीचक एक घन्टा समय बितबैक क्रममे पी.एन. बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

“राधामोहन, अहूँ मेला देखए एलौं, घुमि-फिर देखि लियौ आ हमहूँ ड्यूटी समाप्त कऽ लेब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि राधामोहन मेला दिस बढ़ल आ पी.एन. बाबू ऑफिस दिस बढ़ला। ऑफिस पहुँचते अपना ग्रुपक चर्च उठल। गोष्ठीक नीक कार्यक्रम रहल।

बैगकेँ ऑफिसमे रखने राधामोहनक देहो हल्लुक भेल। आगू बढ़िते लोक दिस ठिकिया कऽ तकलक तँ बुझि पड़लै जे ओहने लोक बेसी छैथ जे बम्बैया कलाकार जकाँ जेहने 'जोकर' तेहने 'हीरो' जकाँ छैथ। नारद भगवान जकाँ जेतए स्मरण करब तेतइ वीणाक संग पहुँचल पेबैन। कचहरीसँ लऽ कऽ गामक भोज-काजक वारीकसँ नेने-नेने दशनामा काज होइत सरकारी भण्डार लग पहुँचलाहाक बाहुल्य! किसान कम। खास कऽ मेहनत करैबला। मुदा, ऐठामक जे कृषिक प्रतिष्ठा बनल रहल ओ तँ रग-रगमे पकड़नहि, जइसँ किसान परिवार आ किसानक ठेकान अमेरिको-इंग्लैंडमे दैते छैथ। तँए समैयक भूख अछि जे किसानक परिभाषा आधुनिक कएल जाए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू भेल। राधामोहनकेँ संग केने पी.एन. बाबू डेरा दिस बढ़ैक विचार केलैन। ओना, विश्वविद्यालये कैम्पसमे डेरा। तैसंग पान-सात कट्ठाक बाड़ियो झाड़ी छैन।

पी.एन. बाबूक घर मधुबनी जिलाक भगवानपुर गाम, सुरेन्द्र बाबूक घर धर्मपुर नवादा जिला आ दीनानाथ बाबूक बक्सर जिला। तीनूक तीन भषे क्षेत्र नहि भौगौलिक क्षेत्र सेहो। एग्रीकल्चरसँ जुड़ल तीनू गोरे तँए तीनू क्षेत्रक जानकारी तीनू गोरेकेँ रहबे करैन। ओना, भाषाक बीच कोनो विवाद नै रहैन, कारणो स्पष्टे अछि। गाम-गामक आ घर-घरक लीला अछि जे मैथिली भाषीकेँ मगहियो आ भोजपुरियो क्षेत्रमे कथा-कुटुमैती होइत आबि रहल अछि। कोनो घरक पुरुष मैथिल तँ भोजपुरनी घरवाली आ भोजपुरिया घरबलाक मगहिनी घरवाली। ओना, शब्दक कर्कशपन मगहीक अपेक्षा मैथिली-भोजपुरीमे कम अछि।

कम जवाबदेही रहने पी.एन. बाबू समैपर ऑफिससँ निकैल डेरा दिस बढ़ैक विचार केलैन। मुदा सुरेन्द्र बाबू जवाबदेहीमे आ

दीनानाथ बाबू रिपोट दइमे पछुआएले रहि गेला। दिनक एक गाड़ी विलम भेने दिन भरिक गाड़ी बिलैमते चलत। मुदा तैयो पी.एन. बाबू दुनू गोरेकेँ कहि देलखिन-

“गौंआँ आएल छैथ। किछु हाल-चालक समाचार तँ आबिए गेल हएत। लेटो-फेट एकठाम बैस चाह पीबे करब।”

आगू बढ़िते जेना पी.एन. बाबू राधामोहनक गौंआँ भऽ गेलखिन। पुछलखिन-

“राधामोहन, अहाँ गामक पजरेमे सुखेत अछि, ओत्तै हमर सासुर छी।”

गाम सासुर सुनि राधामोहनक मनमे घनिष्ठता जगल। एकबधू गाम, एक उपजा एक खान-पान...। उगैत उगना जकाँ विभोर होइत राधामोहन बाजल-

“श्रीमान्, अपने लोकैन तँ सभ तरहेँ पैघ भेलिऐ, अपनहि सबहक ने बाँहि पकैड़ आगू बढ़ब।”

राधामोहनक बात समाप्तो ने भेल छल, बिच्चेमे पी.एन. बाबू टपकला-

“जहिना अहाँ अखन नवतुरिया छी तहिना जखन हमहूँ रही तही दिनसँ जनै छी जे एक-दोसराक बाँहि पकैड़ गरा-जोड़ी कऽ जीवन-यात्रा करब नीक होइ छइ। मुदा से नै भऽ पबैए। दिन-राति देखै छी जे ठक ठकि बाँहि पकैड़ धकेल-धकेल गरगोटिया दइए, तैठाम केकरो बाँहि पकैड़ लेब छौड़ा-छौड़ीक खेल नै ने छी।”

पी.एन. बाबूक विचारक गम्भीरताकेँ राधामोहन नै परेख सकल मुदा मनमे तँ ओहन खुशी जागिए गेल रहै जे भरि पेट भोजन, राति-बीच रहैक जगह देलैन ओ जरूर नीक बोलो देबे करता।

साढ़े सात बजे तीनू गोरे–पी.एन. बाबू, सुरेन्द्र बाबू आ दीनानाथ बाबू–एकठाम भेला। डेराक छतेपर बैसार। एक दिस सांस्कृतिक कार्यक्रमक पीह-पाह तँ दोसर दिस गाम-घरक कुशल-समाचार। चाह चलिते पी.एन. बाबूक पत्नी सेहो चाह पीब बैसारमे शामिल भऽ गेली। ओना, जइ दिन दीनानाथ बाबूक मुहेँ मिरचाइकेँ तीत सुनलैन तइ दिनसँ जेना हिनका देखिते वएह मोन पड़ि जाइ छैन जइसँ अनेरे हँसी निकैल जाइ छैन।

चाह पीब दीनानाथ बाबू बजला-

“सभसँ कम उपस्थिति मिथिलांचलेक रहल?”

स्वीकारैत पी.एन. बाबू बजला-

“हँ, से तँ छल। अपन तीनू गोरेक क्षेत्र तीन रंगक अछि। माटिक (क्षेत्रक) असथिरता जइ रूपेँ अहाँ दुनू गोरेक क्षेत्रक अछि ओइसँ भिन्न मिथिलांचलक अछि। एक तँ माटि नरम छै तैबीच तेज धारक कटावक संग जोरगर बर्खाक संग भुमकमो क्षेत्रकेँ नष्ट करैत रहल अछि।”

पी.एन. बाबूक जवाबक पछाइत चुपा-चुपी पसैर गेल। अका-अकी, बका-बकी सभ सबहक मुँह देखए लगला। खढ़िया बच्चा जकाँ राधामोहन आँखि-कान-मुँह ठाढ़ केने, जे सीखैक समय भेटल किछु सीखब। ..पी.एन. बाबू गुम जे अपन इलाकाक उखाही करब उचित नहि, तँए चुपे रहब नीक। मुदा दीनानाथ बाबू जेहने काज करैमे चरफर तेहने बजैयौमे फरकोर। मनमे उठलैन जखन पी.एन. बाबूक गौंआँ एलैन, ओना, हुनका अपनो गाम छोड़ना पचीस बर्खसँ बेसीए भेल हेतैन, तखन वएह ने अपन बात उठौता। तैबीच हम सभ अपन क्षेत्रक गप करी ई बुड़िपना हएत। बुड़िपना ऐ लेल जे तीनू शिक्षकक बीच एकटा दूधमुहाँ बच्चाक चाराक ओरियान नै कऽ अपने सभ सभ-दिना गप जे ऐ स्कीममे एते सुतरल...। पूर्णिमा

दिनक नौत दइ छी...। नइ तँ सासुरक अमराक अँचारक गप करब। नै तहूसँ तँ मिरचाइकेँ तीत कहि गृहिणीसँ मुँह दुसा लेब उचित नहि। ..सभ किछु सम्हारैत दीनानाथ बाबू बजला-

“भाय, गोष्ठीमे जे आँखिक इशारा केलौं से अपन अनुभवक अधारपर, तँए एकरा अपना ढंगसँ नै लेबइ।”

पी.एन. बाबू पुछलखिन- “की अपना ढंगसँ?”

दीनानाथ बाबू-

“हमरो पत्नी ओमहुरके छैथ। तेते पूजा-पाठ आगत-भागत करै छैथ जे घरक जुतिए सुमझा देलिऐन। हाटे-बजारक दौर-बरहा तेते करैबै छेली जे कमेलहो कि खा कऽ पचए दैथ। तइसँ नीक जेते कमाइ छी, पॉकेट खर्च काटि कऽ दऽ दइ छिऐन। आ कहि देने छिऐन जे तैबीच कर्जा केलौं तँ अपन जानी, नइ जँ महाजनी केलौं सेहो अपने जानी।”

मुस्की दैत बिच्चेमे पी.एन. बाबू टिपलैन- “तखन तँ सोल्होअना हिसाब घरसँ बेरा नेने छी?”

दीनानाथ बाबू-“नै ने बेराएल होइए, हुनका लाटक जे कियो अबै छैथ ओ तँ सासुरेक पट्टी भेला किने, किछु-ने-किछु बजा जाइते अछि। जइसँ घुमा-फिरा कऽ दोखी भइये जाइ छी। से सभ छोड़ि कऽ।”

पी.एन. बाबू गम्भीरतासँ प्रश्न दोहरौलैन। प्रश्नक गम्भीरताकेँ देखैत दीनानाथ बाबू बजला-

“देखियौ भाय साहैब, अपनो विचार ओहने अछि जेहने पत्नीक छैन तँए अभ्यागती परिवारमे बेसी बढ़ि गेल। मुदा आइक समयमे जे बिगड़ाउ आबि गेल अछि ओ तँ सोझहा-सोझही सामनेमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। नव पीढ़ीक बोलमे केते झूठ फेँटा गेल अछि जे

सत बुझब कठिन भऽ गेल अछि। जेना-जेना अभ्यागती बढ़ैत गेल तेना-तेना घरक वस्तु बिड़हाइत गेल, तँए इशारा केलौं।”

दीनानाथ बाबूक उत्तरक पछाइत फेर सबहक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। सुरेन्द्र बाबू ऐ-ताकमे रहैथ जे अपन प्रवास लगसँ पी.एन. बाबू प्रश्न उठौता भलेँ राधामोहनक जनमसँ पहिनहि गाम छोड़ि देने होथि, मुदा जएह सएह।

..पी.एन. बाबूक मनमे उठि गेलैन जे सोझहा-सोझही तीन क्षेत्रक तीनू गोरे छी तँए हुनका सभकेँ प्रश्न उठेबाक चाहिऐन जइमे हम बीचक कड़ीक काज करब...।

दीनानाथ बाबू गर लगबैत राधामोहनकेँ पुछि देलखिन-

“भरि मेला रहब किने?”

आग्रह देखि राधामोहनक विचारक बान्ह टुटिते भुभुआ गेल-

“श्रीमानक सासुर आ हमर गाम एक्केठाम अछि। एकबधूए छी। हिनकर ससुर सबहक पुबरिया बाध हमरा गामक पछबरिया बाध छी।”

ई गप सुनिते बगलमे बैसल सुरेखाक हृदैमे अपन नैहरक दुर्गापूजा देखब मोन पड़ि गेलैन। केना संगी सबहक हेँजमे चारिए बजे दिआरी लऽ कऽ साँझ दइले जाइ छेलौं से दोसर-तेसर साँझमे घुमि कऽ अबै छेलौं। सतमी-सँ-दसमी धरि तँ ठेकाने ने रहै छल जे कखन अँगनामे छी आ कखन दूर्गा-स्थानमे। मुदा अखन किछु जँ बाजब तँ बाते अबला-दबला भऽ जाएत। से नइ तँ निचेनमे जखन गर लगत तखन गप करब। कियो कि आन छी नैहरक भाए-बोन छी। हमरा सबहक कि ओ युग-जमाना छल जे नैहरेसँ यार भँजिएने सासुर अबै छेलौं। समाजक कियो छी भाए-बोन छी...।

दीनानाथ बाबू प्रश्न दोहरबैत बजला- “पुबरिया या पछबरिया

बाध कथी कहलिऐ?"

राधामोहन- "एक रंग खेत रहने, माने माटिक सतह एक रंग रहने एके रंगक उपजो-बाड़ी होइ छै आ रौदियो-दाही। ओही बाधमे पनरह कट्ठा खेत अपनो अछि। अपने खेतक बगलमे आन सभ घासोक खेती करै छैथ, तँए विचार भेल जे पूसा मेला जाइ छी, जहाँ धरि जे हएत बुझि-सुझि आगू करब।"

उत्तरक आशामे राधामोहन चुप भऽ गेल। मुदा तीनू गोरे– पी.एन. बाबू, सुरेन्द्र बाबू आ दीनानाथ बाबू-क बीच प्रश्नक गड़ उनटा-सुनटा पकड़ा गेलैन। एक दिस देशक स्थितिक चर्च उठल तँ दोसर दिस गामक आ तेसर दिस एक-एक किसान परिवारक। प्रश्ने-प्रश्न उत्तरे-उत्तर गँरि-मुड़िया हुअ लगल। गपे-सपक क्रममे एहेन गँरि-मुड़िया भऽ गेल जे तीनू गोरे अपने उबाइन हुअ लगला। मुहसँ बोल निकैलते जहाँ नजैर उठबैथ आकि अपने हीआ हारि दैन जे ओ गड़बड़ भऽ गेल।

..एकाएकी तीनू गोरेक मुँह बिधुआ लगलैन। बैसारक रसे समाप्त भऽ गेल। दोहरा कऽ चाहो पीब उचित नहि, हमरे सबहक दुआरे भरिसक घरवारिनी भानसो करए नै जाइ छैथ, तहूमे भरि दिनक ठाढ़ ड्यूटी केनिहार सेहो छथिन। तइसँ नीक जे बैसारे तोड़ि देल जाए। मुदा तीनू गोरेक बीचक कटौझ तँ राधामोहनो सुनलक। ओइ वेचाराक मनमे की उठतै? खाएर.., बाढ़िक टुटल बाट होइ आकि टाट लगौल रस्ता, टपब तँ कठिन अछिए।

सुरेन्द्र बाबू आ पी.एन. बाबूक अपेक्षा दीनानाथ बाबूक चपचपी कम रहैन। मन गवाही दैन जे कहुना भेला तँ दुनू गोरे सुरेन्द्रो बाबू आ पी.एन. बाबू सेहो सीनियरे भेला किने। गलती तँ सभसँ होइ छइ। हमरोसँ भेल हएत जे अपने प्रश्नक जवाबमे अपने ओझरा गेलौं। मुदा किछु बाजबो तँ घापर नुने छीटब हएत किने। एक तँ

ओहिना दुनू गोरेक मन रब-रबाइत हेतैन तैपर किछु बाजि आरो भक-भका दिऐन से नीक नहि। ..मुदा बगलमे बैसल मैथिलानी सुरेखा तीनू गोरेक दशा देखि बीचमे गंगाजल छीटब उचित बुझि, दिओरक लेहाजसँ गरगोटियबैत दीनानाथकेँ कहलखिन-

“मेहनत करि कऽ पढ़ने छी आकि रुपैआ-पैसा दऽ कऽ?”

दिओर-भौजक गप-सप्पक क्रममे दीनानाथ बजला- “पाइ-कौड़ी तँ खर्चा नै केने छी मुदा दहेजक बदला ससुरसँ नीक रिजल्ट आ नोकरी जरूर लेने छी।”

दीनानाथक उत्तर सुनि सुरेखा बजली-

“अखन बैसार तोड़ू भरि दिन खटलौं हेन, फेर काल्हि सेहो औझुके जकाँ खटए पड़त। तँए सबेर-सकाल ओछाइनपर चलि जाएब नीक रहत।”

‘एक तँ राकश दोसर नौतल’ हरे-हरे कऽ तीनू गोरे मानि गेला।

सुरेखा भानस करए बढ़ली। राधामोहन आ पी.एन. बाबू छतपर सँ निच्चाँ उतैर कोठरीमे बैस गप-सप्प करए लगला। राधामोहन बाजल-

“श्रीमान्, केते दिनसँ ऐठाम छिऐ?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि पी.एन. बाबू विस्मित हुअ लगला। मोन पड़लैन नोकरीक पहिल दिन, कौलेजक पढ़ाइ, हाइ-स्कूलक पढ़ाइ, पालन-पोसन इत्यादि। सिनेमाक रील जकाँ जिनगी पाछू मुहेँ ससरलैन। ओही जिनगीक फल ने अखन धरि भोगि रहल छी। मुदा..? जे गाम-समाज हमरा सन मनुक्ख बना ठाढ़ केलक ओकरा-ले हम की केलिऐ? प्रतिष्ठित किसान परिवारक बेटा रहितो कि ओइ प्रतिष्ठाक हकदार बनि पौलिऐ? ..भक खुजलैन। मनमे एलैन समस्या तँ अहिना सभठाम ओझराएल अछि मुदा गामसँ आएल नवतुरिया

बच्चाकेँ जँ आबो संगतुरिया नै बनाएब तँ सेवा-निवृत्तिक पछाइत केतए जाएब! मनमे अबिते पी.एन. बाबूक मुँहमे मुस्की एलैन। जेना अनवरत चलैत साँसक जगह जोरसँ साँस लेला पछाइत नाभी तक गतिमान भऽ जाइत तहिना पी.एन. बाबूकेँ भेलैन। बजला-

"राधामोहन, साल भरिक पछाइत सेवा-निवृत्त भऽ रहल छी, गामेमे रहब। अखनो गाममे एते खेत-पथार अछि जे जँ ओकरा सरिया कऽ करी तँ नोकरीसँ बेसी हएत। मुदा की करितौं। गाम-समाजक कटू-चालि बोल सुनि पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ गाम छोड़ैक अनेको कारणमे एकटा कारण ईहो अछि जे जँ कियो एग्रीकल्चर ग्रेजुएट खेतक गोला फोड़ि तरकारी खेती करैथ तँ समाजक लोक किचाड़ि कऽ समाजसँ भगा देतैन। कियो कोइर तँ कियो कुजरा कहए लगतैन। भलेँ ओ बेरोजगारीक सूचीमे नाओं लिखा दिल्लीमे कुल्लीए-कबाड़ीक काज किए ने करैथ।"

पी.एन. बाबूक विचार सुनि राधामोहन मुड़ी डोलबैत किछु मानबो करैत आ किछु नहियोँ मानैत। मुदा मुँह बन्न केने रहने पी.एन. बाबू नै परेख पौलैन जे मनसँ केते मानलक। तैबीच सुरेखा आबि कहलकैन-

"अपने सभ ने रातिकेँ रोटी खाइ छी मुदा पर-पाहुनकेँ खुआएब नीक हएत। मन असकताइए तँए अपनो दुनू गोरे भाते खा लेब।"

भातक नाओं सुनि पी.एन. बाबूक मनमे खौंझ उठलैन जे एक तँ भरि दिन एमहर-ओमहर करैमे देह-हाथ बथा गेल तैपर भात खुआ भरि राति उठ-बैठ करौती! मुदा तेसर लग बाजबो केहेन हएत तँए पाशा बदलैत बजला- "अहाँ जे एहेन छी से सबेरे किए ने कहलौं जे चाहे माछे लऽ अनितौं कि अण्डे।"

बीचमे राधामोहन बाजल-

“खाइले अनेरे रक्का-टोकी करै छी, जे सभ दिन परिवारमे चलैए सएह हमहूँ खाएब। अखन जुआन-जहान छी अखन नै सभ चीज पचाएब तँ कहिया पचाएब।”

सह पाबि अपन गोटी घुसकबैत सुरेखा आगू बढ़ली।

गैस-चुल्हिक भानस, गप-सप्प ओराएलो नै छल की तैयार भऽ गेल। खेनाइ तैयार होइते कोठरीमे लगल गोल मेजपर सभ वस्तु रखि पतिकेँ सुरेखा कहलखिन-

“चलू, पहिने भोजन कऽ लिअ।”

एके टेबुलपर तीनू गोरे बैस खेनाइ खाए लगला। राधामोहनकेँ नव बेवहार बुझि पड़ल। किछु बाजब उचित नै बुझि चुप्पे रहल मुदा ओंघराइत मनमे उपकलै जे आरो जे हौउ मुदा सोझहामे खेने तँ लूँगी मिरचाइ आ अँचारक उपद्रव तँ कमिते अछि। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे सोझहा-सोझही सबहक खाएब नपाइते अछि। वएह नाप ने काजो नापत आकि खाइले दालि-भात आ..?

प्रात भने आठ बजिते पी.एन. बाबूकेँ कार्यक्रमक तैयारी-ले विदा होइसँ पहिने मनमे उठलैन जे अखन अनेरे राधामोहनकेँ किए संग नेने जाएब। बारह बजेसँ कार्यक्रम शुरू हएत। ..डेरासँ निकलैत राधामोहनकेँ कहलखिन-

“राधामोहन, अखन अहाँ नै जाउ। बारह बजेसँ गोष्ठी चलत, तइमे शामिल हएब।”

परिवारक भीतर ने खाढ़ी हिसाबसँ भाए-बहिन, बाप-पित्ती, दादा-दादी, नाना-नानी बँटल अछि मुदा समाज थोड़े परिवारक विचारकेँ ऊपर मानत ओ तँ वहए मानत जे समाजक कल्याणार्थ होइ। ओ तँ उमेरे हिसाबसँ ने मानत। केश-दाढ़ी पाकल दादा-बाबाक

श्रेणीमे एलौं समरथ-सकरथ रहने बाप-पित्तीक श्रेणीमे एलौं, एक उमरिया रहने भाए-बहिन, संगी, बहिना, मीत-यार, भजार इत्यादिक श्रेणी अबैत तइसँ निच्चाँ बौआ-दैया अबैत। ..पचास-पचपन बर्खक सुरेखा आ पनरह-सोलह बर्खक राधामोहन। तहूमे राधामोहनसँ दोवर उमेरक बाल-बच्चा सेहो छैन्हे। ओना, राधामोहनकेँ अपने संग जलखै करा पी.एन. बाबू संतुष्ट भऽ गेल छला जे नहियोँ रहने पाहुन भूखल नहियेँ रहत। अराम करैक बेवस्था छैहे जे नीक लगतै से करत।

सुरेखाक बात सुनि राधामोहन बाजल- “खेत-पथार केकरो जिम्मामे नै देने छिऐ?”

“देने किए ने रहब। मुदा एतबो तँ ओही वेचाराकेँ कहिऐ जे कहियो काल जे अबैए तँ गोटे किलो महींसक घीए नेने आएल, गोटे मटकूर दहीए नेने आएल...।”

सुरेखाकेँ भँसियाइत देखि राधामोहन बाजल-

“अहाँ गामसँ हमर गाम बहुत पछुआ गेल।”

“की पछुआ गेल अछि?”

राधामोहन-

“हमर गौंआँ तँ तेहेन रगड़ाउ-झगड़ाउ भऽ गेल अछि जे सदिखन झगड़े-झाँटी करैत रहल आ उपजाक कोन गप जे खेतो-पथार बेच कोट-कचहरीकेँ दैत रहल। मुदा एकटा धरि भेल अछि जे जइ जहलकेँ आन समाजक लोक पाप बुझैए ओइ व्याकरणकेँ उनटा, धरम बना देलक। जे एको बेर जहल नै गेल ओ अधरमी ऐ दुआरे बुझल जाइत जे धर्म प्राप्त करैक एको सीढ़ी ऊपर नै उठल अछि।”

राधामोहनक बात सुनि सुरेखाक नजैर राधामोहनकेँ

संगतुरिया जकाँ नजरए लगलैन। सतरह बर्खक अवस्थामे बिआह भेल रहए, तइसँ पहिने तँ राधामोहने जकाँ ने बाप-माइक बीच हमहूँ छेलौं। उमेरोक तँ किछु गुण-धर्म छइ। जँ से नै छै तँ किए मेलामे एक उमेरिये लोक बेसी रहैए...।

विस्मित होइत सुरेखा बजली- "बौआ, एक दिनक घटना ओहिना मोन अछि।"

घटना सुनि राधामोहनक जिज्ञासा जगल। मुँह बाबि बाजल-

"से की?"

सुरेखा- "तोरा गाममे दुर्गापूजा तहियो होइ छेलह, अखनो होइते छह। झगड़ाउ तोहर गौंआँ सभ दिनेक। दुर्गापूजाक मेला एतए हुअए कि ओतए हुअए, अहीले झगड़ा भऽ गेल। कोनो गाममे एकोठाम पूजा नै होइ छै मगर तोरा गाममे दूठाम शुरूहेसँ पूजा होइ छइ। एकबधू हमर गाम, जहिना पंचायतक गाम सबहक दूरी होइ छै तइसँ लगे हमर गाम अछि। एक्को मिसिया ने बुझि पड़ए जे दू गाम छी, दोसर छी, अपन गाम नइ छी। खेतो-पथारमे ऐ गामक लोक ओइ गाम आ ओइ गामक लोक ऐ गाममे काज करिते अछि। जबार, सौजनियाँ, मैनजनी, इत्यादि भोजो-भातक सम्बन्ध अछिए।"

सुरेखाकेँ भँसियाइत देखि राधामोहन बाजल-

"किदैन घटना कहए लगलिऐ?"

जहिना धक-दे आगि फुटै छै, हवा-विहाड़ि उठै छै तहिना सुरेखाक मनमे उठल। बजली-

"बौआ, भरिसक निशाँ पूजाक दिन रहइ। नाच-तमाशा शुरू होइते रहै आकि धुक-दे पच्छिमसँ विहाड़ि उठलै। पानि-पाथर सेहो संगे एलै। मेलामे हूड़ भऽ गेल। जह-पटार लोक जेमहर-तेमहर पड़ाएल। अपना गामक तीन गोरे रही। गामे दिस पड़ेलौं, मुदा दसो

डेग आगू नै बढ़लौं आकि पाथर तड़-तड़ा गेल। भेल जे जान नै बँचत, कपार फुटि जाएत, तेहेन-तेहेन पाथर रहए। रस्ते कातक एक गोरेक मालक घर चलि गेलौं। हवा तेहेन तेज रहै जे बुझि पड़ै घरक चार उधिया देत! मुदा तीनू गोरे चारक बत्ती पकैड़ लटैक गेलौं। कहुना जान बँचल। ..किदैन बाजल छेलह जे अहाँक गाम नीक अछि?"

सुरेखाक प्रश्न सुनि राधामोहन ओहिना अक-बका गेल, जहिना कियो बजिते-बजिते बिसैर जाइत। ओना, दुनू गोरेक गप-सप्प जुगो पाछू घुसैक चलि गेल छल जे एकक भोगल दोसराक खिस्सा बनि चलि रहल छल मुदा प्रश्न-उत्तर ओकरा ससारि अनलक। पाछू उनैटते राधामोहनक मनमे सुरेखाक प्रश्न धब-दे खसल। बाजल-

"हँ, हँ, कहै छेलौं जे अहाँक गामक किसानी हमरा गामसँ अगुआ गेल अछि।"

अगुआ-पछुआ सुनि सुरेखा दोहरबैत पुछलखिन-

"एकठाम दुनू गोरेक गाम अछि, एकबधूए खेतो अछि, एक रंग उबजा-बाड़ी तखन किए एना भेल?"

सुरेखाक प्रश्न सुनि राधामोहन अपनाकेँ टटोलए लगल तँ बुझि पड़लै जे प्रश्नक उत्तर ढंगसँ नै दऽ पएब, मुदा आत्माराम कहलकै जे नै पान तँ पानक डन्टियो आकि गाछोक डन्टीसँ काज चलिते अछि। तखन जँ उत्तरक लगलो-भीड़ल जवाब भऽ सकत तैयो तँ किछु-ने-किछु तात्विक बात आबियो जाएत। पहिने तत्व तखन ने एकत्व आकि समत्व। ..बाजल-

"दीदी, अगुआएल-पछुआएल तँ खेनाइ-पीनाइ, ओढ़नाइ-पहिरनाइ आकि घरे-दुआर देखने ने बुझै छी।"

सुरेखो अपन मनकेँ, गोधूलि बेला जकाँ बहटारि राधामोहनक विचार लग ठाढ़ केलैन। जहिना गुरु-शिष्यक बीच एक-दोसराकेँ उकटा-पैंची होइत तहिना सुरेखा पुछलखिन-

“जखन दुनू गामक लोक खेतीए करै छैथ तखन किए भगवान दू रंग बना देलखिन?”

सुरेखाक प्रश्न राधामोहनकेँ ओहिना भरियाएल बुझि पड़ल जहिना युनिवर्सिटी वा बोर्ड परीक्षामे प्रथम स्थान पबैबला छात्र किछु प्रश्नसँ निरुत्तर होइत देखि अपनाकेँ अलग कऽ लइए, तँए कि ओकरा भुसकौल कहबै सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। हलैस कऽ हीय खोलि राधामोहन बाजल-

“दीदी, आन चीज तँ नजैरपर नै चढ़ैए मुदा एकटा चढ़ैए।”

नजैरपर चढ़ैबला बात सुनि सुरेखाकेँ मन कहलकैन नजैरपर चढ़ैबला बातकेँ जँ नजैर चढ़ा नै चढ़ाएब तँ ओ ढलानपर छिछैले जाएत। तँए एकत्व भऽ सुनए पड़त। बजली-

“बौआ, हमरा-तोरा बीच कोन लजेबा-धकेबाक बात अछि। हम जेठ बहिन माइए-दाखिल भेलियह, तूँ भाए-बोन बाप-दाखिल सीमा परहक सिपाहीए जकाँ जिनगीक भेलह। तखन किए धकमकाइ छह।”

सुरेखाक भाव देखि राधामोहन भवलोक पहुँच गेल, अथाह भवसागर देखि बाजल-

“दीदी, अहाँक गामक बेसी किसान एकाजू छैथ। खेती करै छैथ, गाए-महींस पोसै छैथ इत्यादि-इत्यादि मुदा हमरा गामक बेसी जोतदार दू-दिसिया काज करै छैथ। अनो-पानिक खेती करै छैथ आ सामाजिक बन्हनक बीच सेहो केते काज करै छथिन। बन्हने ने समाजकेँ बान्हि बेकतियोकेँ बन्हैए। अपना काजक समय समाजक

काजमे लगबै छैथ तइसँ खेतीक उचित देख-भाल नै कऽ पबै छैथ। जइसँ कम आमदनीक जिनगी बनि गेल छैन। मुदा अहाँ गामक किसानी बाट मजगूत बनि गेल अछि।"

राधामोहनक बात सुनि सुरेखाकेँ मामा मोन पड़लैन। मामा मोन पड़िते मोन पड़लैन बाड़ी-झाड़ी आ माए संग मामाकेँ भाए-बहिनक ओ रूप जे दुनू मिलि जिनगी-ले ठाढ़ छैथ। की मामा पाहुन नहि जे माइक बाड़ी-तामि-कोरि तीमन-तरकारीसँ फल-फलहरी धरिक गाछ-बिरीछ लगा दइत। राधामोहन कियो आन छी, जँ करजानमे केराक घौर पाकल हएत तँ चारि छीमी खुआइयो देबै आ दू हत्था गामो नेने जाइले कहबै। दू परानी केते खाएब, पचीस-पचीस-तीस-तीस हत्थाक केरा घौर अछि। जे तीने दिनमे दुरियो भऽ जाइए। बजली-

"बौआ, चलह। गाम जकाँ तँ बीघा-बीघे बाड़ी-झाड़ी आकि गाछी-बिरछी नहियेँ अछि मुदा जेतबे अछि से चलि कऽ देखहक जे अपना-जोकर दुनियाँ बनौने छी कि नहि।

बाड़ी-झाड़ीक नाओं सुनि राधामोहनक मन आरो चमकल। खोलियापर राखल हँसुआ हाथमे नेने सुरेखा आगू-आगू आ पाछू-पाछू राधामोहन डेरासँ निकैल बाड़ी पहुँचल। जहिना मकरमे हर्ड़ी-बिदेसरक मेला पहुँच यात्री फरिक्केसँ हिया कऽ देखैए जे केतए कोन तरहक रूप छै तहिना बाड़ीक टाट खुजिते राधामोहन हिया कऽ देखलक तँ अजीव दुनियाँ बुझि पड़लै।

पानिक नालीक बगलमे पाँच बीट केरा पाँच रंगक देखलक। गाछेमे एकटा पकलो। बीटक ऊपर जाल लगल। चिड़ैक कोनो डरे नहि जे चोरा कऽ खाएत। सुखल डपोरकेँ हासूसँ कटैत सुरेखा बजली- "बौआ, कहुना भेलह तँ तूँ पुरुखे पात्र भेलह किने ओरिया

कऽ ओइ घौरकेँ काटह।”

पाकल केरा घौर काटब सुनिते राधामोहन चपचपा गेल, कहुना तँ पहुनाइमे छिहे ने। उचित-उपकार दुनू। बाजल-

“दीदी, हँसुआ दिअ आ अहाँ हटि जाउ, केराक पानि बड़ खराब होइ छै, कपड़ामे एहेन दाग लगा दइ छै जे कपड़ा फटि जाएत मुदा छुटत नहि।”

राधामोहनक रक-छक विचार सुनि सुरेखा बजली-

“तखन फेर लोक ओइ दागकेँ छोड़बै केना छइ?”

जहिना परीक्षा भवनमे पहिलुक प्रश्नकेँ हल्लुक बुझिते ऐगलो बिसैर हाँइ-हाँइ परीक्षार्थी लिखए लगैत तहिना राधामोहन बाजल-

“दीदी, दुनियाँमे एहेन कोन दुख अछि जेकर दबाइ नइ छै, तखन तँ...।”

डोलैत घरमे जहिना घरवारी सोंगर लगा-लगा ठाढ़ रखए चाहैत तहिना सुरेखा अपन जिनगीक संग राधामोहनकेँ खुट्टा नै सोंगरे बनए चाहली। मुदा राधामोहनक चटपटाइत मुँह देखि बजली-

“हँ तँ किदैन कहै छेलह?”

ठेंठीकेँ ठेंठीए कोदारि भार थम्है छइ। बड़का मुरैछ जाइ छइ। तहिना ने केरो दागक दबाइ अछि। बाजल-

“दीदी, केहनो दाग किए ने होइ, मुदा दबाइयो संगे छइ।”

संगे दबाइ सुनि सुरेखा बजली-

“से की?”

“आन जीवित गाछमे ने दूध आकि लस्सा होइ छै, मुदा केरा तँ छी गाछक झड़, तँए एकरा एकरे सुखल डपोर जे छै, ओकरा आगिमे जरा कऽ ओही छाउरसँ रगड़लापर दाग छुटै छइ।”

केराक घौर काटि थम्हकेँ सेहो काटि-खोंटि कात कऽ देलक। हँसुआमे लगल पानि माटिपर रगैड़ साफ केलक। आगू बढ़िते कट्ठा भरिक फलक गाछो आ झाड़ियो देखलक। गमैया आम-जामुनक गाछ जकाँ तँ एकोटा फलक गाछ नहि, मुदा कामधेनु जकाँ सालो भरि फल दइबला सभ। आब कहू जे फड़ैक भार जेकरा नहियोँ छै तहू गाछ सभमे फड़ लटकल छइ! अनेरे मन घुरियाएल अछि। मुदा नहि, गाछोमे अनरनेवा पण्डित अछिए। फूल भलेँ हौउ, फड़ब पाप बुझिते अछि। मुदा तँए कि धात्रीम सन सावित्री थोड़े अछि जे बिनु सत्यवाने फड़बे ने करत। हँ से तँ ऐछे भलेँ टाट-फरक, आड़ि-धूर आकि घाट-बाट दुआरे माटिक बाट किए ने बन्न हौउ, मुदा अकासक बाट तँ खुजल छैहे तँए ने कहै छै जे हे प्रियतम देह भलेँ तीन कोस हटले किए ने होइ मुदा मन तँ दुनू गोरेक संग मिलि रचिते-बसिते अछि...।

समुचित भोजन-ले जहिना आन-आन वस्तुक महत अछि तहिना ने फलोक अछि। मुदा फलक दुर्दशा मनुक्खक जिनगीकेँ सुदशा दिस बढ़ए देत। जे मिथिलांचल कुकाठ-सुकाठक संग चानन सन वृक्ष पैदा करैक उर्वर शक्ति संयोगने अछि, की ओइ शक्तिकेँ पूजा केने बिना कल्याणक असिरवाद भेट जाएत? जँ मुखौटे होइतै तँ काँच माटिक एकटा दिआरी नेस, हाथ-जोड़ि निहोरा केलासँ भेटतै तँ अदौसँ होइत आएल आ मिथिलांचल निच्चे-मुहेँ धँसैत गेल। सालो भरि चलैबला फल जैठाम छै, तैठाम..?

खीराक लत्ती देखि राधामोहन बाजल-

“दीदी, खिरो-लत्ती बीचमे देखै छी?”

राधामोहनक जिज्ञासाकेँ सुरेखा परेख गेली। जहिना छोट-बच्चाकेँ माए-बाप-भाए-बहिन ओंगरीक इशारासँ कौआ-मेना देखा

ओकर नाओं सिखबैत तहिना सुरेखा राधामोहनकेँ सिखबैत बजली-

“बौआ, खीरो फले छी, फलेक गुण ओकरोमे छै, मुदा अपन पारिवारिक जिनगी तेहेन बना नेने अछि जे तीमन-तरकारी-सँ-फलाहार धरि पुरबैए।”

सुरेखाक बात राधामोहनकेँ छुछुन बुझि पड़लै। छुछुन ई जे माटिपर पसरल लत्ती आ लत्तीक फड़ केना फलाहार हेतइ। हँ एते तँ देखै छिऐ जे करेला-झिमनी-सजमैन जकाँ फड़ैए, सजमैनसँ भलेँ छोट हुअए मुदा करैला-झिमनीक तँ संग-तुरिया अछिए। खीराकेँ तरकारी मानल जा सकैए। तरकारीकेँ केना फल मानि लेब, फड़ तँ तरकारियो फड़ैए। ..मुदा लगले मन पलैट महकारी लग पहुँच गेलइ। ओकर तरक बीआ जेते तीत होइए ओते तँ करैलोक ने होइ छइ। कहाँ राजा भोज कहाँ भजुआ तेली। करैलाक गुद्दा-रस भलेँ तीत हौउ मुदा ओइसँ पालल-पोसल बीआ कहाँ तीत होइ छइ! दुनूमे अकास-पतालक अन्तर अछि। गोल-गोल, हरिअर-हरिअर, लाल-लाल फड़क बीच महकारीक बीआ खाइ-काल खेलहोकेँ बोकरा दइए, से केना करैलाक परतर करत। ऊँट जकाँ भलेँ देह उबर-खाबर हौउ, रसो आ गुद्दो तितौंस किए ने हौउ, गलि-पचि अपने किए ने सड़ि जाए मुदा ओहन बीआ तँ दैते अछि जे संगी-साथी जकाँ मनुक्खक भोज्य बनि चलैत आबि रहल अछि आ आगूओ चलैत रहत...।

खेलौना दोकानपर, रंग-रंगक खेलौना देखि जँ बच्चा गुमकी लाधि दिअए तँ किछु कारणक आशंका होइते छइ। स्वर्ग सदृश बाड़ी-झाड़ी रहितो राधामोहनकेँ अपन विचारक दुनियाँमे विचड़ैत देखि सुरेखाक मनमे भेलैन जे भरिसक रोड़ा-रोड़ीक ठेंस ने लगि गेलइ। बजली- “बौआ, की करब जेतबे छुट्टी रहत तेतबे-टा ने दुनियोँ बसाएब। इच्छा केकरा ने होइ छै जे इन्द्रासनक आसनपर

बैसी, मुदा इच्छे भेने थोड़े होइ छइ। अही सुखक लोभमे ने एकटा बौना आबि हरिश्चन्द्रकेँ राज-पाट ठकि लेलकैन। अखुनका वियतनाम राज थोड़े छी जे सालक-साल, दशकक-दशक रगड़ैत रहत। कहू जे जइ राजाकेँ एतबो दया नहि जे आमजनक राजकेँ अपना स्वार्थमे केना लगा देबइ।"

ओना, सुरेखा राधामोहनक मन बहटारए चाहली मुदा जिद्दयाह गाए-बरद जकाँ गाछक मुड़ीए-पर राधामोनक नजैर अँटकल। बाजल-

"दीदी, अहाँ तँ खीराकेँ फल कहै छिऐ, एते तक मनेमे शंका नै अछि जे फड़ नै होइ छै, मुदा फड़ तँ फड़ भेल आ आमोक गाछक फड़े भेल भलेँ कोशा धरिकेँ फड़े कहिऐ। जिनगीक नीक फल सभ चाहैए आकि नीक फड़ कदीमोसँ नहमर चाहैए?"

जहिना बाल मन वा जुही फूल आकि परोड़ इत्यादि कोनो नव गाछक सराइर सदृश सर-सरा कऽ आगू धरि बढ़ि जाइत तहिना राधामोहनक प्रश्न आगू बढ़ल, मुदा ओरिया कऽ मुड़ीकेँ मोड़ि सुरेखा बजली-

"बौआ, खीराक तरमे तीन फाँक होइ छै, मुदा होइ छै तीनू बरबैर। ऊपरका जे आवरण होइ छै ओ ओहन होइ छै जे दिठा-दृश्य देखए नै दइ छइ। ओकरा हटौला पछाइते देखि पड़ै छइ। मुदा जँ ओकरा कत्तासँ गोल-गोल काटल जाइ छै तँ कहाँ तीनूमे सँ कियो कहैत जे कम छी।"

कहि सुरेखा सोचए लगली जे भरिसक राधामोहनक मन उचैट गेल अछि। जाबे तक दोसर दिस नै तकाएब ताबे तक नजैर नै घुमतै। तँए दोसर दिस तकाएब नीक हएत। दोहरबैत बजली-

"बौआ, मेलो जाइक समय लगिचा गेलह। नहाइत-खाइत

समय भइये जाएत। हमहूँ जाएब किने?”

दोसर दिनक साँझ। शिक्षण प्रक्रियाक समाप्ति। काल्हि विसर्जन छी। भोज-भात आ सांस्कृतिक कार्यक्रम रहत। राधामोहन आ पी.एन. बाबू गाइक घरक थैड़ देखैत रहैथ। मच्छरक धनधनाएबसँ बुझि पड़लैन जे घूरक जरूरत अछि। दुनू गोरे गाइए घरमे रहैथ तखने सुरेन्द्रो बाबू आ दीनानाथो बाबू संगे पहुँचला। पहुँचते सुरेन्द्र बाबू पुछलखिन-

“गाइक घरमे अखन किए छी?”

ई गप सुनि पी.एन. बाबूकेँ संकोच नै भेलैन। ओना, तीनू गोरेक डेरो एकेठाम छैन आ बाड़ियो-झाड़ी एकरंगाहे छैन तँए प्रश्न बेवहारिके छल। पी.एन. बाबू कहलखिन-

“तीन-चारि दिनसँ एते व्यस्तत्ता बढ़ि गेल जे अपन जिनगीए छिड़िया-बितिया गेल। बुझि पड़ैए जे तीने-चारि दिनक बीच तेते मच्छर बढ़ि गेल जे अवधात करत। मुदा आइयो तँ आब करैक समय नहियेँ अछि। काल्हि बुझल जेतइ।”

दीनानाथ बाबू-

“काल्हियो की भरि दिन छुट्टी हएत, भोज-भात आकि नाच-तमाशा देखनिहार-खेनिहार-ले ने, मुदा विदाइ-समारोह सेहो छी किने?”

“हँ से तँ छी। मुदा भोज-भात पछाइते ने हएत तैबीचक तँ समय बँचबे करत।”

कलपर हाथ-पएर धोइ सभ कियो पहुँचबे केलाह कि ओमहरसँ सुरेखा चाह नेने एली। ठाढ़े सभ कियो चाह पीबए लगला। चाह पीबैत दीनानाथ बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन- “कौल्हुका नोत-हकार दइ छी। खेबो करब आ देखबो करब।”

दीनानाथ बाबू गप तँ चालि देलैन मुदा भोजैत तँ नै छला। भोजैत तँ सुरेन्द्र बाबू छैथ। मुदा जहिना घाटपर चेल्हबाक चालिमे भुन्नो फँसि जाइए, तहिना बगलमे बैसल सुरेन्द्र बाबूकेँ भेलैन। दीनानाथ बाबू तँ पठौल नै छेलखिन जे मद्दी हेतैन। अपनो मुँह खोलए पड़तैन, भलेँ राधामोहन नै बुझि पबैत मुदा दुनू परानी पी.एन. बाबू तँ छैथे। पुलिसक आगू अनेरे पड़ाएब नीक नै होइ छै, खिहारि कऽ पकैड़ खढ़िया मोर मारि पकैड़िये लेत आ जँ पकैड़ लेत तँ सभ ठेही झाड़ि देत। राज-भोज छिऐ, जेते खाएत तइसँ बेसी छिड़ियाएत। बजला-

“राधामोहन सझिया नौतहारी हेता।”

जहिना भोज-काजमे पहिले योजना बनैत आ पछाइत हिसाब-वारी होइत। मुदा बैसार दुनू दिन चलैत। एक तँ बैसारमे नौतक बँटवारा तखन नौतहारीक चर्च नहि! मुदा दोसराक पाहुनकेँ ईहो पुछब उचित नहि जे केमहर एलौं। मुदा जहिना परिवारक छोट भाएकेँ अनको कोहवरक रस्ता खुजले रहै छै तहिना दीनानाथ बाबू। जेठ लग जेहने गलती तेहने सही। जँ सही अछि तँ मुड़ी झुलौता नहि जँ गलती अछि तँ सुधाइर देता।

..पुछलखिन-

“राधामोहन, अहाँ पढ़बो करै छी?”

दीनानाथ बाबूक प्रश्नसँ राधामोहन ठमैक गेल। केना कहबैन जे परीक्षाकेँ अखन छोड़ि आगू बढ़ा देलिऐ, आ अखन घरक पाछू पड़ए चाहै छी। मुदा उत्सुक मन राधामोहनक, बाजल-

“पढ़ितो छी आ परिवारक जे दशा अछि ओकरा जँ नै रोकब तँ केते दूर ढरैक कऽ चलि जाएब तेकर कोनो ठीक नहि। तँए किछु करैक विचार सेहो अछि।”

राधामोहनक सह पाबि दोहरबैत दीनानाथ बाबू पुछलखिन-

“परिवार केतेटा अछि?”

“ ओना, कहैले तीन गोरे छी मुदा...।”

“मुदा की?”

“पिता अन्तिम अवस्थामे छैथ, अब-तब करै छैथ, कखन छैथ कखन नै तेकर कोनो ठीक नहि।”

“केते उमेर हेतैन?”

“सेहो नीक जकाँ नै बुझै छी। झुर-झुर शरीर भेल छैन। तइसँ तँ अस्सीसँ ऊपरेक कहबैन, मुदा माइक जे गतिशीलता देखै छी तइसँ बुझि पड़ैए जे घरक चीनवारेक खुट्टा टुटि गेल। आइ करी कि काल्हि, करए तँ हमरे पड़त। सएह सभ मन हौंर-हाँरि देने अछि। तँए गाए पोसैक विचार करै छी।”

आँखिक इशारा सुरेन्द्र बाबूक देखिते दीनानाथ बाबू चुप भऽ गेला। सुरेन्द्र बाबू पुछलखिन-

“राधामोहन, विचार तँ नीक अछि, मुदा किछु प्रश्नक उत्तर बुझब जरूरी अछि। भने मेलेमे एलौं। भोज-भात खेनिहार सभकेँ खाए दियौ। मुदा, कहब जे जाधैर अपन मन काज करैले ने मानि जाए ताधैर रहू। जँ जीवनमे एकोटा काजक लोक भेट जाए तँ जरूर ओइ जिनगीकेँ सार्थक मानल जेतइ।”

सुरेन्द्र बाबूक मुँह खुजल देखि सुरेखो अपन बातकेँ राखब उचित बुझि बजली-

“दीनाबाबू, जखन राधामोहनसँ गप भेल तँ कहलक जे हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि। पचीस बर्खसँ नैहर गेबो ने केलौं हेन, अठारह बर्खक अवस्थामे छोड़ने रही तँए जाएब तर पड़ि गेल

अछि। तँए सेहो कनी कखनो दुनू भाए-बहिनक बीच कहि देब।”

सुरेखाक प्रश्नसँ सुरेन्द्र बाबू घबरेला नहि, मुदा दिन भरिक देहक थकान, तैबीच काल्हि विदाइ समारोह सेहो छी। एहेन ने हुअए जे औगताइमे प्रोफेसर साहैबक जैकेट प्रिंसिपल साहैबक डालीमे चलि जानि आ प्रिंसिपल साहैबक प्रोफेसर साहैबमे, तँए मन बोझिल, जे केना एहेन सुराग भेट जाएत जे, जे जेतै-क अछि से तेते चलि जाए। मुदा परिवारो तँ परिवारे छी। परिवारकेँ चैन रखने बिना एको छन चैन भेटब कठिन होइ छइ...।

दीनाबाबूकेँ सम्बोधित करैत सुरेन्द्र बाबू बजला-

“दीनाबाबू, एना करू जे एकेटा उत्तरमे दुनू प्रश्न आबि जाए।”

हुँहकारी भरैत दीनानाथ बाबू बजला-

“हँ-हँ! बढ़ियाँ! बढ़ियाँ! हनुमानजी जकाँ पहाड़े चलि औत, अपन-अपन सभ ताकि लेब। मुदा भाय-साहैब एकटा बात पुछब हमरो रहि गेल अछि।”

सुरेन्द्र बाबू-

“कथी, ओहो राखिए दियौ।”

दीनानाथ बाबू-

“राधामोहन, एकटा बात कहू जे परिवारमे बाहरक लोटा दूध अबैए आकि घरक लोटा बाहर जाइए?”

दीनानाथ बाबूक प्रश्न सुनि पी.एन. बाबूकेँ नै रहल गेलैन बजला-

“दीनूबाबू, की कहब! बिसैर गेलौं रमझिमनी आकि रामझुमनी। भिन्डीक माला जपि-जपि भाषाक जान बँचबै छी। मुदा क्षेत्रो तँ किछु छी।”

एक संग अनेको प्रश्न उठैत देखि सुरेन्द्र बाबू विचारलैन जे नीक हएत सभ प्रश्नकेँ बहटारि काल्हि-ले राखि ली आ किछु मनोविनोदक संग बैसारक उसार कऽ ली।..चौअन्नियाँ मुस्की दैत दीनानाथ बाबूकेँ पुछलखिन- “अँए हौ दीनू, उद्घाटन बेर किए हँसए लगल रहह?”

टटके बात तँए बिसरैयौक बहन्ना तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा एकटा जवाबदेहक प्रश्न छी। की कहबैन। हम सभ कहुना भेलौं तँ घरवारीए भेलौं किने, किए ने खोलि कऽ सभ गप करब। ..मुस्कीक जवाबमे ठहाका दैत दीनानाथ बाबू बजला-

“भाय! लाबा जकाँ छिड़ियाएल नहि, मुदा छिड़ियाइबला बात तँ रहबे करै ने।”

दुनू गोरेक बीचक बातमे सुरेखा लाड़ैन लाड़लैन-

“उद्घाटने जखन हँसा गेल, तखन बाँकीए कथी रहल!”

सुरेखाक प्रश्नसँ सुरेन्द्र बाबू थकमकेला। थकमकाइत देखि पी.एन. बाबू सम्हारैत बजला-

“बात भेल किछु ने आ अनोन-विसनोन हुअ लगल!”

अपन भाँज बुझि दीनानाथ बाबू बजला-

“भेल ई रहै जे चारि गोरेकेँ चरिमुखी दीप नेस उद्घाटन करक रहइ। एकटा मोमबत्ती नै ने जे तीन गोरे डाँट पकड़ू आ एक गोरे सलाइ नेस लगाउ। चरिमुखी दीपमे तँ बाँटल चारू गोरेक। सभकेँ दीप जराएब छेलैन। पहिल बेकती जखन सलाइ खड़ैर एकटा दीप नेस देलखिन तखन दोसर-तेसरकेँ सलाइ खर्ड़ैक कोन प्रयोजन। सलाइ काठीकेँ तँ दीपेमे नेसब असान होइतै। से नै केलैन, केलैन ई जे तेसर बेकती जे रहैथ ओ राशिमे राशि नै काटि सलाइ खड़ए लगला आकि मसल्ला उड़ि कऽ कुर्तापर पड़ि गेलैन! कुर्तो तेहेन जे

ओतबेमे दगा गेल। सएह हँसी लगल रहए। अहूँ तँ मंचेपर रहिऐ। अहाँ नै देखलिऐ?”

दीनानाथ बाबूक बातसँ सुरेन्द्र बाबूकेँ दुख नै भेलैन। बजला-

“तूँ छुट्टा छह, हम बान्हल छी तँए किछु...।”

“अच्छा जे हौउ, कौल्हुका-उगरल वस्तु-जात हएत ओ भोजो हएत आ राधामोहनकेँ मेलाक दर्शन सेहो करा देबैन। अखन जाए दिअ, दू घन्टा दुनू कातक चेकिंग बेवस्था करैमे लागत। तहूमे तीन-तीन चेकिंगमे चोरकट रस्ता रहिए जाइ छइ।”

राजसी भोज रहितो तेहेन चोरकट बाट पकड़ा गेल जे ने भोज खेनिहार आ ने भोजैत बुझि सकला जे भरिपेट्टा छी आकि टी-पार्टी। जहिना केकरो घर लूटै-काल जेकरा जे हाथ लगैत से सएह पार कऽ सवुर करैत तहिना एते तँ सतर्की तीनू गोरे–सुरेद्रबाबू, पी.एन. बाबू आ दीनानाथ बाबू–कइये नेने छला जे मझोलका टप रसगुल्ला, अँचारक बोयाम आ निमकीक पैकेट फुटा कऽ दोगमे रखिए लेलैन।

केतए गेल तीन दिनक मेलाक चुहचुही। चारि दिनक चान फेर अन्हराइए गेल। खाएर जे हौउ। रिक्शापर चढ़ा रसगुल्लाक टप सुरेन्द्र बाबू ऐठाम पहुँच गेलैन।

जखन चाह बनि राखल अछि तखन अनेरे फकचोदमे समय बिता चाह सरा लेब बुड़िबकी नइ तँ की हएत। समयसँ एक घन्टा पहिनहि सुरेन्द्र बाबू पी.एन. बाबूकेँ आ दीनानाथो बाबूकेँ कहि देने छेलखिन- “अनेरे चौचंगमे पड़ल छी। चलू, डेरेपर।”

घरमुहेँ होइ काल पी.एन. बाबू दीनाबाबूकेँ टिप देने छेलखिन-

“दीनूबाबूक चलती बेस नीक रहलैन।”

पी.एन. बाबूक प्रश्नकेँ गोड़ियबैत सुरेन्द्र बाबू कहि देलखिन-

“भाएमे कियो दादा होइथ, बात बरबैरे। दीनूबाबू कियो आन

छैथ। मुदा एकटा बात नै बुझि सकलौं जे एहेन चलती अनभुआर जगहमे केना बनि गेलैन।?”

सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न सुनि दीनानाथ बाबू जोरसँ ठहाका मारलैन। मकैया लाबा जकाँ किछु उड़ि कऽ छिड़ियेबो कएल आ किछुकेँ मुहेँमे गोड़ियबैत दीनानाथ बाबू बजला- “मुड़जनमा लग पहुँच की कहलिऐ से कहि दइ छी। कहलिऐ, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि छी तँए चेहरा चीन्हि लिअ।”

मुस्की दैत पी.एन. बाबू दोहरौलैन- “ओ की कहलैन?”

“कहता की! हमरा कि कोनो नै बुझल छेलए जे ओ खानक इंजीनियर छैथ। खेत-पथारक मेलामे हमहीं ने सम्हारबैन। तैठाम जँ एनए-ओनए करता तँ दसटा गामो-घरक लोक ने छै धान कटैक ओजार ‘कोदारि’ कहा देबैन आ खेत तामैक ‘हुँसुआ’।”

मुस्की दैत सुरेन्द्र बाबू पुछलखिन- “आरो कि सभ गप भेल?”

“गप की होएत, केम्हरोसँ आबि जहाँ नजैर दिऐ आकि हाँइ-हाँइ कऽ टेबुल परहक पएर नीचाँ उतारि समधाइन कऽ बैस जाइथ। मुदा हमरो कोन जरूरत जे अनेरे नजैर अँटकौने रहितौं। कहुना भेल तँ अपन मेला भेल किने, कनी-मनी टुटो-नफा तँ सहैए पड़त।”

दीनाबाबूक बोहैत धारकेँ रोकैत सुरेन्द्र बाबू बजला- “छोड़ू, मेलाक गप। जे भेल सएह ने नीक। कागतपर तँ भेबे कएल। लाइव टू लैंड होइ या नै होइ। कागजे ने सभ किछु छिऐ। तीन मन तीन साए मन बनै छइ। आ तीन साए मन तीन किलो। जेहने कागत तेहने ने रोशनाइयो आ हाथक कलमो। आब लोक थोड़े गीधक पाँखिक कलम बनबैए।”

सुरेन्द्र बाबूक विचारमे हुँहकारी भरैत दीनानाथ बाबू बजला-

“बेस कहलौं, कौआ कान नेने जाइए तँ पहिने अपन कान

देखब आकि कौएकेँ खिहारब! छोड़ू दुनियाँ-दारीक गप। अपन भोजक योजना बनाउ।”

पी.एन. बाबू बजला-

“केते गोरे भेलौं से पहिने जोड़ि लिअ। आरो कोन-कोन विन्यास बनए आ के बनौती आ के परैस कऽ खुऔती से विचारि लिअ।”

“विचार की करब? जेना-जेना दीनाबाबू कहता तेना-तेना करब, सएह ने सुरेन्द्रो बाबू कहलैन।”

हिसाब जोड़ैत दिनानाथ बाबू बजला-

“राधामोहन लगा सात गोरे भेलौं। तहूमे अपना सभ तँ घरवारीए भेलौं, असल पाहुन तँ राधामोहने भेला। भोजक नौतहारी सुरेन्द्रे भाय भेला, बँचलौं हम। हम दू-दिसिया बनि दुनू दिस सम्हारि देब। सएह ने।”

“एना झाँपल-तोपल नक्शा बनौने काज नै चलत, खोलि-खोलि सभ विचारकेँ जोड़ियाबए पड़त।”

“हँ-हँ, सएह तँ कहै छी। असल पाहुन माने भेल मिथिलाक राधामोहन। अहाँ मगाहे भेलौं हम भोजपुरीए, तँए असल भनसीया भेली सुरेन्द्र बाबूक पत्नी- सुचिता भौजी। वएह ने खजो खुऔथिन। बेसी होइ वा नहि, मुदा एक-एक पीस तँ हेबाके चाहिए।”

सुरेन्द्र बाबू समर्थन करैत बजला-

“बहुत बढ़ियाँ, आगू?”

“आगू यएह जे हमर परिवार विन्यास वस्तुक सूची बना नजैर रखती जे कोनो वस्तु कम-बेसी तँ ने होइ छइ।”

“बहुत बढ़ियाँ।”

“सुरेखा भौजी वारीक हेती। किएक तँ मोन अछि किने, बरी पहिने परसा गेलै आ अदौरी पछाइत, तहीपर ने सुरेखा भौजी हँसि देने रहथिन। केतबो पी.एन. भाय डँटलखिन तैयो मुँह सापुट लेलकैन?”

“अच्छा ठीक छै। आ काजक निगरानी?”

“सेहो करब। पी.एन. भाय हेता, अपने वक्ता भेलिऐ हमरा सुनने नइ सुनने हेबे की करतै।”

“एना किए, खिशिया कऽ बजलौं?”

“खिशिया कऽ कहाँ बजलौं। बजलौं ई जे नीक लागत मानि लेब नइ नीक लागत नै मानब।”

पाँचू गोरे गोल-मोल बैसला। चाह चलल। राधामोहन दिस देखैत सुरेन्द्र बाबू बाजए लगला-

“बौआ, अहाँ नवतुरिया छी, अहीं सभ भविस छिऐ। कहलौं जे गाए पोसैक विचार होइए से नीक विचार अछि। मुदा एतबेसँ काज नै चलत। दुनियाँक आन-आन मुलुकमे सुनै छिऐ गाए-महींसकेँ एते दूध होइ छै, ओते दूध होइ छइ। सत् बात छइ। मुदा ओइ सत्यक पाछू बहुतो कारणो छइ। ओकर जलवायु केहेन छै, ओकर सालो भरिक मौसम केहेन होइ छइ इत्यादि। अपना ऐठाम मोटा-मोटी तीन मौसमक सामना पशुपालककेँ करए पड़ै छैन। जाड़, गर्मी आ बरसातक। जाड़-गर्मी दुनू पशु-ले अहितकर अछि। ऐ अहितकरकेँ हितकर केना बनौल जाए ई मूल प्रश्न अछि। ओना, केतबो कहल जाए जे दूधक धार बहै छल अपना ऐठाम, मुदा..? दूध-दही जइ स्तरक भोज्य–पदार्थ छी ओइ स्तरक समाज अखन धरि नै बनि सकल अछि, मुदा एका-एक अचानके तँ हेबो नै करत। तँए पढ़ल-बिनु-पढ़ल किसान परिवार-ले नीक बेवसाय पशुपालन छी। अच्छा

ई कहू जे परिवारमे खेत केते अछि?”

राधामोहन-

“ठीक-ठीक तँ नै बुझै छी मुदा अनदाजन तीन-चारि बीघा हएत।”

‘तीन-चारि बीघा’ सुनि सुरेन्द्र बाबूक मुँह बिजैक गेलैन। मनमे उठलैन जे जँ तीन-चारि बीघाक समुचित खेती कएल जाए तँ प्रर्याप्त अछि। मुदा खेतियो करब तँ जटिल अछिए। किएक तँ तीन-चारि बीघा खेत पचास टुकड़ीमे बँटि सौंसे गाम छिड़ियाएल हेतइ।

संयमित होइत पुछलखिन-

“सभ खेत एकरंगाहे अछि आकि भीन-भीन?”

सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न राधामोहन नै बुझि सकल। नै बुझैक कारण भेल जे घरमे खतियान, दस्ताबेजसँ लऽ कऽ बन्दोवस्त रसीदक संग सभ खेतक मालगुजारियोक रसीद अछिए। कागजे ने असल पहचान खेतक छी, तहूमे रैयती मालगुजारी छिहे, एकरंगाहे अछि। ब्रह्मोत्तर-शिवोत्तर रहैत तँ मालगुजारीक जगह शेषेटा लगैत, सेहो तँ नहियेँ अछि। ..राधामोहनक मन जमीनक गुत्थीक गिरह खोलिए ने पबै छल, जइसँ बाजबे की करैत। ओना, तीनू गोरे बुझि गेला जे राधामोहन प्रश्नकेँ नीक जकाँ नै बुझलक। नै बुझैक कारण नहियोँ सुनब होइ छै से नहि, प्रश्नक गहराइकेँ नै छुबि सकल। ..

सुरेन्द्र बाबू प्रश्न दोहराबए नै चाहैथ, दोहरेबे की करितैथ। वएह ने रामाकठोला। वएह बात वएह शब्द। दीनानाथ बाबू बीचमे ऐ दुआरे नै टपकैथ जे सुरेन्द्र बाबूक सोभावसँ परिचित। जँ कहीं रधेमोहन जकाँ भँसिआ जाएब तँ दोसर लग हमरा-ले थोड़े औत आ वएह लगा चला देता। तँए अनकर टेटर अपना सिर सहेजब नीक नहि, तँए चुप। मुदा पी.एन. बाबू अपन मैदान देखि मुँह बन्न राखब

उचित नै बुझि, बजला-

“सुरेन्द्र बाबू, भरिसक राधामोहन भाषा भेदक चलैत प्रश्न नै बुझि सकल। बुझा दइ छिऐ।”

पी.एन. बाबूकेँ मनमे उठलैन। जेकरा हमसभ एक्के गाममे ‘अमधुर’ कहै छिऐ ओकरे किछु गोरे ‘अमरूद’ कहै छैथ, मुदा मिथिलांचल तँ भिन्न अछि, जैठाम ‘लताम’ कहल जाइ छइ।

..मन मानि गेलैन जे भरिसक भाषे दोष छी। बजला-

“अपना सभ समाजक प्रवुद्ध वर्ग छिऐ किने, जे पछुआएल जिनगीसँ पीड़ित अछि ओ किआँ-ने गेल अगुआएल जिनगीक पद्धति। जँ से होएत तँ अल्लू घर-घर चलैए ओइ घरमे मिठाइयो तँ चलि सकै छल। किएक तँ तैंतीस-चौंतीस रंगक जँ ओकर तरकारियो होइ छै तँ ओइसँ बेसी पैंतीस रंगक मिठाइयो तँ होइते छइ। मुदा जँ लाट साहैबक ऑफिसमे भाषेक दूरी बनल रहत तँ समस्याक समाधान सुलझत आकि आरो उलझत। एक तँ भाषाक दूरी दोसर भाषाक अपन शब्दक दूरी तँ अछिए।”

सह पाबि दीनानाथ बाबू टिपलैन-

“हँ-हँ भाय साहैब, अहाँक विचारसँ हम बिल्कुल सहमत छी जे एके तरकारीक नाओं क्षेत्रक कोन बात जे गामोमे भिन्न-भिन्न अछि। मिथिलांचलक घेरा झारखण्डमे ‘नेनुआ’ आ ‘परोड़’ बनि जाइए तँ भोजपुरमे सोल्हन्नी नेनुआ बनि जाइए। तेतबे नहि, नेपालक राजविराज क्षेत्रमे झींगा नाओं रखने अछि।”

बैसार अनुकूल भेल। पी.एन. बाबू राधामोहनकेँ पुछलखिन-

“राधामोहन, सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न बहुत नमहर भऽ गेलैन, किएक तँ अपना ऐठाम एक-दोसर जमीनक दूरी बहुत अछि। केतौ बाड़ी-घराड़ीक मूल्य बेसी अछि तँ केतौ चर-चाँचरक कम। तहिना

पानिक लाट अछि तँ केतौ बिनु पानिक। कोनोक माटि नीक अछि तँ कोनोक दोखरा बालु। तहिना केतौ ऊँचरस रहने रौदीक सम्भावना बेसी रहैत तँ केतौ दाहीक। दाहीक कारण खाली बाढ़िए नहि, बर्खा सेहो होइ छइ। ऊपरका पानि नीचाँक फसलकेँ दहा दइ छइ।"

महजाल जकाँ जलियाएल प्रश्न देखि सुरेन्द्र बाबू राधामोहनपर नजैर अँटकबैत बजला-

"राधामोहन, अखन तँ अहाँकेँ माइयो आ बाबूओ जीविते छैथ हुनको सभसँ विचारि नेने छी ने, किएक तँ विचार लैक पहिल ई कारण जे जँ हुनक अनुकूल विचार छैन तखन काजमे सुविधा एहत। जँ प्रतिकूल विचार हेतैन तँ ओ ऐ काजसँ अवगत नै हेता जइसँ सुनाड़ी जिनगीक लाभ नै अनाड़ीक नोकसान हएत।"

अवसर पाबि दीनानाथ बाबू टिपलैन-

"जैठाम कोनो नव काज शुरू कएल जाइत अछि ओइठाम तँ सभ अनाड़ीए भेल किने?"

मुस्की दैत सुरेन्द्र बाबू बजला-

"औगताइमे कहि सकै छिऐ। मुदा से नहि, ऐठाम नव किस्मक जर्सी गाएसँ पूर्वक देशी गाए तँ अछिए। दूधारू जानवर दुनू भेल। जिनगीक सभ आवश्यकता दुनूकेँ छइ। मुदा ओकर खाँढ़ बदैल गेलै जइसँ दूधक शक्ति बदैल गेल जाएत। तँए ओकरा ओइ अनुकूल केना बना कऽ राखल जाए से मूल भेल। मुदा एकरा-ले जरूरी अछि जे ओइ पाछू समय केते लगै छै आ परिवारक लोककेँ समय केते अछि तही हिसाबसँ ने नीक हएत।"

समयकेँ ससरैत देखि प्रश्नकेँ मोड़ैत सुरेन्द्र बाबू बजला-

"राधामोहन, जइ परिस्थितिमे अहाँ छी, अछैते पूजीए लल-बेकल छी। बहुत पूजी अछि मुदा ओइ पूजीमे गति आनैले बहुत

मेहनतो आ सूझो-बूझक जरूरत अछि। जे अखन अहाँ-ले कठिने नहि भारियो अछि।”

सुरेन्द्र बाबूक प्रश्न सुनि राधामोहन ओहन ठमकान नै ठमकल जे चारूकात अन्हराएले बाट देखैत, ओहन ठमकल जे चारूकात बाटे-बाट देखैत। एक्के गाछक कोन जड़ि छी आ कोन छीप परहक बड़क सीर ओ बिलगाएब कठिन अछि। मुदा बिनु बिलगौनौं काजो तँ नहियेँ चलत। बाजल-

“श्रीमान्, अखन एते पसार देखा देब तँ ओकरा समेट कऽ उसारब कठिन भऽ जाएत। तखन एना कऽ जरूर देखा दिअ जे फेर केकरोसँ पुछैक जरूरत नै हुअए।”

राधामोहनक प्रश्न सुनि सुरेखा टिपलैन-

“बड़-बड़ धान खेलैं रे बगड़ा ऐ बेर पड़लौं मरदसँ रगड़ा...।”

महावीरजी जकाँ एकटा जड़ि नै पहाड़े उठा कऽ आनए पड़त!

सुरेखाक चपचपी देखि सुरेन्द्र बाबू गम्भीर होइत चपचपाइत बजला-

“राधामोहन! अखन अहाँक जिनगी लटकल भँट्टा जकाँ झुलैए। तँए निश्तुकी काज-ले निसचित समय चाही, से नै देखै छी। कहै छी जे पिता अब-तबक स्थितिमे छैथ। अहाँ गाए खुट्टापर बान्हि लेब हुनका असपताल लऽ जाइक जरूरत हएत तँ की करबै। समैपर गाएकेँ खाइ-पीबैले नै देबै तँ दुरि भऽ जाएत आकि दुरूस रहत?”

राधामोहन-

“तखन?”

सुरेन्द्र बाबू-

“तैयो बहुत सम्भव अछि।”

राधामोहन- “थोड़बोक चर्च कऽ दियौ। जे सूटगर हएत ओइठामसँ जिनगीक क्रिया शुरू करब।”

प्रश्नक गम्भीरता अँकैत पी.एन. बाबू मुँह बिजका मुड़ी डोलबए लगला। मुदा अपनाकेँ पूरक प्रश्नकर्ता बनब नीक बुझलैन। अपने-आपकेँ अपना नजैरिए देखब आ अनका नजैरिए देखैमे किछु-ने-किछु अन्तर तँ आबिए जाइ छै, तँए नीक हएत जे दुनू नजैरक समावेशी दिशा होइ। तँए ई नीक हएत जे सुरेन्द्र बाबूक सोच-विचार आ अपन सोचमे की अन्तर भऽ रहल अछि। तैसंग राधामोहनकेँ दुनूमे की अनुकूल बनि पड़त। मनमे अबिते पी.एन. बाबू अपन ठोरक केबाड़क बिलैया ठोकि कान ठाढ़ केलैन। कान ठाढ़ करब ऐ लेल जरूरी बुझि पड़लैन जे एहेन ने हुअए जे मूलेमे मन केम्हरो भँसैक जाए। राधामोहनकेँ हजारो प्रश्न उठबैक अधिकार छै, अनसुनियोँसँ काज चलि सकै छै, मुदा हमरा सेने से तँ नै हएत। एक तँ घरवारी छी, दोसर अपना क्षेत्रक प्रश्न छी, तेसर किछु हेतै तँ राधामोहन उपरागे किनका देतैन।

..नमहर गोष्ठीक अध्यक्षता जकाँ भारी तँ बुझि पड़लैन मुदा दोसर तँ जवाबदेहो नहियेँ छैथ, जिनका सुमझा सकै छिऐन। मुदा, खाएर जे हौउ...।

दीनानाथ मने-मन सोचैथ जे, जे शोध सुरेन्द्रेबाबूक अन्दरमे कऽ रहल छी, ओही प्रश्नक उत्तर श्रीमुखसँ सुनब। अवसर भेटल। जँ साकांछ भऽ नै सुनि-बुझि लेब तँ पछाइत अपने भारी हएत।

..सुरेखा-ले धनिसन। मरदा-मरदी गप छी, अनेरे बीचमे पड़ब मगजमारी हएत। मुदा लगले मन बदैल अपन प्रश्नपर पहुँच गेलैन। ‘हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि।’ के कहने छला। संगे-संग जवाब देब। आब कहू जे सतंजामे एकटाकेँ बेराएब केहेन हएत। जँ

आँखि निरारि कऽ नै ताकब तँ भेटत केना..?

तही बीच सुरेन्द्रो बाबूक पत्नी आ दीनानाथो बाबूक पत्नी आबि बैसली। मौका पाबि दीनानाथ बाबू पी.एन. बाबूकेँ पुछलखिन-

“भाय यौ, तिलासकराँइतमे एकटा तिल खेने तँ बेटा-बेटी जिनगीक मोटा उठा लइए आ सुरेन्द्र भाइक बनौल तिलकूट जे सालो भरि लोक पनपियाइ करैए से की हेतइ।”

सुरेन्द्र बाबू तँ चुपे रहला मुदा हुनक पत्नी सेहो ओमहुरके, तँए वएह नैहरक पक्ष लैत बजली-

“से तँ बुझिते हेबइ।”

समयकेँ अनेरे बोहैत देखि राधामोहनकेँ सुरेन्द्र बाबू कहलखिन-

“बौआ, अखन अहाँ बालबोध छी, जिनगीक धक्का-पंजासँ भेँट नै भेल अछि। अपने उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाएब धिया-पुताक खेल नै छी, तँए छोड़ियो देब उचित नहि। अहाँ अपन दिशाहीन परिवारकेँ दिशा दऽ सकै छिऐ, मुदा ओहूमे कठिनाइक सामना करए पड़त। वैचारिक दौड़मे पहिल संघर्ष समाजमे होइ छइ। जखने आगू दिस बढ़ए चाहब तखने रूढ़िवादी विचार, जे समाजक कोढ़ रहल अछि, अपन सोल्हन्नी शक्तिसँ विरोध करए लगत। मुदा तेकर चिन्ता नहि। जहिना सूरसाक मुहसँ हनुमान सुरक्षित निकैल आगू बढ़ि गेला तहिना टपान अछि, टपि जाएब। जाबे धरि कोनो परिवारक आमदनी खर्चासँ कम रहतै, ओ परिवार पाछू मुहेँ ढरकबे करत। अहाँ तँ सहजे त्रिकाल–काँच अवस्था, पुरुष विहिन परिवार आ परिवारमे ओहन रोगी जे मृत्युक करीब पहुँच गेल अछि–मे पड़ल छी। तँए अपन खेनाइक संग घोड़ाक दनोक जोगार करैत मोछमे तेल लगा सवारियो करैक अछि।”

बीचमे सुरेन्द्र बाबूकेँ पी.एन. बाबू टोकलैन-

"हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछि। ओते वृहतमे एका-एक जाएब नीक नहि। नमहर-सँ-नमहर गाछक बीआ कनियोँ माटिमे रोपि कऽ जनमौल जाइ छइ।"

पी.एन. बाबूक इशारा पाबि सुरेन्द्र बाबू घोड़ाक मुखाड़ी खींच बजला-

"राधामोहन, किसानी परिवारमे जनम भेल अछि तँए किसानी जिनगीकेँ कनियोँ बुझि लिअ। अहाँक प्रश्न भारी नै अछि। खण्डियो कऽ कऽ सोझराइए देब।"

सोझराएब सुनि राधामोहनक मनमे खुशी उपकल। सुरेखा समयकेँ गमौने बिना सुरेन्द्र बाबूपर आँखि फेकलैन। ..सुरेन्द्र बाबू बुझि गेलखिन जे भरिसक अपन प्रश्न मोन पाड़ि रहली अछि। भने नीक हएत जे पहिने हुनके उत्तर दऽ दिऐन...।

बजला-

"देखियौ, राधामोहन बजला जे हमरा गामसँ अहाँक गाम नीक अछि। मुदा बाल-बोध अछि औगताइमे बाजि गेल। सभ गाम कुकुर-कटौझमे लगल अछि। खेबो करैए आ भूकबो करैए।"

विचारक रस पाबि दीनानाथ बाबू मुँह चटपटबैत पुछलखिन-

"से की, से की! भाय कनी फरिछा दियौ।"

मुस्की दैत सुरेन्द्र बाबू सुरेखा दिस तकैत बजला- "सभ सभकेँ गरियेबो करैए आ मुँह मिलानियोँ रखने अछि। कियो बजैत जे 'असकर बरसपतियो फूसि', तँ कियो बजैत- 'दिन-राति आत्मा रामक तीमन खा आ चिड़ैसँ बाँतर कहि विवेकबान बाबू बनह।'

..खाएर जे हौउ। खेती-बाड़ीक उपजासँ अहाँक गौंआँ कोठो-

कोठी बनौलैन आ खेबो-पीबो नीक करै छैथ, तइ खियालसँ राधामोहन बाजल। मुदा पढ़ल-लिखल लोक राधामोहनक गाममे बेसी अछि तँए के नीक के बेजाए से कहब कठिन अछि।”

सुरेखा दिससँ नजैर हटा सुरेन्द्र बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

“राधामोहन आगू बाजू?”

राधामोहन- “दबाइयो कीनैमे आ दूधो उठौना लइमे तंग-तंग भऽ गेल छी, तँए गाए पोसैक विचार मनमे आएल।”

राधामोहनक प्रश्न सुनि सुरेन्द्र बाबूक मनमे भेलैन जे राधामोहनकेँ ओकर सम्पैतकेँ बिना जनौने कारोबार जनाएब नीक नहि। बजला-

“देखियौ, जे खेत अछि ओकरा समुचित बेवस्था केने अहाँ नीक गिरहस्त बनि सकै छी। पूजी दू रंगक अछि, एक श्रम आ दोसर धन। दुनूक मिश्रित दिशा जिनगीक बाट भेल। गिरहस्तीक बहुतो डारि छइ। तइमे गाइयो पोसब एकटा छी। मुदा जखन अपन सम्पैतक असल रूप हनुमान जकाँ बुझब तखने ने नमहर छलांग लगाएब। बड़बढ़ियाँ। केते गाए पोसैक विचार अछि?”

राधामोहन- “मन तँ अछि जीविका बनबैक मुदा अखन जे पार लगत सएह ने। एकेटा पोसैक विचार अछि।”

सुरेन्द्र बाबू-

“बड़ बढ़ियाँ, सभसँ पहिने ओकर खेनाइ-पीनाइक जोगार कऽ लिअ। कोनो दूधारू घास एक माससँ पहिने नै उपजा सकै छी, तँए गाम जा कऽ पहिने घासक खेती कऽ लिअ। खेती केलाक पछाइत रखैक जोगार, घर आ थैरक सेहो कऽ लेब। अखन अकसरहाँ किसान अगबे एसबेस्टसक घर बनौने छैथ। से नहि, बरसात-ले एसबेस्टस नीक अछि मुदा जाड़ो आ गर्मियो-ले उपयुक्त

नै अछि। ओकरा तरमे मोटगर छाड़ दऽ देलासँ उपयुक्त बनि जाइ छइ। ई दुनू काज केने आउ, तखन अहीठामसँ, पुसेसँ एकटा दुधारू गाए कीनि संगे चलब आ दूधक पहिल भोज खाएब।”

पी.एन. बाबू राधामोहनकेँ कहलखिन-

“सालक पछाइत तँ हमहूँ गामे अबै छी। जँ चारियो-पाँच गामक लोक गाए पोसलैन तँ ओते दूरक बीच जिनगियो बनले रहत।”

❑

शब्द संख्या: 10284

पाँचिम पड़ाव

समय पाबि राधामोहन पूसा मेला तँ चलि गेल मुदा परिवारमे बिनु कहने। आने मेला जकाँ टटके दर्शन कऽ घुमि जाएब, मनमे रहै से गड़बड़ा गेलइ।

पाँच दिन समय लगने बुधनीकेँ अन्देशा हुअ लगलैन जे कहीं छौड़ा वौर-तौर तँ ने गेल! नव कवरिया अछि होहा-मे ने केतौ पड़ि गेल। मुदा पिता-नन्दलाल छाती लगा मारि लेलैन जे जहिना दुनियाँक सभ किछु छुटिए रहल अछि तहिना बेटो गेल! मुर्दापर जेहने अस्सी मन लाद तेहने नब्बे मन, आरो की...।

हहाएल-फुहाएल राधामोहनकेँ अबिते देखि यशोदा मैया जकाँ बुधनीक छाती सूप जकाँ भऽ गेलैन। काजक भूखल-पिआसल चेहरा देखि बुधनी बजली-

“बौआ, थाकल-ठेहियाएल एलह-हेन तँए पहिने किछु पानि पीब लएह।”

माइक बात सुनि राधामोहनक मन ओइ यात्री सन भऽ गेल जे छहराइ-ले आमक गाछक निच्चाँमे बैसैए आ तखने पाकल आम धब-दे आगूमे खसै छइ।

..उत्साहित मने राधामोहन बाजल- “माए, भने कनी जिराइयो लेब आ मेलोक गप-सप्प सुना देबौ।”

जहिना कोनो परिवारक हेराएल बच्चा हाथमे किछु नेने अबैत

जेकरा देखि माए-बापक मन खुशी होइत तहिना दुनू बेकती बुधनी आ नन्दलालोकेँ भेलैन।

पानि पीब राधामोहन बाजल-

"माए, जहिना कियो मनकामना नेने देवस्थान पहुँचैए तहिना भेल।"

तरसैत मनमे जहिना तृष्णा तरपैत तहिना माइक तरसैत मनपर राधामोहन आँखि गड़ा देखए लगल। जिज्ञासु मन माइक। बेटाकेँ अपन तृष्णा केना कहती। केकरा नै मन होइ छै जे नीक खेनाइ खाइ, नीक शरीर लऽ कऽ नीक घरमे रही, प्रतिकूल मौसमकेँ अनुकूल बना शान्तसँ निवास करी। मुदा माइक बात जँ बेटा बुते नै पुरौल भेल तँ ओकरो मन कानि-कानि बाजत जे माइक मन लगलै रहि गेल। तइसँ नीक ओकरे सुनब हएत। बजली-

"की सभ मेलामे देखलहक?"

मेला सुनि राधामोहन विस्मित हुअ लगल। दहिना हाथ उठा चानि ठोकि बाजल-

"माए, एक जिनगीकेँ के कहए जे पुस्त-पुस्तैनीक जिनगीक बाट भेट गेल। भगवान दहिन भेला जे मेलाक जड़ियेमे पहुँच गेलौं। तेहेन-तेहेन विचारक सभसँ दोस्तियारे भऽ गेल जे गुरु मानि लेलिऐन। केतौ हमरा वौआइ-ढहनाइक जरूरत नै अछि। जखन जे जरूरत हएत एक लपकन चलि जाएब आ सीख लेब। जइ हिसाबसँ कहलैन तही हिसाबसँ काजो करब। एकेटा गाए पोसब। बेसी नै सम्हारल हएत। मुदा एकोटा पोसब तँ तीन के कहए जे तेरहक मुकाबला करत।"

बेटाक उत्साह देखि बुधनीक मन उत्साहसँ धधैक गेलैन। जहिना केतौ कोनो घरमे आगि लगने भोंकाँर फुटैत तहिना माइक

मन देखि राधामोहन बाजल- “माए, अपना सभ बुझै छी जे गरीब छी कोनो आए-उपए नइए, मुदा से नहि, तेते अछि जे सम्हारले ने हएत। हाथमे रुपैआ नै अछि मुदा खेत-पथार तँ अछि। ओना, खेतो तेतेक अछि जे नीक जकाँ गिरहस्तो बनि सकै छी, मुदा जखन मनमे जिनगीक पहिल काज गाइए पोसब जागल तँ यएह करब। सीमा कातक जे खेत अछि, जेकरा दुनू गामक लोक हगनार बनौने अछि ओइ बारहो कट्ठाकेँ बेच लेब। दस हजार रुपैए ओइ बाधक जमीनक दाम छइ। हगनार बुझि पाँच-दस हजार कमे दिअए मुदा बेचब ओकरे। ओइसँ एको कनमा उबजो नहियेँ अबैए।”

राधामोहन बजिते छल कि बिच्चेमे नन्दलाल ओछाइनेपर सँ बजला-

“बौआ, खतियानी चीज छी तँए पहिने बन्दोबस्ती, दस्ताबेजी बेची। लोक की कहतह!”

राधामोहन चुप्पे रहल मुदा बुधनी झपैट बजली-

“दिनोमे तरेगन देखै छी से होशे ने अछि आ बेटा जे किछु करए चाहैए तँ आगूसँ ठेहुन गड़ा दियौ। ओकर सभ किछु छिऐ, राखए आकि बोहाबए तेकर नीक बेजाए ओकरे हेतइ। अन्न बिना मरब आकि भीख मांगि खाएब, कौल्हुका दिन लोक ओकरे ने थूक देतइ। तइले हम किए रोकब।”

बेटा दिस मुँह ताकि बुधनी फेर बजली-

“हँ, और की करबहक?”

दूमे एकक सह पाबि राधामोहन बाजल-

“दस कट्ठा खेतमे दूधारू घास लगाएब। अपना बोरिंग नै अछि, एकटा कले खेतमे गड़ा लेब आ छोटके इंजिन लऽ लेब। ओना, अखन एक्केटा गाए आनब तँए एके गाए-जोकर घरक काज

अछि मुदा से नै करब, तेना कऽ बानाएब जे तीन-चारिटा गाइक अँटाबेस भऽ जाएत। अखन ताबे गहुमक भूसी कीनि कऽ रखि लेब।”

मास दिन बितैत-बितैत घरो बना लेलक आ बीत-बीत भरिक दूधारू घासो उपजा लेलक। पचास हजार रुपैआ हाथमे बँचलै रहै पूसा विदा भेल।

चिन्हरबे लोक, चिन्हरबे घर-दुआर। साढ़े पाँच बजे साँझमे राधामोहन पी.एन. बाबूक डेरापर पहुँचल। दुनू बेकती बजार गेल रहैथ। तैबीच बगलेक डेरासँ सुरेन्द्र बाबूक पत्नी देखलखिन। देखिते लगमे आबि पुछि देलखिन-

“गाम-घरक की हाल-चाल अछि राधामोहन?”

राधामोहन-

“सभ आनन्दित अछि। साहैब सभकेँ नइ देखै छिऐन?”

राधामोहनक बात सुनि सुचिता बजली-

“साहैब सभ सहाएबे छैथ किने, रौद-बसात लगबैक समय भऽ गेलैन किने सएह लगबए किम्हरो गेल हेता।”

दुनू गोरेक बीच गप-सप्प चलिते छल कि दुनू बेकती रक्का-टोकी करैत पी.एन. बाबू पहुँचला। रक्का-टोकीक कारण छेलैन राति-ले माछ किनब। चसगर खेनिहार पी.एन. बाबू तँए माछपर जोर देने। एक तँ माछक अड़सट्ठा तेहेन भारी अछि जे खाइ-बेर तक लधले रहैए, तइसँ नीक अपन गाइक दूध किए ने। कोनो बेसी तरद्दुत नहि। माछक छातीपर बैसैक दम ओकरा नै छइ। तखन तँ वेचारा ओहुना कहू जे दू गोरेक भानसमे जँ चारि घन्टा समय लगाएब केहेन हएत। दूधकेँ की छै, बथनियाँ जकाँ दूहि कऽ चुल्हियोपर कटिया चढ़ा देबै आ गरमे-गरम खाइ बेर थारीमे उझैल देब। एक संगे दुनू

काज भऽ जाएत, माने कटियो सोन्हा जाएत आ दूधो औंटा जाएत। ओना, माछ कीनिए नेने रहैथ। राधामोहनकेँ देखिते पी.एन. बाबू पुछलखिन-

"गाम-घरक की हाल चाल अछि राधामोहन?"

"बड़बढ़ियाँ अछि। जहिना-जहिना कहने रही तहिना-तहिना करबो केलौं।"

राधामोहनक जवाब सुनि पी.एन. बाबूक मन फुला गेलैन। बजला-

"अहू ठामक जतरा नीके अछि, माछ अनलौं-हेँ।"

बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा लगलै मन रोकि कऽ अँटका देलकैन। रोकि देलकैन जे माछ खाइ छैथ तिनका-ले ने आ जे नै खाइ छैथ तिनका-ले केना जतरा नीक भेलै? तैसंग ईहो जे भोज्य पदार्थक तुलनामे माछ महगो अछि, जेतए सस्ता वस्तु भेटब भारी अछि तैठाम की कहल जाए? खाएर जे हौउ, मिथिलाक पहचान तँ छिहे। भलेँ पोखैर बाढ़िमे मरने भऽ गेल हुअए, गढ़िया गेल हुअए, खरहा गेल हुअए आकि भोंथिया गेल हुअए, मुदा झण्डा झूकाएब नीक हएत। झुकबाको नै चाही। से जँ झूकि गेल तँ की एहेन देह-दशा लऽ कऽ मुरै उखाड़ब।

विचारमे पी.एन. बाबू मगने रहैथ आकि तखने सुरेन्द्रो आ दीनानाथो बाबू ललका-ललकी करैत पहुँचला। ओना, ठोर दुनूक पटपटाइते रहैन मुदा राधामोहनक सोझहामे अपन उलझन राखब नीक नै बुझलैन...।

पाशा बदलैत दीनानाथ बाबू राधामोहनकेँ टोकलखिन-

"बड़ चपचपी देखै छी राधामोहन! इन्दिरा आवासक पाइ गाए कीनैले भेटल आकि दारू भट्ठी जाइले से भाँज कनी कहू।"

सुरेन्द्र बाबू आ दीनानाथ बाबूक बीच जे ललका-ललकी रहैन ओ ई रहैन जे जँ दूधक पैदावार गाममे बढ़ि जाएत तँ ओकर बजार केहेन हएत? नीक प्रश्न रहितो दुनू गोरे ओझरा ओतए गेल रहैथ जे बजार केना बनै छइ। दिन उगले सभ एकठाम बैसला। तैबीच सुरेखा माछकेँ धो-धा तेलमे कर लगा नेने छेली। संयमित सोच रहने कियो अपन रमाकठोला नै पसाइर राधामोहनेक बात सुनैले खढ़िया जकाँ कान ठाढ़ केने रहैथ। से जँ नै करतैथ तँ नढ़ियो तँ नहियेँ छैथ जे सोझहे भुकबे करितैथ। तखन पुछतैन के। अपन जिनगीक मांसक रक्षा तँ वेचारा खढ़ियोकेँ अपने करए पड़ै छै, नइ तँ जेकरे आँखिक सोझ पड़त मारि कऽ खा जेतइ।

जहिना किछु लोक एहनो होइ छै जे मुदालह बनि लड़बकेँ प्रतिष्ठा आ मुद्दैकेँ अप्रतिष्ठा बुझै छैथ, कारण जे हौउ, तहिना काज पुरौल राधामोहनक मन प्रश्न सुनैक जिज्ञासा-ले उत्तर मनमे रखने तँए फुलैत जे किछु पुछता तँ प्रश्नक नीक उत्तर देबैन। बिच्चेमे सुरेखा टपकली-

“दूध नीक आकि माछ?”

दीनानाथकेँ भेलैन जे चिकारीमे भरिसक हमरे कहलैथ, किएक तँ हुनका दुनू गोरेसँ तँ धकाइते छैथ। अवसरक चुकल बाण जहिना सौंसे दुनियाँ बौआ-ढहना अबैए तहिना बुझि पड़ैए हएत। हमहीं बुझलिऐ आ ओ सभ नै बुझलैन, की ओ सभ अन्न नै खाइ छैथ जे नै बुझने हेता।

..सुरेखाक आँखि-पर-आँखि दऽ दीनानाथ उत्तर देलखिन-

“जे भेटए से नीक।”

अनेरे समयकेँ ससरैत देखि सुरेन्द्र बाबू राधामोहनकेँ पुछलखिन- “की सभ अखन धरि केलौं?”

जहिना कोनो विद्यार्थी रातिमे कोनो कविता वा गीत रटलक आ भिनसुरका परीक्षाक प्रश्न पबिते अह्लादित भऽ कागतपर उतारए लगैए तहिना राधामोहन अह्लादित होइत बाजल- “श्रीमान्, एक लाख दस हजार रुपैआमे खेत बेचलौं। सबा क्विन्टल मासक हिसाबसँ पाँच क्विन्टल गहुमक भूसी कीनि लेलौं। दस कट्ठामे घास लगौने छी, चारि थान रहैबला घर बनेलौं। पचास हजार बँचल अछि जे लऽ कऽ अपने लोकैनक शरणमे आएल छी।”

राधामोहनक जवाब सुनि, जहिना कोनो देवालयमे गेट परहक हनुमानजी सभसँ पहिने असिरवाद दइ छथिन तहिना दीनानाथ बाबू सुरेन्द्र बाबूकेँ कहलखिन- “भाय साहैब, अपनेबला गाए दऽ दियौ।”

दीनानाथ बाबूक विचार सुनि सुरेन्द्र बाबू ठमैक गेला। ठमकैक कारण भेलैन एक संग अनेको प्रश्न मनमे उठब। अपना खुट्टा परहक गाए छी, बच्चेसँ देखैत एलौं। अखन गाए अछि। पनरह किलो दूध होइ छइ। की सभ खाइले दइ छिऐ आ केतेक बेर पानि पीअबै छिऐ, केहेन घर बना रखने छिऐ..। सभ तँ बुझल-गमल अछि। जँ गाए देबै तँ तैसंग ईहो सभ तरद्दुतो कहि देब नीक हएत। तैसंग दोसर प्रश्न ईहो उठि गेलैन जे लाख रुपैआ दरमाहा उठबै छी, एकटा बोनाएल नवयुवककेँ उठैले तीस-चालीस हजार दऽ नै सकै छी। गाइक दाम नै लेब।..मुदा तइ बिच्चेमे दीनानाथ बाबू दाम खोलैत बजला- “तीस हजार गाइयक दाम भेल, गाड़ी भाड़ा अपने लागत।”

दीनानाथ बाबूक विचारकेँ समर्थन करैत सुरेखा टिपलैन- “हँ-हँ, दाम ठीके कहलिऐ। तइमे आशीक जे देथिन।”

दुनूक गप सुनि सुरेन्द्र बाबू बजला- “गाइक दाम नै लेब।”

मंगनी सुनि राधामोहन चौंकैत बाजल- “श्रीमान्, जहिना मंगनी किताब पढ़ने लाभ होइ छै तहिना मंगनी बौसौक होइ छै, तँए

मंगनी नै लेब।”

राधामोहनक प्रश्नसँ सुरेन्द्र बाबू आरो उलैझ गेला। मनमे उठलैन एक तँ जीवनी-सँ-अनाड़ीक हाथ वौस जा रहल अछि। काँच वौस भेल। जँ कहीं दस-बीस दिनक बीच किछु भइये जाइ! गामे-घर छी साँपो-कीड़ा रहिते अछि, तखन ओइ वेचाराकेँ की दशा हेतइ? मुदा मंगनियोँ नै लिअ चाहैए! दाम कम करि कऽ दिऐ, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। काल्हि-दिन जखन बेचए चाहत तँ लेबाल कहबै करतै ने जे एतबेमे किनने रहअ। बजला-

“दाम दीनेबाबूक भेलैन मुदा छह मास धरि पाइ अपने हाथ राखू, केते तरहक बेर-बेगरता हएत। जखन अहीं सबहक इलाकाकेँ अपन जीबैक इलाका बना रहल छैथ तखन भाय-बन्धु सिरैज किए ने पाबैनो-तिहार गामे-घरमे मनाबी।”

दोसर दिन गाइक संग सुरेन्द्रो बाबू आ दीनानाथो बाबू राधामोहनक ऐठाम आबि सभ किछु देखि-सुनि पायस पारस पाबि चारि बजेक घुमती बस पकैड़ लेलैन।

❑

शब्द संख्या: 1590

❑❑❑

❑❑

❑

मण्डलजीक अन्य पोथी सभ-

उपन्यास-

1. मौलाइल गाछक फूल (2009)

2. उत्थान-पतन (2009)

3. जिनगीक जीत (2009)

4. जीवन-मरण (2010)

5. जीवन संघर्ष (2010)

6. नै धाड़ैए (2013)

7. बड़की बहिन (2013)

8. ठूठ गाछ (2015)

9. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं (2017)

10. लहसन (2018)

11. पंगु (2018)

12.आमक गाछी (2018)

13. सुचिता, (2020)

14. मोड़पर (2021)

15 . संकल्प (2021)

16. अन्तिम क्षण (2021)

17. कुण्ठा (2021)

18. भादवक आठ अन्हार- (अपूर्ण)

19. सधवा-विधवा- (अपूर्ण)

20. सुनयना बेटी (2023)

पद्य-

1. इन्द्रधनुषी अकास (2013)
2. राति-दिन (2013)
3. तीन जेठ एगारहम माघ (2013)
4. सरिता (2013)
5. गीतांजलि (2013)
6. सुखाएल पोखरिक जाइठ (2013)
7. सतबेध (2018)
8. चुनौती (2019)
9. रहसा चौरी (2019)
10. कामधेनु (2020)
11. मन मथन (2020)
12. अकास गंगा (2020)

नाटक/एकांकी-

1. मिथिलाक बेटी (2009)
2. कम्प्रोमाइज (2013)
3. झमेलिया बिआह (2013)
4. रत्नाकर डकैत (2013)

5. स्वयंवर (2013)

6. पंचवटी (2013)

7. कल्याणी (2015)

8. सतमाए (2015)

9. समझौता (2015)

10. तामक तमघैल (2015)

11. बीरांगना (2015)

कथा संग्रह-

1. गामक जिनगी (2009)
2. तरेगन (2010)
3. बजन्ता-बुझन्ता (2013)
4. शंभुदास (2013)
5. उलबा चाउर (2013)
6. अर्द्धांगिनी (2013)
7. सतभैंया पोखैर (2013)
8. भकमोड़ (2013)
9. लजबिजी (2014)
10. समरथाइक भूत (2014)
11. अप्पन-बीरान (2014)
12. बाल गोपाल (2014)
13. गामक शकल-सूरत (2014)

14. रटनी खढ़ (2014)
15. पतझाड़ (2014)
16. गढ़ैनगर हाथ (2014)
17. अपन मन अपन धन (2015)
18. उकडू समय (2015)
19. मधुमाछी (2015)
20. पसेनाक धरम (2015)
21. गुड़ा-खुद्दीक रोटी (2015)
22. फलहार (2015)
23. खसैत गाछ (2015)
24. एगच्छा आमक गाछ (2016)
25. शुभचिन्तक (2016)
26. गाछपर सँ खसला (2016)
27. डभियाएल गाम (2016)
28. गुलेती दास (2016)
29. मुड़ियाएल घर (2016)
30. बीरांगना (2017)
31. स्मृति शेष (2017)
32. बेटीक पैरुख (2017)
33. क्रान्तियोग (2017)
34. त्रिकालदर्शी (2017)
35. पैंतीस साल पछुआ गेलौं (2017)
36. दोहरी हाक (2018)

37. सुभिमानी जिनगी (2018)
38. देखल दिन (2018)
39. गपक पियाहुल लोक (2018)
40. दिवालीक दीप (2018)
41. अप्पन गाम (2018)
42. खिलतोड़ भूमि (2019)
43. चितवनक शिकार (2019)
44. चौरस खेतक चौरस उपज (2019)
45. समयसँ पहिने चेत किसान (2019)
46. भौक (2019)
47. गामक आशा टुटि गेल (2019)
48. पसेनाक मोल (2019)
49. कृषियोग (2020)
50. हारल चेहरा जीतल रूप (2020)
51. रहै जोकर परिवार (2020)
52. कर्ताक रंग कर्मक संग (2020)
53. गामक सूरत बदैल गेल (2020)
54. अन्तिम परीक्षा (2020)
55. घरक खर्च (2020)
56. नीक ठकान ठकेलौं (2021)
57. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (2021)
58. संचरण (2022)
59. भरि मन काज (2022)

60. आएल आशा चलि गेल (2022)
61. जीवन दान (2022)
62. अप्पन साती (2022)
63. साहित्यकारक विवेक (2022)
64. नब बनक नब फल (2022)
65. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल (2023)
66. बासभूमि (2023)
67. टकुआटान (2023)
68. एकलव्यपन (2023)
69. एक चुटकी खुशी (2023)
70. नियति आ पुरुषार्थ (2023)
71. श्रद्धा (2023)

❑❑❑

Notes